

DPN 6229

Title : अहोरात्रयज्ञविधिः व. पुण्याहवाचनविधिः  
AHORĀTRA YAJÑ VIDHI VA PUNYĀH VĀCANA

Run. No. 6920

Cat. No. 4

Micro. No.

Subject *Karmakāṇḍavidhi* Religion : Hindu / Bauddha  
*Ritual*

Language : ☒ Skt. / ☒ New. / ☒ Nep. / ☒ Skt.- New. / ☒ Maith.- New. / ☒ New.- Nep. /

Size in cms. 24.5 x 9

Folios 131

Lines ( in a page ) 23/24

☒ Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

राजेन्द्र श्रेष्ठ

Date: ☒ NS / ☒ SS / ☒ VS / ☒ KS 846

Ruler / place

Rajendra Shrestha

Script : ☒ New. / ☒ Dev. / ☒ Bhuj. / ☒ Ran. / *sanskrit Text*

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaśaphu /

Condition : ☒ fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

1. Attha ahoṣṭaya jñā likhete. अथ अहोरात्रयज्ञं लिखेते ॥ 2. इति पुण्याहवाचनं  
इति अहोरात्रयज्ञः ॥ शिव, विष्णुमह, चर्म देवप्रतिष्ठाविधिः समाप्तः ॥  
इति इन्द्रकलशतय विधिः ॥ इति अहोरात्रयज्ञचतुर्थीकर्मविधिः समाप्तः ॥











ॐ नमो ब्रह्मणे ॥ अथ जूहोति ॥  
यस्तु लिखते ॥ ॥ अथ गिव

दमलका कृति दया लोमनाम सुम  
 सुपठे दारिद्र्यमिति हस्तयुनं रामय  
 दमलका कृति ॥ लंकपक्षमना कृत्वा  
 दामकीनाम सुपठे दारिद्र्यमिति हस्त  
 यैः ददुर्दमदिनेर्युनं ॥ काष्ठा कृति  
 पुदानकं सुवसानाम संयुतं ॥ अष्ट  
 मिति हस्तमानं दिनका उभय  
 दमकाष्ठा कृति दया लोमना  
 म संयुतं ॥ अष्टमिति हस्तयुनं  
 मस्य दमदिनेर्युनं ॥ यक्षसंकादि  
 मा कृत्वा दकनाम सुम सुपठे ॥ अष्ट  
 म सुपमानकं स्वमादिलंकपक्ष  
 र्युना ॥ अष्टमिति हस्तयुनं ॥  
 अथानि कलुल कर्षणं ॥ अष्टमि  
 कलुलं यदस्मिन् प्रमादं विनाश  
 तं यजमानस्य हस्तनं अष्टमि  
 कलुलं कर्षणं दमलका कृत्वा  
 यं निष्कामयुगं स्यात् ॥ कर्षणं कलु  
 धनेर्युनं विनाशं कलुनादिकं ॥ क  
 र्षणं हस्तयुनं दिनेभ्यः कलुना  
 अष्टमि कलुलं कर्षणं महाबाह  
 मरुतं ॥ अष्टमिति हस्तयुनं य  
 हवदादिनस्य व ॥ अष्टमिति हस्तयुनं



तताश्चयीठिदेयवर्चन॥  
अथ गद्ययोगी॥ कालोक्तकथित  
विधाननकृत्याः गद्यनार्थसंकाश  
कर्मनिर्विघ्नार्थश्च॥  
नन्दिमुखमारुभौर्द्धकूर्या॥ अक  
विंगतिग्रहम् विवाहादमसिदिन  
शक्तिग्रामयनयन॥ गेवा॥ सुयनु  
कावय॥ गेवा॥ मङ्गलसिद्धार्थमारु  
भौर्द्धकूर्या॥ अकृत्ययजमान  
यथागकर्मसमाकृत॥ सुनका॥  
दिनिवृत्तिस्यात्कृत्याकार्ययवादक  
॥ अग्निक्लृप्तादस्त्रायन॥ अग्निक्  
लृप्तनकविधिर्था॥ नूतियवादका॥

[illegible]



वर्तुन इक्षका ॥ नृतिपताका ॥

कमद ॥ कमदाकश्च पूरुषीका  
थवामन ॥ गककलु ॥ सुनयश्च  
समूख ॥ सुयतिष्ठि ॥ गभाधनाथ  
वविधनाच ॥ कुजाना मधिदेवर्ग  
धजायविस्मिर्गनिर्ण सर्वविघ्न  
युष्मक ॥ ॥ नृतिध्वज ॥

अथेकवठसुकाच ॥ वरुवैदिले  
त्रिह ॥ यक्षयल्लवमवस्था ॥ डाजप  
नृवृनमर्ग ॥ यक्षयल्लव ॥ ॥

यक्षसुर्ग ॥ गत ॥ कथा ॥ विनातू  
भक्त ॥ धेवर्गकनकाकार ॥ कमा  
वीकर्णिर्गवृन ॥ ॥ नृति यक्षसु  
॥ यक्षसुर्गका ॥ गवय ॥ यक्षयल्ल  
व ॥ अकत ॥ दारुल ॥ भगो ॥ उका  
यका ॥ लुड ॥ स्थान ॥ कापोठ ॥ गपाठ  
वयोठा ॥ गपाठ ॥ ॥ ॥ यक्षयल्ल  
उकासद्याय ॥ कसीक ॥ वरुदिग  
यार्ग ॥ ॥ स्थन ॥ कृष्ण ॥ मालता ॥ ॥  
थन ॥ कल ॥ संग ॥ ॥

तत ॥ कल ॥ मवाय ॥ पीत ॥ वृत्त ॥ नवा  
सर्व ॥ स्थान ॥ कोन ॥ यथा ॥ कित ॥ वलिखि  
लायदि ॥ धान ॥ न ॥ यथा ॥ ला ॥ जा ॥ पु ॥ क  
य ॥ ॥ ॥ आ ॥ धा ॥ र्व ॥ व ॥ ध ॥ जा ॥ र्दि ॥ वा ॥ द ॥ र्वा  
का ॥ य ॥ ल ॥ ॥ ॥ क ॥ ल ॥ ग ॥ पा ॥ लु ॥ वा ॥ का  
ग ॥ ॥ य ॥ क ॥ र ॥ व ॥ ला ॥ म् ॥ र्वा ॥ ॥ य ॥ क ॥ र ॥ य  
ल ॥ व ॥ य ॥ ल ॥ ॥ ॥ वि ॥ क ॥ द ॥ हि ॥ स ॥ म ॥ नि ॥ वा  
॥ य ॥ ता ॥ का ॥ क ॥ र्ग ॥ र्म ॥ य ॥ का ॥ आ ॥ धा ॥ वा ॥ य  
वि ॥ सी ॥ कि ॥ ता ॥ ॥ रु ॥ ल ॥ ल ॥ ल ॥ र्म ॥ र्वा ॥ ॥ ॥  
॥ म ॥ वा ॥ र्वा ॥ र्वा ॥ म ॥ र्वा ॥ र्वा ॥ ॥ ॥ व ॥ न ॥ र्वा  
॥ वे ॥ व ॥ सि ॥ न्द्र ॥ ॥ द ॥ हि ॥ य ॥ र्वा ॥ य ॥ वी ॥ न ॥ क ॥ ॥  
वि ॥ य ॥ क ॥ द ॥ हि ॥ र्म ॥ य ॥ क ॥ ॥ व ॥ र्वा ॥ वे ॥ व ॥ ग ॥ न  
पू ॥ न ॥ ॥ ॥ म ॥ र्म ॥ र्म ॥ र्म ॥ र्म ॥ ॥ ॥ स ॥ र्वा ॥ र्वा ॥  
क ॥ त ॥ स ॥ र्वा ॥ र्वा ॥ ॥ य ॥ र्वा ॥ म ॥ ल ॥ म ॥ म ॥ य  
क ॥ ॥ व ॥ लि ॥ र्वा ॥ वा ॥ व ॥ ना ॥ दि ॥ क ॥ ॥ ॥ ल ॥ र्म ॥  
वि ॥ क ॥ ता ॥ धा ॥ र ॥ व ॥ क ॥ म ॥ र्वा ॥ य ॥ वि ॥ कि ॥ र्ग  
॥ स ॥ व ॥ र्वा ॥ र्वा ॥ र्वा ॥ र्वा ॥ य ॥ क ॥ र ॥ व ॥ र्वा ॥ य ॥  
वि ॥ र्ग ॥ ॥ म ॥ ना ॥ र्वा ॥ व ॥ य ॥ व ॥ र्वा ॥ ॥ पु ॥ न्वा ॥ र्वा  
हि ॥ न ॥ वा ॥ नि ॥ व ॥ ॥ ध ॥ य ॥ दी ॥ पा ॥ क ॥ ना ॥ दी ॥ नि  
व ॥ लि ॥ र्वा ॥ वा ॥ व ॥ ना ॥ दि ॥ क ॥ ॥ य ॥ क ॥ र ॥ व ॥ र्वा ॥ य



ताकाव. कानकाननियो. जय॥  
वन्दनसिद्धयय. यवीतपूष्यसम  
लंकृत्य॥ ॐ नितकलसवायविधि॥ ॥

नर४ कलमविद्ध॥ वज्रमिहमिति  
व्यानमालनयमकि विद्धक. यमद  
नकथायाभा. नेमयखजमवच॥  
यश्चिमयुगनागके वायव्यध्वज  
संस्तिर्गधनदामा. तुलिमायं. त्रिशू  
लमीगर्कयून४१ कमलु. वार्धगता  
यतिवज्रमधस्तथा॥ वका. ऊँ. सा. सु  
र्यपाक. स. र्व. उ. नि. ग. क. व. ॥ मि. स.  
ममय. क. र. य. र्. व. ध. सु. ध. न. ग. क. ति  
॥ पू. र्क. क. यु. र्मि. त्या. रु. शु. क. स. व. उ.  
ग. क. ति. ॥ दी. र्घ. क. ति. ग. नि. र्धे. व. ग.  
ह. व. र. क. म. ग. क. ति. ॥ म. क. ग. क. ति. ग.  
नि. क. उ. य. ज. र्म. सु. क. ल. ग. क. ति. ॥  
॥ ज. या. क. न्द. नि. र्ग. र्ग. व. ४. पी. ता. रा. वि.  
ज. या. ग. दा. ॥ शु. ज. र्ग. र्ग. व. ४. क. त. य. ग. म.  
॥ र्ग. व. ४. पी. ता. पू. र्क. क. ॥ या. म. य. व. उ. व.

च. ल. य. मि. त. र्ग. र्ग. मि. ता. ग. दा. ॥ शु. ता.  
यु. ग. ४. पी. ता. ग. दा. य. ४. ४. ॥ शु. ता. क. मा.  
लि. का. ध. ध. ता. व. क. स. वा. ज. के. ह. वि. व.  
क. वि. ध. ह. का. ॥ ग. म. ला. हि. त. रु. मा.  
व. हा. य. व. थ. क. के. ह. वि. ॥ कि. नि. क.  
ह. ग. दा. वि. ध. व. न. नी. ल. म. दि. रु. ध. र.  
य. दा. थ. र्ग. म. दि. ४. क. ल. ॥ ग. म. व. ल. क.  
लि. ४. स. ता. ॥ था. गि. नी. के. र्हि. क. पा. ल.  
ख. र्ग. र. व. दा. म. म. व. व. ॥ म. ल. क. वि. धि. ग.  
जा. र्ग. यु. व. र्ग. त्या. ली. त. पू. र्क. क. ॥ वि. शू. पा.  
क. ग. नि. क. थ. व. य. व. वि. शू. ल. की.  
पू. र्क. क. स. ग. दा. धी. त. नि. डा. या. ॥ शु. ता.  
प. क. ऊ. ॥ ॥ न. दी. व. का. क. मा. ला. त. द.  
न. व. व. म. रा. क. ल. क. क. ॥ वि. शू. ल. मी.  
मै. व. र. ॥ ग. ति. व. छी. गि. त. म. य. ये. व.  
शु. वि. धि. ग. जा. वि. र्ध. र्ग. ॥ उ. का. यु. क. ति.  
ग. ली. प. वि. दि. त. स. र्ग. जा. ना. व. ला. या. वि.  
म. की. द. वा. र्ग. क. क. मा. र्ग. क. व. ल. य. म.  
दि. त. व. ल. का. व. क. र. व. म. ॥ ॥  
॥ य. त. य. म. नि. ता. ग. म. य. म. ना. व.



कृपकजं वक्रां लसवस्त्या नमो वा  
नीलपंकजं वक्रपत्रं तथा सिन्धु  
दावरी भिगाङ्करी मीलां लसवस्त्या  
भिकां गङ्गा कीपीतयमकी ॥ ॥  
अथ कृमा च श्रीवक्र वलिश्चैव भि  
गाङ्करी वा सस्य ध्रुवमाङ्कय रून्  
मान्कल ममाङ्कति ॥ विहीष दंयाम  
वाकं मङ्कयुग्मं कयस्तथा ॥ कुर्णपत्र  
गुणमश्च मार्कं धुर्गययुङ्करी ॥ ॥  
यका धीरुविर्गमाला मारुग्धवीणि  
मूलकी कृमायिका विदुषीत्या वृक्ष  
वीनीलवज्रकी वावाहीमीनविक्ता  
र्यां मित्रा दीपीतवज्रकी ॥ यामूछाड  
मङ्गय रवङ्गं लक्ष्मीयकीर्तिता ॥  
॥ भिर्वणि मूलमालिखा मकिनीला  
ल्लाङ्कति भियदर्या दमिष्टकी  
लक्ष्मी सिन्धु वपाङ्करी ॥ ॥ रूति क  
लसवाय विधि ॥ ॥ अथ कृष्णकृष्ण ॥  
अथ पद्माङ्गि या तस्मानादिनि स्त

कर्मकावय ॥ यद्गुमधुपयनेम  
स्यदिभिवाङ्क ॥ यजमानननजावय  
॥ जलकृष्णकतायावाय ॥ ॥ अं  
यसर्वयद्गुमयस्तीर्धरुलनकादि  
युनिरुजन्मरुलममरुहलेपाकि  
कामां मूकवतायायनामूकयुति  
मायुतिष्ठामरुहकविद्या ॥ ॥ रूतिम  
कस्य ॥ ॥ ततो जजमानननयूय  
राजनी ॥ ॥ अं अयादि ॥ यवतान  
नूपरुर्वच ॥ सिद्धि वस्तु क्रियावर्त  
ति ॥ आर्कदरुहकयूयराजनी सम  
र्यय ॥ ॥ मलिजादि पादाद्य ॥  
॥ यजमानस्य जमूकवतायायन  
धीजमूकमूरियुतिमायुतिष्ठाय  
ननिमित्तार्थममूकवदाक्षयनाय  
रूदमासनेनम ॥ पादाद्य ॥ यासि  
आचार्य ॥ ॥ आचार्यनन्यासाद्य  
पाङ्ककृत्वा ॥ ॥ वलिद्वन्द्वद ॥  
॥ कृपात ॥ अं ऊँ नवसिंहायवसि  
गृह्ण ॥ ॥ ॥ कृपात ॥ अं



विष्णुनायकवर्लिगृह्ण २ स्वाहा ॥  
 वृद्धमयायुष्यधूपदीपपूजावर्लि  
 गृह्ण २ स्वाहा ॥ वद ॥ ॐ घृही घृणपा  
 वान ॥ ॐ विष्णु वनाटमसि ॥ ॥  
 जय ॥ ॥ स्तुति ॥ नमस्तु नृसिंहा  
 य विष्णुनायके नमः ॥ नमस्तु यस्तु  
 वकाय नमस्तु विष्णुनायके ॥ ॥  
 अङ्गगन्धादि ॥ ॥ वलिविस्तर्जन ॥  
 नावर्लिगृह्णमधुर्वजामय ॥ ॥  
 विष्णुनायकवर्लिगृह्ण २ स्वाहा ॥  
 वृद्धमयायुष्यधूपदीपपूजावर्लि  
 गृह्ण २ स्वाहा ॥ वद ॥ ॐ घृही घृणपा  
 वान ॥ ॐ विष्णु वनाटमसि ॥ ॥

तताञ्जरायै कलान्ध्यासंकार  
 य ॥ ॥ श्रीहिवाजसुर्वर्धन ॥ ॥  
 द्वात्रिंशत्तुल्य ॥ ॐ आकारगुण  
 नमः ॥ दिग्गुणसुर्वर्धन ॥ ॐ ग  
 दायतय नमः ॥ उद्धृष्टिलिक ॥  
 ॐ महालक्ष्मि नमः ॥ वाम ॥ ॐ सवस्त्र  
 लो नमः ॥ दक्ष ॥ ॐ द्वात्रिंशत्तुल्य नमः ॥  
 मध्य ॥ ॐ धाम नमः ॥ दक्ष ॥ ॐ वि

धाम नमः ॥ वाम ॥ ॐ बहल्लो नमः ॥  
 दक्ष ॥ ॐ मूलनायक ॥ उद्धृष्टिलिक ॥  
 नमः ॥ ॥ तताञ्जरायै कलान्ध्यासंकार  
 य ॥ ॥ श्रीहिवाजसुर्वर्धन ॥ ॥  
 द्वात्रिंशत्तुल्य ॥ ॐ आकारगुण  
 नमः ॥ दिग्गुणसुर्वर्धन ॥ ॐ ग  
 दायतय नमः ॥ उद्धृष्टिलिक ॥  
 ॐ महालक्ष्मि नमः ॥ वाम ॥ ॐ सवस्त्र  
 लो नमः ॥ दक्ष ॥ ॐ द्वात्रिंशत्तुल्य नमः ॥  
 मध्य ॥ ॐ धाम नमः ॥ दक्ष ॥ ॐ वि



ॐ नमः सावे ॥ गायत्री कवच उक्तं ॥  
 सायं वा सुपूजात्मानं च ॥ गृह्णामीह  
 वंद्यं वल्लिं दत्तं ॥ ॐ गणपतये नमः ॥  
 ॐ गतासीत्वा ॥ ॐ यां यागिन्ये नमः ॥  
 ॐ अम्बु अम्बिकेति ॥ ॐ वंद्यं काये नमः  
 ॐ विश्वतश्च कुरुता विश्वतामूखा वि  
 श्वतावा कुरुता विश्वतस्या ॥ अम्बु कुरु  
 र्वाधमति सम्यक्तये यावा रुमी जन  
 यन्वद्वक ॥ ॐ दिदिक्कालस्थानमः ॥  
 ॐ घृती घृतपावान ॥ ॐ कंकु पा ला  
 यनमः ॥ ॐ नमो वसुधायै च ॥ ॐ  
 असीत्याता ॥ ॐ समर्थो दया ॥ ॐ ॥  
 उदकं वल्लिं ॥ ॐ याये दिगं स्वाहा ॥  
 ॥ रुद्रकादि अस्मितामादि ॥ उक्ताया  
 दि नूतयन्दादि ॥ नवात्मा च चन्दना  
 दि धूपदीपजपस्का ॥ ॐ सर्वकृपा  
 धिनार्थं वदुःकसपिकर्षनिष्कलं नि  
 ष्कलं मं लं लं लं लं लं लं लं लं लं लं लं  
 लि गंधर्व तत्त्व रूपं स्वरूपं ॥ विद्या रू  
 पा नूता रूपा रूपा गणनमिती रूपा रूपा

नमामि त्वन्दरे व वाख्येय होमस्त  
तत्तरे व वक्तु यो ल ॥ अङ्गुगन्धदि ॥  
वलि विसर्जन ॥ पूर्ववलि ग (हो) भय  
॥ दक्षिणवलि इत्यर्थे ॥ यश्चि मवलि  
रेव वाय ॥ उरु वलि थानद्वये ॥ म  
ध्ववलि मधुपर्जामय ॥ ७ ॥ ॥  
वृत्ति यक् वल्या च न विधि ॥ ॥

ततः यच्च गद्यसाधनं ॥ यीतवृत्त  
नवकाष्ठविलिख्य ॥ लाजाकषणं ॥ ॥  
दधीदुर्ध्वमाख्यं गम्यं दक्षिण  
ननु ॥ ययं पश्चिममाख्यं घृणवत्  
रूपं ननु ॥ आख्यायलिप्तमित्याहु  
ने सख्यं यथाहाजनं ॥ वायव्यगम  
यं स्फार्यं ॥ त्रीणाननुकूलं दक्षिण  
यावत्किंतामस्य मिश्रयदधिपूर्वक  
॥ दक्षिणतनिधायति ॥ दक्षिणायव  
कृप्यं कृ ॥ उमायति ॥ मिवावक्रि ॥  
ग्री ॥ सामं धीजनादनी ॥ सात्कथावत्  
॥ गम्यं ॥ वक्रपाठस्तु मध्यगम्यं



मूर्धनी लवङ्गुया कृष्णया लामयं रु  
वङ्गा तासु वङ्गुल्यं यश्चैव रश्चताया  
दधि नू च गम कपिलाया घृतं ग्राह्यं  
महायोग कनासु नैः अलारु सर्व  
वङ्गुनी कापिले काविमिष्यता लाम  
मूर्धस्ये कपलं दद्याद् दन्तु छाद्वलु लाम  
मय्यं कीर्तय फलं दद्यात्पुलम  
कं कृष्णं दकं सूर्यं कृष्णं कलुल्यं  
पृथग्भक्तं विरामधयता गायत्रीति  
लामूर्धं गन्धदायति लामयं रपय  
पृथिव्याद् दन्तु दधिका प्रादधीति  
वङ्गा गङ्गा गिगु कर्मिष्यात् दवसलु  
कृष्णं दकं रुला दकं या रुलिनी  
मिवातासासीति मिर्वं यक्ष गव्य  
मृदा पूर्तं लामयदग्निरीनिर्ध्या ॥  
॥ ततश्च यथा गङ्गा न्यासाद्यो यक्ष पूज  
नी ॥ ॥ वलिश्च दानं ॥ ॐ अथेतान  
शेविद्व्याना लरुगति दीर्घचक्षुः  
जलं वाति क्लृप्तं वाति क्लृप्तं चक्षुः  
गुडं वाति क्लृप्तं चक्षुः क्लृप्तं वाति

लामसुखं अङ्गुला अङ्गुला क्लृप्ता लामया  
जायता ॥ १ ॥ गङ्गा ॥ १ ॥ पूज्यं लीकितव  
जीवा गङ्गा अङ्गुला क्लृप्ता लामया जायता  
॥ १ ॥ वृत्तिमन्तु वलि दद्यात् ॥ ॥ य  
वङ्गा ॐ कृष्णं दधि उमा पतिदवता  
यनम ॥ १ ॥ ध्यान ॥

ॐ

दधिकाया अकाविति ॥ स्तुत ॥

दकिरुता ॐ कृष्णं लामसुखं वक्रिदवता  
यनम ॥ १ ॥ ध्यान ॥

ॐ गाय

जी ॥ स्तुत ॥

पश्चिमा

ॐ कृष्णं कीर्तय लामदवता यनम ॥ ध्यान ॥



ॐ यवः पृथिव्यामिति ॥ स्फुट ॥

उरुवा ॥ ॐ को घृत हा सु व द  
वताय नमः ॥ ध्यान ॥

ॐ कजासीति ॥ स्फुट ॥

आयय ॥ ॐ हः सदा मियाय नमः  
॥ ध्यान ॥

ॐ मिवा ना  
सासिति ॥ स्फुट ॥ नमामि द व द व ग  
ममय लि स र व । स व द ह वि मु  
दार्थ पक्क ग व मि व ध व ॥  
नेमय ॥ ॐ श्री श्री द व ता य नमः ॥  
ध्यान ॥ य द्वा स न सि ता द वि मु द  
रु टि क स नि ता । अ द्वा द कि श ह  
रु क्क प न धा न व द ॥ ॥

ॐ याः रु व नी ति ॥ स्फुट ॥ प द्वा  
मि स दा व वी श्री म ल म व दा सी नी । य  
ह म न ल का र्थ व नि र्ण य द्वा य न र्ण  
ता ॥ ॥ वा य व ॥ ॐ की ल म म वा य ज  
ना द न द व ता य नमः ॥ ध्यान ॥

॥ ॐ ग न्ध दा व ति ॥  
स्फुट ॥

॥ ॐ ग न्ध  
॥ ॐ कू व र्ध य कू म द का य नमः  
॥ ध्यान ॥ ना ग वा म ध व द ह र् न ली  
य य मि वि ग ह । म म क ध व र्ध य  
व व र्ध म क वा स र्नी ॥ ॐ द व स्य ति  
॥ स्फुट ॥ ना ग वा सा स क नि र्ण ज ल  
ना जी म हा व ली । नि म य । ये व वि र्वा  
ता । ना ग वा जा य र्न नमः ॥ ॥ म धा ॥  
ॐ कां व क्क या य नमः ॥ ध्यान ॥ ॐ  
ह सा स न स मा र्च पी त व र्ध व द्वा ज  
क म धु ल व वा सी ति । न म द्वा स । म  
ही ति ॥ ॐ व क्क य हा न मि ति ॥ स्फुट ॥



ॐ उड्डि उक्ता लु नाथा य हंस स्का सोम्य  
 वृषि धी ॥ गम वरु महावीर येन रु  
 रुतमा सुत ॥ ॥ वक्र यो गमू लाया  
 ॥ पूर्व वल रु दाय के ग र्द उ क्र यो ग  
 नि धाय ॥ चालो द नै म उ स न्य यामि  
 समा प्र उ ष श्री सि ४ सभा व ध्या व स  
 न स लं व व नी र्ज ग नी सि ४ य न्ना  
 २ स म ध म नी र्म ध म नी सि ४ य न्ना  
 ॥ नो लो द नै ॥ ॥ उ उ न य र्थे त्वा र्थ  
 यो मी द म ग्नि वि द म नी धा म या वि ध  
 ला य भा सि वि धा य नू य थ उ नू य थ  
 स्था नू त य र्थ य नि ४ य थ ता म नि रु ल  
 य मा हि लं सी क व र्त्ता स वि ता य थ य  
 दु व र्थि य धि ना क ॥ व क्र यो ग मा क  
 य क र्ज नै ॥ ॥ उ व क्र र्ध न म ४ उ क  
 वि धू व न म ॥ उ क र्ज य न म ४ व द  
 ॥ उ व क्र य र्ज नै ॥ उ वि धू व ग ठ टि  
 ॥ उ न म ४ सी क वा य व ति ॥ उ र्ज वा व  
 ती र ध न म नी ॥ उ मा न स्का क ति ॥ उ  
 वि रु द वा ना मी ति ॥ ग य र्थी ज य ॥  
 १० ॥ उ म ना श ति यु ति ष ॥ ॥ वि

रा ग को व थ ॥ ॥ द व अग्नि य ज  
 मा न ॥ ३ ॥ ॥ ग म य वि म य र्ज नै ॥  
 ज ल व र्थे म न स्का र्ज नै ॥ व न न सि न्द्र  
 व य र्ज वा वी न मा ला य र्थ य र्ज दी य  
 नै व य ॥ स स व द न य र्ज य ॥ उ मि  
 धा ना मा सी ति ॥ ॥ ज य ॥ उ क र्ज ग  
 य न म ४ ॥ स्का र्ज ॥ ग म य लि नू य  
 य स र्व पा य ४ य र्ज मि नि ॥ स र्व द र्ज  
 य वि ज य ग ल र्ज य य न न म ४ ॥  
 ज र्ज ग न्धा दि ॥ व लि वि र्ज र्ज नै ॥ ॥  
 र्ज मि ग म य लि नू य र्ज वि धि ४ ॥

त त म लि ज दि य र्ज मा न य ४ य र्ज  
 ग र्थी य र्ज य ॥ द य र्ज र्ज र्ज य र्ज  
 स र्ज न न य र्ज ग र्थी द द ॥ व द ४ ॥  
 उ ल म र्ज य र्ज ॥ उ व व न र्ज य  
 मि यो दी न र्ज य मि र्ज र्ज य र्ज  
 मि र्ज य र्ज य मि न र्ज य र्ज  
 मि र्ज य र्ज य मि यो य र्ज य र्ज  
 य र्ज य र्ज य मि ॥ ॥ यो र्ज नै ॥ उ  
 म न र्ज य र्ज य र्ज य र्ज य र्ज



[illegible][illegible]



ॐ उवाचिवतमग्निनाशानसुमेय  
 उवाचिदियासि वृत्तिरिष्टा ॥ ॐ अर्चयेत्  
 ता ॥ ॐ नमो वज्रगोपति ॥ ॐ नमो  
 सूर्यरा ॥ ॥ चन्द्रनादिधूपदीप ॥  
 ऊष ॥ स्तोत्रा ॥ ॐ पूर्ववद्विषयश्चिमा  
 रुचमिवासर्वानमोवासा कुरु ॥  
 वदुरुत इत्यहं नमो नमो नमो ॥  
 पितृ ॥ गगनगन्धमादिदक्षविम  
 ४ ॥ कार्त्तिकसत्तापहा नित्यानन्द  
 मयी नमामिसे गतवत्यादियुजावि  
 धी ॥ अग्नगन्धादि ॥ ॥ न्यासास्तु  
 वलिविशर्जन ॥ स्नानक्रिय ॥ ॥  
 वृत्तिनवदलि ॥

गगनरुमिधर्नकला ॥ गगनीन  
 न्यास ॥ ॐ यो धमयसा ॥ गगनरुगु  
 द्विष्ट ॥ ॐ कां दयाय नमः ॥ ॐ  
 पृथिवी नमः ॥ ॐ दिव्यगर्भ ॥  
 पृथ्वी स्तापनीजन ॥ ॥ ॐ रुचसि  
 मित्रस्यदितिवसि विम्वधायोविम्व

स्यरुवनसधर्मा ॥ पृथिवीयकपृथि  
 वीष्ट ॥ ॐ पृथिवीमादि ॥ ॐ सी ॥ रु  
 मिष्टाधर्न ॥ ॐ सफयुक्तेरुचिधम  
 कचक्रमका ॥ अर्चयेत् वरुनिसफनामा  
 लिनासि चक्रमचमनच ॥ यगमा  
 विश्व ॥ उवनानिगच्छ ॥ यथयुजन ॥  
 ॐ वात्स्याधियमययुक्ते ॥ नमः ॥  
 ॐ युक्तामस्तु ॥ मित्रगुणस्यवाभा  
 नलावजामिसुकठ ॥ अग्नस्यपानी  
 सुरुगस्यलाकविष्टा ॥ सुरुगस्य  
 धामि ॥ यो सो दक्षायनी ॥ ॐ कां मधुपा  
 यनमः ॥ ॥ ॐ वायवायादिवीतय  
 गृहा ॥ ॥ हयवातय ॥ पवित्रवृद्ध  
 सधमस्तु ॥ मधुपालरुर्न ॥ ॥ ॐ  
 कां वायनमः ॥ ॐ वायवदीति ॥  
 कावस्तापनी ॥ ॥ ॐ कां वायवय ॥  
 ॐ अस्माकमितुति ॥ तावदास्तापनी  
 ॐ कां पथयनमः ॥ ॐ यमपन्को ॥ स  
 विष्ट ॥ पूर्वाभापदाव ॥ सुरुगस्य  
 का ॥ कतिना ॥ अयपथि ॥ सुरुगसीव  
 कावना ॥ अविचगुहिव ॥ यथयुजा ॥



ॐ ऊँ वदिय नमः ॥ ॐ वदसिय नमः ॥  
वददवसावदरुवस्तु नमः ॐ वद  
रुया ॥ ॐ वदीकापनी ॥ ॐ ऊँ ॐ अस्मा  
यशः ॐ यविगुछाति ॥ यशः गयनात्य  
कर्म ॥ ॐ ऊँ ॐ अस्मा यशः ॐ सुमिति  
यानति ॥ अर्थपाशादकसिचय ॥ ॥  
ॐ ऊँ कववायशः ॐ वकारुनी ॥ यशः  
सुगुणमलुपवस्य ॥ ॐ ऊँ कव  
वायशः ॐ वकारु ॥ एवावलगरुन  
॥ यो कामिवेषु वानुकारु ॥ एवावल  
गरुनावनयामिवेषु वानुकारु ॥ ए  
वावलगरुनावरु ॥ एमिवेषु वानुका  
रुनी वामलगरुना उपदमामिवेषु  
वीवकारु ॥ एमिवामलगरुना पयुहा  
मिवेषु वीवेषु वमसिवेषु वारु ॥ व  
कावन्धनी ॥ ॐ श्रीयशः ॐ श्रीय  
गलश्रीति ॥ वृत्तयत्नवादिमापुष्पव  
नय ॥ ॐ ऊँ ॐ अस्मा यशः ॐ विगु  
ले पाषाणयायानायायानायविगु  
क्षानिर्यदु ॥ अमिष्टधियतिस्तयाद

वतयामि वस्तु वासीद ॥ नमः  
लुपयति ॥ ॐ निमलुपयधन ॥  
नमस्तु यजाने सत्यदिभि ॥ पीतव  
लुनमलुले वयविलिखा ॥ ॥  
दकलाजा ॥ वामवीहि ॥ मत्स्यसमा  
ऊनिपूजन ॥ ॐ ऊँ ॐ भक्तिकायमि  
वास्तुमर्कयशः ॐ वीरुयशमति ॥  
वीहि ॥ ॐ ऊँ ॐ पूरिकायविष्णुमर्क  
यशः ॐ वृद्धविष्णुविति ॥ लाजा ॥ ॥  
ॐ ऊँ ॐ सर्वविष्णुविनामयवस्तु ॥ ॥  
ॐ वस्तुयज्ञान ॥ समारु निपूजा ॥  
ॐ ऊँ ॐ अस्मा यशः ॐ वीरुयशम ॥  
वीहिकपनी ॥ ॐ ऊँ ॐ अस्मा यशः ॥  
ॐ स्वस्ति नमः ॥ लाजा कयनी ॥  
वामरुस्तु अर्थपाशादमिवगुहीला ॥  
दकरुस्तु नमः ॐ ऊँ ॐ दकिष्टवस्तु  
नमूलकलमयययनंगवृत्ता ॥ ॥  
ॐ ऊँ ॐ अस्मा यशः ॐ श्री ॐ भक्तिका ॥ ॥  
ॐ ऊँ ॐ अस्मा यशः ॐ दवस्तुति ॥ अ



नमः ॥ मित्रममं गच्छिदकविषयीतक  
 मम ॥ न्यासाद्यपात्रपूजनं ॥ ॥  
 ॐ श्रीवक्र (१२) ॥ ॐ श्रीं विष्णु व नमः ॥  
 ॐ कूं सदा मिवाय २ ॥ ॐ वक्र य ह्मा ॥  
 ॐ नू दमिष्णु ॥ ॐ मिवा नामासीति ॥  
 मूलमरुद्युगिया ॐ लि ॥ ॐ श्रीं मित्र  
 म श्रीं तन २ ॥ वद ॥ ॐ नमः ॥ मरुवा  
 यवति ॥ ॐ अम्भ अविक् ॥ ॐ सहस्र  
 मीषा ॥ ॐ श्रीं यनल श्री ॥ ॐ यावकान

[illegible]



स्त्रियासननख्यया॥ ततः पूजनं ॥  
 न्यासादि कृत्या॥ आभारादि अष्ट  
 पूष्टिकासनं ॥ ॥ ॐ सुदामिवा  
 य २ ॥ ॐ जीविषुवशा ॐ जीवम  
 ॥ १२ ॥ पूषयूकनेमिव कलमक  
 मद्ययनिधाय ॥ ॐ नमः ॥ मन्त्रवाय  
 ॐ मद्रुसमीधति ॥ पूषः ॥ मकि कल  
 ॥ मद्रु ॥ मनेस्त्रिया ॥ ॐ अष्ट ॥ स  
 स्त्रुति ॥ ॐ श्रीधर्मलक्ष्मीति ॥ ॥  
 ततः पूजनं ॥ ॐ मिवा नामासिति  
 ॥ ॐ विष्णु वराह मसीति ॥ ॐ उक्तय  
 स्तनं ॥ ॐ श्रीमाला रीति ॥ आवाहना  
 दि ॥ पूष दीयनेवद्य ॥ ॐ मना रूति  
 युतिष्ठा ॥ जयस्तु ॥ ॐ मूर्ति स्त्रि  
 दवता नात्यादि ॥ अष्टगन्धादि ॥  
 स्त्रुतिमिव मकि स्त्रियासन पूजनं ॥

ततादावकलसपूजा ॥ पूर्वधारंग  
 त्या ॥ ततुलानिविकिरण ॥ मन्त्र ॥  
 ॐ दवदानेवगन्धवायकमक  
 सपन्नग ॥ १ ॥ सर्वसमाध्वयका क

चीले ह मदानि तः ॥ तद्वृत्त ॥ क  
 दवी रवन्त ॥ दवदावू ॥ सिसाह का  
 ष्टनिधाय ॥ सीमनी पूष्य निधाय ॥  
 न्यासाद्य पाठ निधाय ॥ आसन पू  
 र्वक ॥ ॐ कृत्या यामीति ॥ आसनं ॥  
 ॐ त्वमग्नेयुति विमिति ॥ मुचिकवती ॥  
 ॐ दवसास्त्रुति ॥ अष्टकन ॥ ॐ द्राष्ट  
 विद्यो २ ॥ ॐ स्थाना पृथिवीति ॥ पृथ्वी  
 पूजनं ॥ ॐ द्रावट वृत्ताय २ ॥ ॐ यष्टक  
 य ॥ वृत्त पूजनं ॥ ॐ द्राष्ट ॥ य २ ॥  
 ॐ यमकामिति ॥ य ० पूजनं ॥  
 ॐ द्राष्ट ॥ र नदा वाय २ ॥ ॐ द्राष्ट  
 वीति ॥ पूर्वदावा वने ॥ ॐ द्राष्ट ॥ वक्ष  
 य २ ॥ ॐ वत्ता विष्ट ॥ न ॥ तावता वने  
 ॥ ॐ द्राष्ट ॥ राय २ ॥ ॐ रताय स्त्रुति ॥  
 रत पूजा ॥ ॥ पूर्वदाव ध्याना ॥ ॐ  
 काष्ठाया सुवनीय कस्य वसिमादा  
 यस्त्रुति ॥ सुधव ॥ ॥ मीराया घन पः  
 लवने श्रीवि ३ ॥ पूष्य ॥ ॥ रुले रु वि  
 तः ॥ अष्टसीति मरुमनिपु रुति  
 ति ॥ ॥ सस्यमाना वलो यषादीवस



दाहिनापिवच ८४ यथावतावय  
॥ॐ द्वात्रिंशद्वीति ॥ ॐ निष्काल ॥  
नमोदावयवाचनी ॥ॐ कांनन्दिन २  
॥ॐ नमः ॥ मकुवायचति ॥ दक ॥  
ॐ कांमहाकालाय २ ॥ॐ नमोवज्र  
मथति ॥ वाम ॥ ॥ विष्णुदाल ॥  
ॐ जयाये २ ॥ॐ रुद्रमनमि ॥  
दक ॥ १ ॥ॐ विजयाये २ ॥ॐ रुद्र  
मिष्णुति ॥ वाम ॥ २ ॥ ॥ॐ रुद्र  
कलुवलाकाय २ ॥ॐ यजायति  
धवति ॥ ॥ॐ कांमन्मदिनपर्व  
नार्या २ ॥ॐ उपकवगिविष्णु ॥  
ॐ कांकावकीवसमूहाया २ ॥ॐ  
समूडनादनान ४ समुमयाव  
सिमावाहिसाहामावृतासिमवृता  
महा ४ मकुमयावसिमावाहि  
साहामवस्यनसिइवसा ३ मकुम  
यावसिमावाहिसाहाम ॥ॐ अ  
याधुवाया २ ॥ॐ वसुधैवकुतस्त  
श्रमकर्मश्रममक्तिश्रमथश्रम  
उमश्रमरूपावमगतिश्रमय

रुनकल्यनाम ४ ॥ ॥ॐ यमनस  
गीलाया २ ॥ॐ कविदीगजवमना  
ॐ निष्कालवामदकिमभायावय  
विमावदकिताय ॥ ॥ॐ हिमाव  
लाय २ ॥ॐ हिमस्यला ॥ॐ वक्र  
२ ॥ॐ वक्रयस्तन ॥ मध्य ॥ॐ मि  
य २ ॥ॐ नमः ॥ मकुवायव ॥ दकि  
॥ॐ कांविष्णुव २ ॥ॐ रुद्रमिष्णुवि  
वक्रम ॥ वाम ॥ॐ कांकाय २ ॥ॐ  
वृहस्पतकृदिवसिपापनामामक  
ॐ हि ॥ मजभाजनमामकुधदि ॥  
यतिरूपाविष्णुमाया ॥ ॥  
ॐ कांकुमूदकमूदाकधजाय २ ॥  
ॐ अस्माकमिड ॥ॐ कांकाय २ ॥  
ॐ त्वजविष्णुदा ॥ॐ कांवल्लवाय २ ॥  
ॐ अश्वस्तुपवा ॥ ॥ॐ वकायाव  
ॐ कांमयाय २ ॥ॐ गन्धवाय २ ॥  
ॐ कांदवाय २ ॥ॐ कांकाय २ ॥  
ॐ मययाय २ ॥ॐ मकुवाय २ ॥  
ॐ यकस्तुगाय २ ॥ॐ वक्रानच ॥  
नत ४ रुद्रावनी ॥ ॥ॐ अजिष्क



[illegible]

नमोऽस्तु सर्वे वक्राकू नूस्वसदिमिदि  
(मेषू॥ अग्न नन्धादि॥ ॥ नूनिपूर्व॥

नमो दक्षिण दायार्चनी ॥ न्यासाय या  
 नुसाधनी ॥ ॐ नमो यामि ॥ आर्चनी ॥  
 ॐ त्वमग्नयूहि ॥ सुविक्रमदी ॥ ॐ द  
 वस्यत्वा ॥ अस्तु कर्दी ॥ ॐ कांष्ट्रिथि  
 नमः ॥ ॐ स्थानाष्ट्रिथि ॥ ॐ पूजा ॥  
 ॐ कास्तु कर्दी ॥ ॐ यवु कर्दि  
 ॥ ॐ काश्चनी ॥ ॐ कांयभयरा ॥ ॐ य  
 नयन्का ॥ ॐ पूजा ॥ ॐ कांविश्याक  
 लाद्याय ॥ ॐ दायार्चनी ॥ दक्षिण  
 दायार्चनी ॥ ॐ कांमाय ॥ ॐ  
 वलाविष्टमग्न ॥ मां वक्षार्चनी ॥ ॥  
 ॐ कांरुमाय ॥ ॐ रुमयूजन ॥ ॥  
 दक्षिण दायार्चनी ॥ ॥ ॐ रुजन्तव  
 रुवाविष्टमग्न ॥ रुमावलीमर्हि  
 ना ॥ रुमानानि नदा कूलंगिविव  
 श्रीवृक्षदवालय ॥ आभादीसुखदा  
 मभा ॥ रुवद्यनायुष्या ॥ कलादहदाया



मनीषिदमगधसिवासिर्वायस  
दादकि॥ वद॥ उ॥ दवा॥ दवी॥  
॥ इति॥ ॥ ॥ नमो॥ दानपात्रवर्न॥  
॥ उ॥ का॥ र्दगिन॥ श॥ उ॥ स॥ क॥ म॥ व॥ य॥ नि॥ द॥ क॥  
॥ उ॥ द्रा॥ वि॥ ना॥ य॥ का॥ य॥ श॥ उ॥ ग॥ र॥ द॥ र्वा॥ ति॥  
॥ वा॥ म॥ ॥ वि॥ दू॥ द्या॥ ॥ उ॥ व॥ छ॥ य॥ श॥  
॥ उ॥ रू॥ मा॥ व॥ नी॥ ॥ ध॥ नू॥ ॥ द॥ क॥ ॥ उ॥ प॥ व॥ छ॥  
॥ य॥ श॥ ॥ उ॥ द॥ व॥ य॥ नो॥ द॥ वा॥ वा॥ म॥ ॥  
॥ उ॥ द्रा॥ स॥ र्वा॥ क॥ म॥ ह॥ ला॥ का॥ र्वा॥ ॥ श॥ ॥ उ॥ व॥  
॥ जा॥ य॥ ति॥ थ॥ र॥ नी॥ ॥ उ॥ द्रा॥ को॥ ला॥ म॥ म॥ ल॥ म॥  
॥ ल॥ य॥ प॥ र्वा॥ र्वा॥ श॥ ॥ उ॥ उ॥ प॥ क॥ न॥ गि॥ वि॥  
॥ धी॥ ॥ उ॥ द्रा॥ स॥ र्वा॥ स॥ र्वा॥ स॥ म॥ ह॥ र्वा॥ ॥ श॥ ॥  
॥ उ॥ स॥ म॥ द्रा॥ य॥ ला॥ वा॥ ना॥ य॥ स्वा॥ हा॥ स॥ वि॥ वा॥  
॥ य॥ ला॥ वा॥ ना॥ य॥ स्वा॥ हा॥ अ॥ नो॥ धृ॥ का॥ य॥ ला॥  
॥ वा॥ ना॥ य॥ स्वा॥ हा॥ पु॥ ति॥ धृ॥ या॥ य॥ ला॥ वा॥ ना॥  
॥ य॥ स्वा॥ हा॥ अ॥ व॥ स॥ य॥ व॥ ला॥ वा॥ ना॥ य॥ स्वा॥ हा॥  
॥ मि॥ मि॥ दा॥ य॥ ला॥ वा॥ ना॥ य॥ स्वा॥ हा॥ ॥ उ॥ द्रा॥  
॥ सो॥ म॥ ह॥ म॥ र्वा॥ श॥ ॥ उ॥ व॥ स॥ र्वा॥ म॥ ति॥ ॥  
॥ उ॥ द्रा॥ प॥ र्ज॥ न्य॥ अ॥ र्मी॥ का॥ र्वा॥ श॥ ॥ उ॥ क॥  
॥ वि॥ द॥ म॥ ज॥ ॥ इ॥ ति॥ द्रा॥ व॥ वा॥ म॥ द॥ क॥ म॥  
॥ य॥ वा॥ नू॥ य॥ वि॥ ना॥ य॥ द॥ ति॥ ना॥ हि॥ मा॥ य॥

नादीचूजय॥ उ॥ का॥ हि॥ मा॥ व॥ ला॥ य॥ श॥  
॥ उ॥ हि॥ म॥ स्य॥ त्व॥ नि॥ ॥ उ॥ का॥ व॥ क॥ र॥ द्य॥ श॥ ॥ उ॥  
॥ व॥ म॥ य॥ क॥ र॥ ती॥ ॥ म॥ ध्या॥ ॥ उ॥ का॥ वि॥ दू॥ व॥ र॥  
॥ उ॥ वि॥ दू॥ व॥ र॥ म॥ ति॥ ॥ वा॥ म॥ ॥ उ॥ का॥ म॥ ह॥  
॥ य॥ वा॥ य॥ श॥ ॥ उ॥ न॥ म॥ ॥ ग॥ म॥ वा॥ य॥ च॥ द॥ क॥  
॥ उ॥ का॥ क॥ ग॥ म॥ श॥ ॥ उ॥ वृ॥ ह॥ स्य॥ न॥ क॥ दि॥  
॥ य॥ ति॥ ॥ उ॥ का॥ वृ॥ छ॥ ली॥ क॥ वा॥ म॥ न॥ ध॥  
॥ जा॥ र्वा॥ श॥ ॥ उ॥ अ॥ र्मा॥ क॥ मि॥ टा॥ ॥ उ॥ का॥ न॥  
॥ का॥ य॥ श॥ ॥ उ॥ र्वा॥ य॥ वि॥ छ॥ वा॥ ॥ उ॥ प॥ ल॥ वा॥  
॥ य॥ श॥ ॥ उ॥ अ॥ र्वा॥ स॥ य॥ वा॥ म॥ म॥ ग॥ म॥ ॥  
॥ उ॥ का॥ ग॥ म॥ या॥ य॥ श॥ ॥ उ॥ ग॥ न्ध॥ द्या॥ मी॥  
॥ उ॥ का॥ इ॥ वा॥ य॥ श॥ ॥ उ॥ का॥ ला॥ क॥ ला॥ ॥  
॥ उ॥ का॥ स॥ र्वा॥ पा॥ य॥ श॥ ॥ उ॥ रू॥ मा॥ नू॥ द्या॥ य॥  
॥ उ॥ का॥ प॥ र्ज॥ स॥ र्वा॥ य॥ श॥ ॥ उ॥ व॥ क॥ र॥ ह॥ र्वा॥  
॥ न॥ म॥ य॥ मा॥ र्च॥ न॥ ॥ उ॥ अ॥ र्जी॥ वि॥ क॥ ल॥ म॥  
॥ अ॥ वा॥ ह॥ ना॥ दि॥ ती॥ र्थ॥ द॥ क॥ न॥ पू॥ व॥ र्वा॥  
॥ उ॥ य॥ म॥ रू॥ हा॥ ग॥ क॥ र॥ रू॥ ह॥ ति॥ छ॥ र॥ रू॥  
॥ रु॥ स॥ नि॥ धि॥ क॥ रू॥ र॥ स्वा॥ हा॥ ॥ अ॥ र्मा॥ द्या॥ म॥  
॥ व॥ अ॥ क॥ व॥ च॥ ना॥ व॥ गु॥ द्या॥ ॥ उ॥ मू॥ य॥ मा॥  
॥ य॥ स॥ ग॥ कि॥ स॥ हि॥ ना॥ य॥ श॥ ॥ उ॥ य॥ म॥ द्या॥  
॥ द॥ न॥ ॥ व॥ न॥ न॥ य॥ ध्या॥ धृ॥ व॥ दी॥ य॥ रू॥ ल॥



नमः ४ यश्चिमेष्टान् पूजनीं ॥ न्यासाद्यया  
 नुसाधनीं ॥ ॐ नत्वा यामीति ॥ आसनीं ॥  
 ॐ त्वमस्य दूरिविति ॥ दूरि कर्तव्यं  
 ॥ ॐ देवस्य त्वति ॥ अस्त्वकर्तव्यं ॥  
 ॐ कां दृष्टि यो नमः ॥ ॐ स्थाना दृष्टि वी  
 ॥ दृष्टि ॥ ॐ कां अश्व न्कृष्ट काय २ ॥  
 ॐ यं दृष्ट कर्षू रिति ॥ दृष्ट कर्षू री ॥  
 ॐ कां पयः २ ॥ ॐ यं कर्षू री ४ सदिति

॥ य० य० ॥ ॐ ऊँ निवृत्तिकलादावा  
यशाँ दावा देवी ॥ यश्चिमदावा ॥  
ॐ ऊँ गी वधायशाँ चलाविश्व  
मि ॥ गी वधाय चला ॥ ॐ रुनाय नमः ॥  
ॐ रुनाय त्वमि ॥ रुनाय नमः ॥ ॥  
यश्चिमदावा धीन ॥ ॐ ऊँ यनकक  
रासुतास्त्रादियन वक्ता चरायमद  
कालाय धुवना वविश्वसकलादे  
दीयमानैसदा ॥ याषा नातिसय ४ स  
मस्तन वया वैदूर्य वना वया ॥ ना  
दान वरुतायुक्त कजनालीलाहि  
तायश्चिम ॥ वद ॥ ॐ दावा देवी ॥ ॥  
ॐ तिध्मिन ॥ ॥ तना दावा वाचन ॥  
ॐ ऊँ वृषरायशाँ स्त्राका नामिन्द  
यमिगू वरुत्या वृषरायमा ॥ धी वृ  
षरुनु गोषादाष्टनयुषामनसामाद  
मानो ४ स्वाहा दवा अमृतामादयना  
म ॥ दकि ॥ ॥ ॐ ऊँ स्त्राका य २ ॥  
ॐ यनवा धी सम्यक्तनी ॥ वाभ ॥ ॥  
विष्णु दावा ॥ ॐ धीनायेशाँ विष्णु  
हृक् ॥ दक् ॥ ॐ विधातायेशाँ ॐ  
दिवो वा विष्णु उतवा ॥ वाभ ॥ ॥







ॐ दक्षस्य त्वति ॥ अथ कर्ण ॥ ॐ जां  
यथिये नमः ॥ ॐ श्यानायु धिवी  
ति ॥ पृथ्वायुजर्ण ॥ ॐ जां उ द्म्ववृ  
कायनमः ॥ ॐ यवृ कषूति ॥ वृ  
काचर्न ॥ ॐ जां य ० यनमः ॥ ॐ य  
मयकाः सविनीति ॥ य ० युजर्न ॥  
ॐ जां यतिष्ठा कला दानायनमः ॥  
ॐ दानादवीति ॥ उरुवद्वानाचर्न  
॥ ॐ जां भावसाय २ ॥ ॐ चलाविशृज  
॥ भावसाचर्न ॥ ॐ जां रुताये २ ॥ ॐ  
रुतायलानावा मय ॥ रुतपूजर्न ॥  
उरुवद्वानाचर्न ॥ ॐ श्यामान्धीन  
डिवाजाहिमकमया दलुरुतः पृ  
थिव्या गनीतीर्थाजामा युवतवृ  
भदावभ्रमासिस्त्रमवृ १ नानायेका  
गधेनीविलसिदुधुवर्णकिन्नरा  
धीविलासा निर्यसंस्का नरुमिय  
जनविधिवल्लतावयदीहभर्त ॥  
ॐ दालादवी ॥ ॐ तिष्ठात ॥ तत्र  
दावपावाचर्न ॥ ॥ ॐ जां दथे २ ॥  
ॐ अम्बज्ज्विक ॥ ॐ नमालुनीलगी  
वाय ॥ वाम ॥ ॥ ॐ विष्णुवाय ३ ॥

ॐ विष्णुनाय २ ॥ ॐ यतद्विक्रविति ॥  
दक ॥ ॐ केववालाय २ ॥ ॐ विष्णुना  
नाटमसी ॥ वाम ॥ ॥ ॐ जां सत्यलो  
ककुबलाकार्या २ ॥ ॐ यजायतिश्च ॥  
ॐ जां माहं रुतमकृतपर्वताकार्या २  
ॐ उयद्ववगिवि ॥ ॐ जां स्वा २ ॥ कीम  
समूजाकार्या २ ॥ ॐ समूजमद्वदयम  
स्वक १ सत्याविर्गसाधधीनताय १  
यहस्यलाय रुतमसुक्ताकीनमावा  
कविधेमयस्योला ॥ ॐ ययययय  
साकार्या २ ॥ ॐ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥  
ॐ जां धनदयमाकार्या २ ॥ ॐ कविद  
गजवमकति ॥ ॥ ॐ तिष्ठात ॥  
वामभावायायुपवितावलोहिता  
हिमाचलादीन्युजय ७ ॥ ॐ हिमा  
चलाकार्या २ ॥ ॐ हिमस्यलाजया ॥  
दक ॥ ॐ जां वम ॥ १ ॥ ॐ उमज्ज  
नी ॥ वाम ॥ ॐ जां विष्णुव नमः ॥  
ॐ विष्णुवनाटमसि ॥ ॐ जां महमया  
ॐ नमः १ ममवायव ॥ मध्य ॥ ॥  
ॐ जां कृणार्थ २ ॥ ॐ वृहस्पतद्वि ॥  
ॐ जां समूखस्यतिष्ठिरुधेजाकार्या २ ॥



ॐ अस्मा कमिन्द ॥ ॐ कां व का ये नमः ॥  
 ॐ लं य वि ष द ॥ ॐ कां य ल वा य २ ॥  
 ॐ अस्म सु पे व र मा ॥ ॐ कां ल म मा य २ ॥  
 ॐ ग न्ध दा ग मि ॥ ॐ कां द व म न म ॥  
 ॐ का लु का लु ॥ ॐ कां स र्प या च २ ॥  
 ॐ मा नू डो य ॥ ॐ कां प च सु ग य २ ॥  
 ॐ व का रु र ति ॥ ॥ त मा कू व वा च न ॥  
 ॐ अ जि ष क ल म ॥ ॥ आ वा रु ना दि ती र्थ  
 द क ना यू र्थ ॥ ॥ ॐ कू व व रू हा ग च  
 २ रू ह ति ष २ रू ह स ति धि कू र २ स  
 हा ॥ अरु ण स व क क व य ना व रू थ ॥  
 ॐ सु कू व ग य स ग कि स रि ता य न म ॥  
 ॐ कू वि द ग ज व म न ॥ ॥ य न न यू थ  
 धू य दी य रु ल न व य ता नू ला दी नि ॥  
 ॐ म न ॥ श ति य ति ष ॥ ज य स्म ॥ ॥  
 ॐ श्री गे ल न्द स म नू ना म हि म रू ल  
 व रू सि ष्ठा व या ४ ना ना व क मा कू ली  
 ति क न क र व नी स वा स र्व म ४ ना ही  
 ग न्ध म ना रु व ध नि व य वा नू ४ गि ला  
 रु टि क ४ शी र्थ य व त वा ज ना म वि  
 व सा व न्द स दा रु कि ना ॥ ॐ अ या सि

सर्व द वा ना मि ति ॥ ॐ महा वी र्या म  
 हा का य शु च रु टि क स नि रू र त  
 वा व कि री गे ल हि म व र्क स रू म रू  
 नी ॥ ॐ अ य च य रू त व व क दी य  
 मि ति ॥ अ ग न्धा दि ॥ ॥ त मा द  
 व व लि ॥ ॐ वा म म य स वि त ॥  
 उ रु व वा व व सि ॥ ॐ ति उ रु व वा वा ॥

त मा ध वा व वू ज नी ॥ न्या सा र्थ या व पू ज  
 ॐ त ला या मि रू ति ॥ आ स नी ॥  
 ॐ त म र न य रू ति स्र मा ॥ शु वि क व दी ॥  
 ॐ द व स रू ता ॥ अ रू क नी ॥  
 ॐ कां प थि यो न म ॥ ॐ स ॥ ना प थि वी ॥  
 वृ थि कू ज ॥ ॐ कां अ रू म क रू का य २ ॥  
 ॐ य व क ष ॥ व का रू नी ॥ ॐ कां प थ य २  
 ॐ थ त य का ४ स वी ति ॥ ५० वू ज नी ॥  
 ॐ कां प थि द वा य २ ॥ ॐ द वा य दे वी ॥  
 द वा रू नी ॥ ॐ कां अ रू त वा व ध य न म ॥  
 ॐ आ दि त ग रू य य सा स म धि स रू स  
 स य मि मां वि श्व वू य म य वि वृ ति रु व  
 सा मा मि म रू ४ गे ना य व कू रू ति



वीरमानशशावधमर्चनी ॥ ध्यान ॥  
 ॐ अन्नं नमः पूज्यं लीलाकारं रुनादभंगी  
 पूर्वविद्युदामपनी कार्मा कुर्मावृत्तं  
 पुष्पजय ॥ ॐ द्वात्रिंशद्वी ॥ नृति ध्यानं  
 ॥ तमाद्यावदकिं वा ममाख्याया नूय  
 विना वदस्ति तहिमावलादी नूजय ॥  
 ॐ कां हिमावलाय ॥ ॐ हिमस्य त्वति ॥  
 ॐ कां वक्राक्ष ॥ ॐ वक्रयस्त्रानं ॥ दक्ष  
 ॐ कां विष्णु वर ॥ ॐ विष्णु वर ॥ वाम ॥  
 ॐ कां महादेवाय ॥ ॐ नमः ॥ गङ्गा ॥ मध  
 ॐ कां कृणाय ॥ ॐ वृहस्पते कृदिनसि ॥  
 ॐ कां धजाय ॥ ॐ अस्माकमिन्द्र ॥  
 ॐ कां वक्राये नमः ॥ ॐ त्वजविष्ठदति ॥  
 ॐ कां यस्त्र वाय ॥ ॐ अस्मत्पुत्राय ॥  
 ॐ कां गमयाय ॥ ॐ गंधर्वाय ॥ मिति ॥  
 ॐ कां इन्द्राय ॥ ॐ कां काष्ठाय ॥  
 ॐ कां सर्वपाय ॥ ॐ नमः ॥ पूजायति ॥  
 ॐ कां पञ्चगव्याय ॥ ॐ वक्रा नमः ॥  
 तमाधकवमर्चनी ॥ ॐ अस्ति प्रक  
 लगी ॥ तीर्थदकनपूवय ॥ ॥  
 ॐ अन्नं नमः ॥ हा गङ्गा ॥ ॐ रुति ठ २  
 ॐ रुसं निधिं कुरु स्वाहा ॥ अस्तु एव

लक्षकवचनावयुष्ट ॥ पूजनं ॥  
 ॐ अन्नं नमः ॥ ॐ तीर्थदविच ॥  
 वदनपूषधूपदीप हलनेवयादि ॥  
 ॐ मनाः शक्तियुक्ति ॥ जयस्त्रा ॥  
 ॐ अक्षरगधवमनः सर्वस्वदाम  
 छित्तः ॥ कर्मासनसमाख्याय नमः  
 वक्रयाद्यय ॥ ॐ अस्माकव नमः ॥  
 वक्रकनकलं कर्ण ॥ ॐ वदिवधव  
 न्नीयातालेवावमावही ॥ ॐ अयं  
 यस्त्रमिति ॥ अङ्गगन्धादि ॥ ॥ द्वात्रिंश  
 ति ॥ ॐ नमः ॥ गङ्गाय ॥ ॐ अस्ति अस्तु

तमाधकवमर्चनी ॥ न्यासार्थपुष्पा  
 ॐ नत्यायामि ॥ अस्तनी ॥ ॐ त्वमने शूहि  
 ॥ भुवि कवदी ॥ ॐ देवस्य त्वा ॥ अस्तु  
 ॐ कां वृथिवी ॥ ॐ स्थानो वृथिवीति ॥  
 ॐ कां वक्रकाय ॥ ॐ यवृक्ष ॥ वृक्ष  
 ॐ कां यव ॥ ॐ यव नका ॥ १० ॥ य ०  
 ॐ कां सर्वदाय ॥ ॐ द्वात्रिंशद्वी ॥ वाम  
 ॐ कां गोवधाय ॥ गव्य ॥ ॐ वत्सवि  
 श्रुति ॥ ॐ कां गोवधाय ॥ ध्यान ॥  
 ॐ पीनीनीनवतुर्वादी वक्रानंदतुवा



[illegible]

परुलनेवयादिनिबल्या ॥ ५  
 ॐ म नो इ नित्यतिष्ठ ॥ ज प स्तुत ॥  
 ॐ य म यानि वरु मूर्ति सुद्धि स्थान  
 निवासन ॥ सृष्टि कर्ता लोका निर्य  
 तस्मै वक्र न्तमो लुत ॥ ॐ वक्र लोका  
 यया जातो यरु दानादिका व क ॥  
 पुसद लु सदा सा द्वा ॥ पला गी त नू न  
 दिता ॥ ॐ ज य च ॥ यरु मिति ॥ ५  
 जग न्मादि ॥ ॥ गता वा वलि ॥ ॐ न  
 मी ॥ न ॥ नू दि उ र्ध वा रा र्ध न

[illegible]







नमो ब्रह्मणे पूर्वोक्तिमुख्यस्तु ॥ क  
लुप्ता धनं कुर्यात् ॥ ७ ॥ एतन्मित्रं  
यदवस्ययदित्यमनसा जगद्भूय  
ष्विष्टं क्लिष्टं यदक्षयं यदक्षयं  
नमा विवेकं ॥ न न कलुषं मिनिनीक

नमः सर्वत्राक्रान्तिवादनं ॥ सिंहा  
सनाय प्रपूज्य लिखितं ॥ सुनिय १००  
॥ उं यस्तु सिंहासनाधृतं मकीकृत्य  
मनागिवां मयैर्गादवता ॥ सर्वत्र नमः  
सिंहासनाय वि ॥ नमस्तु वक्रा ॥ सर्व  
त्र नमः सुगुणवा सदा मृगलपूज



ततः ४ षोडशानां सुनिमित्तं १० त्॥ येषां ऊरु  
 लिनिधाय ॥ ॐ यस्मै सर्वकर्मफलप्रद  
 विद्वान्नीधाय सनायक ॥ यश्च स्यात्तु न  
 सुखं सुनिधाय सुमित्रा सुखा ॥ यश्च  
 दीयन्तु गेयं न ॥ अस्तु दीयन्तु यथा  
 गतं कृणीयं जगन्नाथ ॥ सर्वं च न हन्य  
 ॥ ॐ ॥ अथा लोकपाला गुरु गेयं  
 हयनाद्याय वदी स मेला ॥ अस्मद्वरुषु व  
 र्त्तन्ति मत्तु लदादवदवीय सन्ने ॥ नो  
 नाविप्रियमान् कर्मसु इति यत्तु मत्तु  
 मूढा विलाया त्वत्सर्वं कर्मार्थं तु न गतं  
 हवन्ती यस्मै सर्वं सुखं ॥ कउदि कृपूय  
 कयनं ॥ ॥ सर्वं विद्वानिच्छादनी ॥ ॐ व

तत्ताकृभभुि कर्मकृया ॥ कमाच  
 र्ममे कर्ममधुलंपूजय ॥ अयादि  
 पूषराजनकृत्वा ॥ वाक् ॥ ददयादा  
 नस्तु ॥ उं सिद्धि वस्तु क्रिया वस्तुति  
 उं अय सर्वय हं रूपस्तीर्थेति ॥ पूष  
 राजन समर्थे ॥ ॥ वाक् ॥ एन अया  
 दिसूर्यार्थे ॥ ॥ गुन नमस्कायादिभ  
 यर्गिनास ॥ अया वन्यास ॥ सि वा  
 र्धपार्थकृत्वा ॥ अया कीन कर्मगमि  
 कधि सूर्ये स तदुलं ॥ तिले सिद्धार्थ  
 कंदूवा अर्थयानुपदायय ॥ ॥  
 उं का वदश क नार्थयानुपूजनं ॥ त  
 ऊलेनात्मानं सिद्धय ॥ तिले कादि  
 पूषार्थयानु ॥ उं यो गेया स्वाहंति ॥  
 हतमुद्धि ॥ यो गेया म ॥ कृपुस्वाय  
 नी ॥ उं अग्निमग्नि सदा ह वस्तु विक्र को  
 सय वाहन पूषपियं ॥ ॥ ॥ मखलाह  
 यस्वायनी ॥ उं नजमषययावेतसूय  
 पुननयावेत ॥ अस्वायपूषकाथगिह



मादहिः यमान ॥ २ ॥ कृष्णालं  
 न ॥ ॐ अग्निं वारि विविदि विविदि  
 तनं नृपतं दवाय हविष्यति ॥ ३ ॥  
 ॐ या अघधीति ॥ यरुदय निवीक ही ॥  
 गिवमत रुवसा वीजमनुमाल ॥ वि  
 वूमत रुवसा वीजमनुमाल ॥ विमघ  
 ॐ जां ह दया यर ॥ ॐ मरुं ॥ ॐ हति  
 यग्म कृम समिधो वामरुं कृहीत्वा  
 ॥ तता वलि पूजन ॥ ॐ गं गदीयते यर  
 ॐ गधनीत्वा ॥ गदीयति वलि ॥ १ ॥  
 ॐ जां कृपा ला यर ॥ ॐ नमा वरुणाय  
 कृपवलि ॥ २ ॥ ॐ जां इर्मय नमः ॥  
 ॐ या तव दमे ॥ इर्मव लिपु दानी ॥ ३ ॥  
 ॐ जां दिक्कालं ॥ २ ॥ ॐ घृती घृता वा  
 ॥ दिवलि ॥ यत्नतादि धूपदीप जप मंत्र  
 ॥ ॐ निर्वोदी निर्विकल्पे स्वादि ॥ अ  
 नृगन्धादि ॥ अरुत विसर्जन ॥ बहि  
 क्रिय ॥ ॥ ॐ ति उदक वज्रि कर्म ॥ ॥

अथानि कृष्णं स्तुवं ॥ ॐ अरु यरुद  
 ॐ त्वय विष्ट दा ॥ लाजा विरुपनी ॥ ॥  
 ॐ जां ह दया यर ॥ गायत्री ॥ ॐ घृता मि  
 त्वा ॥ कृष्ण निवीक ही ॥ १ ॥ ॐ अरु

स्तुय रुद ॥ ॐ आधा हि हति सि केन  
 ॥ २ ॥ ॐ अरु यरुद ॥ ॐ नमः कृ  
 ॥ ता उनी ॥ ३ ॥ ॐ क व वा यरु ॥  
 ॐ अरु ॥ मिमान ॥ अरु कदी ॥ ४ ॥  
 ॐ अरु यरुद ॥ ॐ यद वा द वरु  
 ॥ यतनी ॥ ॥ ॐ मिखा ये व घट ॥  
 ॐ अरु ॥ सीरु तति ॥ मृहि कां ला य ॥  
 ॥ ॥ ह दय न पूवदी ॥ ॐ यरु यत ॥  
 ॥ ॐ जां गिव सखा ला ॥ ॐ मरु मुसीषा  
 ॥ ॥ क व व नाय कदी ॥ ॐ द व स्या ला ॥  
 ॥ अरु ह कृदनी ॥ ॐ नमः कृ ॥ १० ॥  
 ॥ क व व न उ प ल य न ॥ ॐ मो न सा क ॥  
 ॥ ॥ क व व न र्म मार्जनी ॥ ॐ त्वि कृति ॥  
 ॥ १२ ॥ अरु ह अरु यरुद क न सि व न  
 ॥ ॐ त ला या मी ॥ १२ ॥ गायत्री क व व  
 ॥ ॐ य धि म न द कि ॥ ॥ ॐ हं ग  
 न्या तीत क ला यर ॥ म ॥ ॐ ॐ म नि  
 क ला यर ॥ पूर्व ॥ ॐ हं विद्या क ला यर ॥  
 द कि ॥ ॥ ॐ ॐ य ति षा क ला यर ॥  
 य धि म ॥ ॐ ॐ नि वृ हि क ला यर ॥ उरु न  
 ॥ क म न पा धी व पि व र व म ॥ ॐ स ग ॥  
 १४ ॥ अरु ह स मी ग कृ ॥ ॐ अरु ह कृ  
 स मी ग कृ ॥ ॥ ॥ ह दय न कृ म व र वा ॥



भगवती ॥ १७ ॥ हृदयं न चतुष्पाद ॥  
 उं हि वक्ष्ये गुरुं ॥ चतुष्पाथ विदुषां स  
 न ॥ १८ ॥ हृदयं न पीतं सूर्येना दल  
 यमीलिख्य ॥ उं यद्माननंति ॥ १९ ॥  
 एषा दमस्तस्या विधिः ॥  
 उं ऊं कवचाय हूं ॥ उं सदस्यतिमा ॥  
 न कृष्णाय कपनी ॥ उं ऊं अस्त्राय रु  
 द्रा ॥ उं श्रीरुद्राय मम ॥ श्रीरुद्राय कपनी ॥  
 उं ऊं अस्त्राय रुद्रा ॥ उं दवस्य त्वमि ॥  
 अर्घ्याणां दकनाय कृष्ण ॥ उं ऊं ह  
 दयाय ॥ उं हि वक्ष्ये गुरुं ॥ विदुषां स  
 न चतुर्वर्त्तनिधाय ॥ उं ऊं गिर्याये वष  
 ट् ॥ उं ऊं जाति ॥ घृणास्ती ॥ उं ऊं कवचा  
 य हूं ॥ उं वक्रा रुद्रा ॥ विगृणी यक्षसू  
 रक वल्लभ कुरु देव नृकृत्वा ॥ उं ऊं वा  
 गीश्वरी पूजनी ॥ उं यूक्त नमने सा ॥ वागी  
 श्वरी पूजनी ॥ उं श्रीं लक्ष्मी ॥ उं हि वक्ष्ये व  
 र्त्तु ॥ लक्ष्मी पूजनी ॥ पूष्या निधाय ॥ उं ऊं  
 सठना गोयणी अमृतं कजनी यवाये ॥  
 अउमती धात्वा ॥ यजमानं नृधनं च  
 तुष्टयं आचार्यं हस्तं समर्पय ॥ उं ऊं  
 हृदयाय ॥ उं त्वा वृत्तं ॥ काष्ठं रुद्रा  
 ॥ उं ऊं अस्त्राय रुद्रा ॥ उं दवस्य त्वा ॥ काष्ठ

मस्तु कवी॥ॐ क्रीं मि व स स्वाहा॥ॐ वूं  
न्मि नास्वा वूं मि॥ यं हूं न्ध न यो जय ॥  
हूं वा कादि स क य र्थ नै॥ क्रुत न ॥  
ॐ हूं यो न्या कती॥ॐ क्रीं सर्व त्वा य र॥  
ॐ मरु वं ॥ काष्ठ कृत्तु पूजनी॥ वन्दना  
दि पूष्य न पूजनी॥ॐ हूं लोकाय नमः॥  
ॐ रुद्र लोकाय र॥ॐ स्वर्ग लोकाय नमः॥  
ॐ मरु लोकाय र॥ॐ जन लोकाय र॥  
ॐ नय लोकाय र॥ॐ सत्त्व लोकाय र॥  
वृत्ति कृत्तु पूजनी॥

नमो धर्मसाधक ॥ सूर्यकाकोथवाक  
 छत्राक्षधस्य गृहपिबो ॥ अग्निपुष्पा  
 लयदाक, नमोपाकुस्ति नानय ॥ यज्ञ  
 अंतिगृहोराव, दर्शनाला समादतं  
 ॥ नमो ॥ धर्मावा ॥ अग्निपुष्पा ॥ अं  
 जांगि वस स्वाहा ॥ अं अग्निर्भूत्वा ॥ अ  
 मिमानीय ॥ कृदिहायकं दिवूलि ॥ कू  
 उशक्ति अकतया ॥ उवयाव, यक्षत्र  
 लं अहायल इथ ॥ नमोपाकुसुतया  
 व ॥ यज्ञमानीधृत्वा ॥ मधुर्यजाय ॥ न  
 अत्यदावा ॥ लंसास्य, दूकायाव, अ  
 नि कृत्तं जामय ॥ अं वाय्याय दशा ॥



॥ अन्त्येकवादाग्निं कृत्वा ॥ आत्मना द  
 किं (संस्थायां) मूलं न निबोद्धं ॥ ३ ॥  
 हृदयाय ॥ ४ ॥ ॐ क ॥ अस्माय रुद्र  
 ॥ ॐ वक्राहृदी ॥ निर्मळनी ॥ ॐ क  
 कवचाय ॥ ॐ अस्माय वदधी ॥ वसि  
 पुदानी ॥ ॐ क ॥ अस्माय रुद्र ॥ ॐ क वा  
 दमनय स्वाहा ॥ ३ ॥ यवति ला क्त  
 घृता कृतिं श्रुया ॥ ॐ क वा दमनि  
 ॥ क वा दाग्निं संयमिष्य ॥ वहि ॥ कि  
 य ॥ ॐ वस्य र्मन ॥ अर्घ्यामा दक मा  
 स्य कर्त्त ॥ ॐ वा हृदयाय ॥ ॥ नृतिष्ठ  
 (मनसं) पश्य ॥ ॐ व ॥ अस्माय रुद्र ॥  
 अस्मासं वक्रा ॥ कवचनाय वसुधै न ॥  
 नमयर्त्तुं य ॥ ॐ वेम्भानयाय विम  
 ह ॥ अन्तर्हिताय धीमहि ॥ ननाव  
 द्धि ॥ पुवा दया ॥ मूलं अर्घ्याय  
 य ॥ (धनं) मूलायामृती कृत्वा ॥ ॥  
 अग्निं न्यास ॥ ॥ रुद्रा ॥ ० ॥ वरुणं दर्व  
 ति ॥ वकीरुर्त्तं विराया ॥ ॐ गं गीं वं व  
 चैतन्याय ॥ ॐ अग्निर्मयि ॥ यवमानी ॥  
 अन्तर्लभ्यं कृत्वा ॥ ततोऽग्निं गृहीत्वा ॥  
 स्वात्मानं विष्णुमूर्त्तिं ध्यात्वा ॥ यान्ती क  
 तालं श्रीं विचिन्तयेत् ॥ वीजं वक्षिष्य क

लयय॥ ॐ जां गिर ह स्वाहा ॥ ॐ अ नः  
 गिरूषमति ॥ अग्नि कूले त्रिपदकिं ह  
 कृत्वा ॥ वो ह ॥ ॐ यजमानस्यामूक  
 पुतिमामूकवतायापननिमित्तार्थम्  
 मूर्कर्मसु ॥ मूर्ममन्त्र ॥ ॐ मयिष्ट  
 ज्ञान्ययति ॥ स्वाहा न हाम ॥ ॥  
 ॐ स्वस्ति वाचनीय ॥ ० ॥ ॐ अग्निष्टाय  
 ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥  
 ततावालाग्निलकार्थमिन्धनवाद्य  
 ॐ कवचाये ह ॥ ॐ मर्ममिहवर्मना ॥  
 ॐ अग्निस्तु यस्तु ॥ ॐ अग्निस्तु  
 हति ॥ अग्निस्तु ॥ तता ॥ कयातन  
 आसनपूर्वकं ॥ ॐ जां मयदाय नूद  
 मास्तनमः ॥ ॐ जां यश्चदाय नूदमा  
 स्तनमः ॥ ॐ जां सामवदाय नूदमस्त  
 नमः ॥ ॐ जां अथर्ववदाय नूदमास्ते  
 नमः ॥ ॐ जां वसुधे ॥ १२ ॥ ॐ अग्निमीष्ट  
 पूर्व ॥ ॐ जां विष्णवे ॥ ॐ अग्निमीष्ट  
 दकि ॥ १३ ॥ ॐ अग्निमीष्ट ॥ ॐ अग्निमीष्ट  
 आयाहि ॥ पश्चिम ॥ ॐ जां अन्ननाय  
 २ ॥ ॐ मन्त्रोदधी ॥ उरुव ॥ पूनः ॥ यज  
 नी ॥ ॥ ॐ जां मयदाय अग्निमीष्ट  
 यशोमदवताय गायत्री कन्दस ॥



ॐ जां यशुर्वदाय तानवाज (ग) हाय व  
कदवताय जि ह्नुन्दस ॥ २ ॥ ॐ जां  
सामवदाय कायि प (ग) हाय वृद्ध  
वताय जगती कन्दस ॥ २ ॥ ॐ जां  
अथर्वदाय वंशानस्य (ग) हाय वृ  
द्धवताय अन्न ह्नुन्दस ॥ ४ ॥  
॥ ॐ लूं ह्नुन्दाय सनाधिपतय वृद्ध  
कायि वताय सनाय ॥ १ ॥ ॐ नूं  
अनयतजाधिपतय गकि ह्नुन्दाय  
अजा सनाय ॥ २ ॥ ॐ मूं यमाय प  
नाधिपतय वृद्ध ह्नुन्दाय मरिषा सना  
य ॥ २ ॥ ॐ कूं नेमिषाय ग कभी  
धिपतय वृद्ध ह्नुन्दाय वताय सनाय  
॥ ४ ॥ ॐ वूं वृक्षाय जलाधिपतय  
वाग ह्नुन्दाय मेक वा सनाय ॥ ५ ॥ ॐ  
यूं वाय वृषा धाधिपतय वृद्ध ह्नुन्दाय  
हविषा सनाय ॥ ६ ॥ ॐ सूं कृवाय  
~~हविषा सनाय~~ य काधिपतय न  
कृव ह्नुन्दाय रुया सनाय ॥ ७ ॥ ॐ  
हूं क्षीमाय रुताधिपतय जि मू  
ले ह्नुन्दाय वृषा सनाय ॥ ८ ॥ ॐ  
जां विष्णुवातालाधिपतय वृद्ध

काय कर्मा सनाय ॥ ९ ॥ ॐ जां वृक्ष  
लोसर्ग धिपतय अन्न ह्नुन्दाय  
हंसा सनाय ॥ १० ॥ ॐ जां म (ध) सम  
रुद्धवा नास धिपतय ला हि तव ह्नु  
यय कृव ह्नुन्दाय रुया वृद्ध नाय वा  
हावनी समन्विता यतजाधिपतय  
तम ॥ ११ ॥ ॐ यथा यय नम ॥ १२ ॥  
हं समिध हामं ॥ १३ ॐ कां वृषा  
क ह्नुन्दाय रुया ॥ १४ ॐ जां हृदय  
य ॥ १५ ॐ वृषा रुद्धवा ॥ अग्नी संहृवा  
कवर्मा ॥ १६ ॐ ह्नुन्दाय ॥ वृक्षा सनाय ॥  
पृथीता सनाय नम ॥ १७ ॐ वृषा सनाय  
नृति वरा सनाय ॥ १८ ॐ जां वृक्षा सनाय  
॥ १९ ॐ हिव धं ग ह्नुन्दाय ॥ २० ॐ जां यधीत  
सनाय नम ॥ २१ ॐ विष्णु वना नम ॥  
पृथी वना सनाय ॥ २२ ॐ यधीत वना  
ला ॥ २३ ॐ क ह्नुन्दाय रुद्ध ॥ २४ ॐ दवस्य  
वा ॥ अन्न कर्मा ॥ २५ ॐ क व वाय क  
ॐ वृषा वृद्ध वृद्ध ॥ २६ ॐ यधीत वृद्ध  
॥ कृषा नम ॥ २७ ॐ अन्न कर्मा ॥  
ॐ जां हृदय य ॥ २८ ॐ अया हि सा ॥  
पृथीता वरिषा पूर्वमन् ॥ २९ ॐ



पुष्पीतचन्दनयसोपवीतयुष्यनपू  
 जनी॥ ॥ वक्रायूजनी॥ ॐ क्रां वक्र (ध)  
 २॥ ॐ क्रां पुजाय तय २॥ ॐ क्रां हृदिक  
 लय २॥ ॐ वक्र यज्ञानी॥ ॥ पुष्पीत॥  
 ॐ क्रां पुष्पीताय २॥ ॐ क्रां पूजाय २॥  
 ॐ क्रां वृक्षाय २॥ ॐ क्रां आपय तय २॥  
 ॐ श्री विपदा विवक्रमा॥ ॥ ॐ क्रां व  
 क्र (ध) २॥ ॐ क्रां वक्र व्याक्र (ध) ॥ ॥  
 दकि (ध) वक्रा क्रायनी॥ गालवमाध  
 काष्ठदयसहितन॥ ॥ ॐ क्रां पुष्पी  
 ताय २॥ ॐ विष्णु त्राटमसि॥ उरुव  
 पुष्पीत क्रायनी॥ वक्रा पुष्पीत पूर्व  
 वत्पूजनी॥ ॥ उरुव सर्वपात्राणि  
 उरुव सर्वदवता॥ उरुव सर्वगीर्था  
 नि॥ किमर्थं वक्र दकि (ध) ॥ यमावेव  
 सुमायाजा वसत दकि (ध) दिमि॥ तद  
 र्थं दकि (ध) स्त्राय वक्रा वसति दकि  
 (ध) ॥ ॥ वक्रा पूजा॥ ॐ क्रां वक्र (ध)  
 वृद्धमास्ती २॥ ॥ ध्यान॥ यथा सनक्ति  
 तदव हंसकाच उमाननी॥ पीनीयी  
 तदुत्तरीक कृष्णदक्ष कपूरक ॥

ॐ क्रां वक्र (ध) २॥ ॥ हृत्पादि॥ ३॥ ॐ वक्र  
 यज्ञानी॥ ॥ क्रां वक्र॥ ॐ वक्र मय वक्र  
 वीरु हंसयथा सनक्ति त॥ लोकां  
 धृष्टिकलान हंसगर्जनमास्तु ॥  
 अङ्गगन्धादि॥ ॥ पुष्पीत पूजनी॥  
 ॐ क्रां पुष्पीताय वृद्धमासर्जनम ॥  
 ॥ ध्यान॥ यथा क्राता कृमानूजाता क  
 कामर्कटानिर्गमय वक्र गदाय  
 य विष्णु कृष्ण बाहुन॥ ॐ क्रां पु  
 ष्पीताय २॥ ॥ हृत्पादि॥ ३॥ ॐ विष्णु  
 वराटमसि॥ क्रां वक्र वक्र वक्र  
 वीरु गार्कयथा सनक्ति त॥ सर्व  
 त्वाक कानिर्त्य चक्र यार्गितमास्तु  
 त॥ अङ्गगन्धादि॥ ॥ ॐ क्रां कला  
 कृष्णाय २॥ ॐ नमास्तु नील गी शय  
 ॥ मय कृष्ण पूजनी॥ ॐ क्रां वक्र  
 वृद्ध॥ ॐ क्रां यथा सनक्ति॥ दिविदि  
 कृष्णमाकननपविस्तु वदी॥ ॥  
 यथा २ विधि मन्त्र कलम च दीप  
 ततः पूर्व द्वारं गत्वा॥ मिव दाय॥



वाची नन्दी महाका ल्या मारुति  
 विनायक पद्मि मङ्गल वस्त्र देवी  
 वरदा रुद्र नन्द ॥ ॥ विष्णु दान  
 वाची जगन्नाथ विष्णु या याम्य वधु य  
 वधु क्रीडा ना विष्णु वा नू र्ध्व रुद्रा  
 मरुदा वा रुद्रा ॥ ॥ पूर्व दान कलम  
 र्चनी ॥ ॥ ॐ ऊँ पूर्व दान यनमठ  
 लमिनिमन्त्र न्या सा र्घ या न पूजनी ॥  
 ॐ ऊँ अस्त्राय रुद्र ॥ ॐ द वस्त्रा ॥  
 अस्त्र रुद्रा ॥ ॥ तन्ना दान कलम र्चनी ॥  
 ॐ ऊँ वस्त्राय ॥ ॥ दक्ष ॥ ॥ धीम ॥  
 ॐ यूवा रुद्रा जटा धात्री वक्र काया  
 दिवा रुद्र क ॥ सा रुद्रा ला जि मूली व  
 नन्दी र्मा दान या ल क ॥ ॐ ऊँ नन्दि  
 न ॥ ॐ नमो ॥ मे रुद्राय ॥ रुद्रा ॥ ॐ  
 स्वयं दान सन रुद्र वक्र वधु महेश  
 व ॥ सर्व भोक्ति क र्थे व नन्दि मूर्ति  
 नमोस्तुत ॥ वाम ॥ ॐ ऊँ धिना स्त्राय ॥  
 धीम ॥ ॐ रुद्रा रुद्रि भोला क पीता  
 रुद्र मरुदा वधु कर्ष वा न्ति रुद्र मेश

मृधुमालाजिलावनंतकुंवृद्धि  
कयाग्रगूलखटकेवामका॥कृष्ण  
गामहाकाली,द्याववेद्याववासर्क॥  
ॐ कंमहाकोलाय२॥ॐ नमोवल्ल  
भाय॥स्फु॥ॐ युतासनसमावृट  
कृष्णवर्णमहावल्ल॥सर्वाविष्ट  
वंदव,महाकालीनमोस्तु॥ज्जग  
न्मादि॥॥ॐ आर्यदाय२॥ध्मीना॥  
ॐ पीतवर्णवृद्धी,मकरमालास  
पूक्तकी,ववदारुयहृक्तके,आर्य  
दंदवध्मीयत॥ॐ जूयिमीदति॥  
॥स्फु॥

ॐ क्रां कृतयुगाय २॥ श्री नमो ॐ श्री स्व  
सृष्टिकर्तृकार्ग स्वमहदकधामि  
द्यौवज्जगत्सुखसुखसुखसुखसुखसुखसुख  
यत्तनमध्या ॐ श्री कृष्णाय किरतव  
कृतायादिनवदशैर्गार्थकल्पि  
नैवापनाधिकल्पिनमास्कन्दाय



यसंतास्तनमृत्वांवेरभयदुमनका  
यलोघातंरुधयोभीविकुननैरिक्त  
मातेउयतिष्ठतिइहृतायववकाय  
गार्थपापानसंलवमू॥स्तोत्र॥

ॐकांगक्षये२॥ध्यान॥ॐस्वनामक  
वसंकावउर्धकायासुभारुना॥रु  
कुन्दीववहस्तोवदावकाजमूय  
हिको॥ॐममभगमति॥स्तोत्र॥  
ॐगिरिवाजसमरुतं गंगस्यग्रीव  
गमिनी॥सर्वरुतविगुडाका॥गंग  
वृपीतमास्तुत॥ॐकांयमूनार्य२॥  
॥ध्यान॥ॐकृष्णवृडाकहस्तोवदान  
काकलेगोविता॥कुन्दीववदलश्री  
मा॥सूत्रयोयमूनोतथा॥ॐगितामि  
गति॥स्तोत्र॥

ॐसुंतामाय२॥ध्यान॥ॐस्वनामक

गविरधवा॥दसा॥ॐतद्विरुद्धा॥ग  
दापोनिदिवाकृष्टेकदृथाववद॥म  
भी॥ॐमन्दवा॥स्तोत्र॥ॐसामकृष्ट  
वउर्धका॥कृष्टिका॥कसमद्विनि॥  
ॐगंगसंरुतनिहाकवनमास्तुत॥  
ॐकांजुमायाय२॥ध्यान॥ॐस्वनाम  
लाभवधवा॥मकिगूवधवायव॥व  
उर्धका॥ममगमा॥ववदसाधवास्तु  
ॐजगिर्मद्विनि॥स्तोत्र॥ॐकिकिज  
किकिजमा॥निपूर्वाषाडाउमरुव  
तावका॥कृष्टकन्द॥जगवमोतक  
नम॥ॐकांजुमायाय२॥ध्यान॥  
ॐपीतकृष्टमहावीर्य॥स्वमयाविव  
ययद॥ॐस्वनामसदाधायडोम  
गार्थस्त॥गिर्व॥ॐजगत्कवाति॥  
स्तोत्र॥ॐवक्रजागनमस्तु॥उम  
गार्थमूनार्यववदगमनार्थसंयुक्त  
ॐमोवायसमावच॥मग्लामा  
यवतम॥॥ॐकांवल्लय२॥ध्यान  
न॥ॐमुक्तकजादया॥वाकृष्टिकिनि







मार्गस्मात्तदवता ॥ तत्पुत्रं चायं वरु  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यथाकाशे  
जगत्तथा सर्वं दत्तमस्मिन् ॥  
नानमीशमस्तुते ॥ गान्धिवानसमा  
शितः ॥ अङ्गगन्धर्वः ॥ अथवि  
ष्टुताव ॥ ॐ जगदाय ॥ ध्यान ॥  
ॐ यद्वाप्तुं न जगदाय ॥ देवकवत्ताव  
दुक्तुजा ॥ वज्रवत्ताव ॥ गीतवत्ताव ॥  
वर्धुवत्ताव ॥ ॐ यज्जगत्तमनउक्त ॥  
यज्जगत्तमियाविष्टाविष्टावृद्धा  
विष्टावृद्धाविष्टावृद्धावृद्धावृद्धा  
दककृन्महीवत्तावत्तावत्तावत्तावत्ताव  
तिः ॥ स्मृता ॥ ॐ ॥ यत्तावत्तावत्ताव  
उक्तुजा ॥ एकवत्तावत्तावत्तावत्ताव  
सर्वदाता ॥ जगदाय ॥ नमोस्तुते ॥  
ॐ विजयाय ॥ ध्यान ॥ ॐ विजया  
रुमवत्तावत्तावत्तावत्तावत्तावत्ताव  
एकवत्तावत्तावत्तावत्तावत्तावत्ताव  
नायिनी ॥ ॐ ॥ देविष्टावृद्धावृद्धावृद्धा  
स्मृता ॥ ॐ रुमवत्तावत्तावत्तावत्ताव  
उक्तुजा ॥ योनिनी ॥ सर्वसिद्धिपदा  
नायिनी ॥ विजयाय ॥ नमोस्तुते ॥  
मार्गस्मात्तदवता ॥ तत्पुत्रं चायं वरु

ॐ गद्यपद्य ॥ ध्यान ॥ ॐ एकव  
द्विगजाय ॥ वज्रवत्तावत्तावत्ताव  
अकालाकृन्महीवत्तावत्तावत्ताव  
नक्तिनी ॥ ॐ गद्यपद्य ॥ ॐ  
ॐ महीवत्तावत्तावत्तावत्तावत्ताव  
महीवत्तावत्तावत्तावत्तावत्ताव  
जगत्तमनउक्त ॥ ॐ महीवत्ताव  
नमः ॥ ध्यान ॥ ॐ महीवत्ताव  
महीवत्तावत्तावत्तावत्तावत्ताव  
कमालाकृन्महीवत्तावत्तावत्ताव  
ॐ यावत्तावत्तावत्तावत्तावत्ताव  
सर्वसिद्धिपदा ॥ वीनायुक्तक  
विष्टावृद्धावृद्धावृद्धावृद्धावृद्धा  
वज्रवत्तावत्तावत्तावत्तावत्ताव  
ॐ महीवत्तावत्तावत्तावत्ताव  
ध्यान ॥ ॐ महीवत्तावत्तावत्ताव  
महीवत्तावत्तावत्तावत्तावत्ताव  
मीलाकृन्महीवत्तावत्तावत्ताव  
मीति ॥ स्मृता ॥ ॐ महीवत्ताव  
सर्वसिद्धिपदा ॥ वीनायुक्तक  
नायिनी ॥ लक्ष्मीवत्तावत्तावत्ताव  
ॐ वज्रवत्तावत्तावत्तावत्ताव  
ॐ महीवत्तावत्तावत्तावत्ताव  
गजावत्तावत्तावत्तावत्तावत्ताव







ता। पा। म। कृ। म। न। क। म। लं। ध्या। यत। वा।  
सुव। ह। ती। ॥ ॐ। य। क। न। य। वि। ति। ॥ कृ। ॥ ॥

॥ हं ह्रीं नमो दायेशाख्यान

ॐ आपादवीमधूमतीव  
गृह्णाततस्मै तस्थी नक्षत्रं चंद्रं सवरा  
उल्लोकः तस्मै नमः का जनयस्व यत्नी  
नार्तवमूणी विरुतास्तनः ॥ स्तोत्रार्ति

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ कर्तुं कारयेद  
वदुति ॥ खड्गवर्मगदापाणि सिंह  
स्त्वाव वदो वृध ॥ ॐ उद्धृष्टाग्नेति  
गलाग्रां धनिष्ठा द्वादशी जन्म मघ  
दशमि समुत्पन्नानां वायव्यदिशं वलं  
वृधवैष्णवमोस्तुत ॥ ॥ ॐ वृहस्पते  
यशाश्च नमः ॥ ॐ कृष्णार्कसूत्राय नमः

सुदृढकर्मसुलभं कर्मसुलभं कर्मसुलभं  
वर्द्धमानसुलभं कर्मसुलभं कर्मसुलभं  
अति॥ सुलभं कर्मसुलभं कर्मसुलभं  
धर्मा मकादमासमूर्द्धवः प्रकादिद  
यदवर्द्धविपुलादिनमोस्तु ॥ ॥

ॐ ऊं वा सो य श ॥ श्री नमः ॐ श्री नमः क य  
 ती हा मा य सु कं व व द ४ क व ४ स र्व भ  
 सु क व र ल व ध्या य ध्या स न नि र्व ध ॥ ॥  
 ॐ य स्य क र्मा गुरु ॥ स्तुत ॥ ॐ का य क  
 र्मा स व र्त्त हि त क र्मा त र्क य वि ग्र ह ॥  
 स्तुत वि स्तुत न स र्व क न म स्तु य स र्व स  
 दा ॥ ॐ ऊं ह न म र २ ॥ श्री नमः ॐ  
 वा य पू णा म हा वी न व क धू म त्रि ला व  
 नी र वि गू ली मू णि को रु सी श्री नमः ह न  
 मा न्त दा ॥ ॐ ती ष्ठा न्धा षा न्द्र ध्य न ॥  
 ॥ स्तुत ॥ ॐ व क व र्धु म हा वी र्य वा य  
 पू ण त्रि ला व नी र क धू म ल र्त्त पी मि  
 रु न्मा ना य वे त म ४ ॥ ॐ ऊं कू मा  
 र्य २ ॥ श्री नमः ॐ व क र्मा ग कि ध वी द र्वा न  
 क मा ल्या म्य वा नि ता म् ॥ मि सि वृ ष्ट स  
 मा रू र्दा र्त्त कौ गी धा व व क कौ र ग क  
 को मा र्त्त क न्द्र वृ षि धा ॥



ॐ यत्र वा सोऽवति ॥ सा ग ॥ ॐ कोमारी  
मयूमां वृणानको गीधो वनकका ॥ गं  
कवि नू मं डा व गु ध रू पी न मी लु ग ॥  
ॐ जी वं वृ वी रा ॥ ध्या न ॥ ॐ व क्र म स ध  
गा प म ॥ क ह ल क र क र ग ॥ सो मां र  
नू पि धी क र्या ॥ धे धू वी च न मालिनी ॥  
ॐ विष्णु न क ॥ सो ग ॥ ॐ वं धू वी ता र  
मा वृ धा ॥ ह वि तां गी ति सा रि ता ग दा  
क वि नू मं डा व वं धू वी व न मी लु ग ॥  
॥ म र ध्य य मा च न ॥ ॐ मां य मा य र ॥  
॥ ध्या न ॥ ॐ क ता न म हि षा वृ ट ॥ द धु ह  
रुं र या न क ॥ का व णा स ध र्व काल ॥ ध्या  
य द कि धे दि क ति ॥ ॐ मूं य मा य र ॥  
ॐ मूं य मा य र ॥ ॐ य म न द ह मि मि म  
॥ ॐ जां द लु ह ला य र ॥ सो ग ॥ ॐ द धु  
ह ला य मा द वा ध म्मा ध्या को म हा व ल  
॥ ल व र ॥ बा ह यि य्या मि ध र्मा ग ज  
न मी लु ग ॥ ॥ ॐ वी ह य य म ति ॥ वी  
हि ष जा ॥ ॐ हि व ध ग र्क ॥ ग र्क पू ज  
॥ ॐ यो ॥ रु लि नो ॥ ॐ जां क धू प ता  
का य र ॥ ॐ लु ज्जा सा न ॥ प ता का प  
जा ॥ ॐ अ म्भ अ न्धि का ॥ अ धि द व ता  
व न ॥ ॐ न भा व रू म य ॥ रू त व ला र्व

॥ ॐ अ र्थे ता न सो ॥ वृ क्क रु व पाल ॥  
व न दि न व य न ॥ ॐ म ना श ति पु ति षा  
॥ ॥ अ व रू ॥ ॐ न मा द कि न दा  
वा य ॥ ॐ व धु प च धु द व श्र रू मी ग  
ध प ति स थ ॥ य श र्व द य न क श व का व  
नी स न यु त थ ॥ वृ धा वृ ह स ति धि व व धु  
का ध रू थै व व को मा री व धू वी म कि दान  
इ क्का डि द व ता ॥ व ना हा धो व व क्ता व दान  
म ॥ धि क ता न क ॥ ॐ प ता का धे क रु ग मि  
स व द व व व ति ता ॥ वि धा दा व स मा ह  
त्य तां न मा मि स म रु क ॥ ॐ अ ग न्धि दि ॥  
ॐ क या न शि र ॥ क र्मा न य वि रु र धी ॥  
वि धू दा व ॥ ॐ व धु न य रा ॥ ध्या न  
ॐ व धु न यि प्प धा रा ॥ क व क्ता रि ता  
व ना ॥ द धुं क र्म ग दा व क्क व द्वा स व  
वि न द ती ॥ ॐ न व ती ॥ ध नू म ती ॥  
का ग ॥ ॐ अ न सी प्प धा र्क म ल क र्क  
नू य ॥ म ति र्क वि धू स र्व वि ना ग य व धु म  
हि न मी लु ग ॥ ॥ ॐ व व धु य रा ॥ ध्या न ॥  
य व धु न क व क्क क रू व धु र्क र्क र्क  
तां र व श रू क वा धी क ध नू वि धू प  
म र्क क ॥ ॐ द व स ती द व धा ॥ सो ग  
॥ ॐ क रू ग ॥ नू स र्वा सी न र व म रु ट



गता वशि मद्य वाच नमो ॐ जां यशि  
 मद्य वाच शिवमिति न्यासाय या  
 जा ॥ ॐ ह्रस्वस्त्राय ह्रस्वा ॐ द व स्य  
 स्त्राय ॥ अस्त्राय कर्म ॥ गता दाल कलुग  
 वन ॥ ॐ को वृषास्त्राय शिवान ॥ ॐ  
 जक वक्र कडुर्वा रुने क वधुर्वा दय  
 र्वा अस्त्राय कर्म ॥ गता दाल कलुग  
 वन ॥ ॐ को वृषास्त्राय शिवान ॥ ॐ  
 जक वक्र कडुर्वा रुने क वधुर्वा दय  
 र्वा अस्त्राय कर्म ॥ गता दाल कलुग  
 वन ॥ ॐ को वृषास्त्राय शिवान ॥ ॐ

ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥



॥ उक्तां शिव वराक्षीना ॥

三

॥ॐ भान्नः सिन्धु न वल्  
थया यतः समुद्रास्य बह्नि यमा यः  
सलिलः यः गुता यः यो यो जसा सुविर्  
वज्राः सिन्धुः सिन्धुः न वल्  
लायः ॥

॥ॐ नमो भगवते

श्रीशास्त्रनामं

॥ॐ ह्रीं नमो

तामधूनासमं अर्तावित्येदं व व म धूना  
मन्त्रिः ४८ उर्य स्वती य य सा वि सु माना  
स्मां स्तीने व व सा ह्या व पृ त्स ॥ स्ता ७ ॥ ३

॥ॐ ज्ञानं गुणाय २॥ ध्यान॥

[illegible]











[illegible]











विष्णु कर्म कर्म गीर्ण कर्म हस्त कर्म  
 गस्तु वा नय नमः ॥ ३ ॥ उ प व दाय शो  
 ॐ गद्य पद्य शो ॐ गद्य नी ला ॥ ३ ॥ स व  
 स लो ॥ ३ ॥ वा व का न स व स नी ॥ ३ ॥ म ह  
 ल ॥ ३ ॥ शो ॐ श्री ग ल ॥ ३ ॥ कां क मू द  
 क ध जा य शो ॐ अ स्मा क मि ला ॥ ३ ॥ न का  
 यो ॥ ३ ॥ ल य वि ष द ॥ ३ ॥ कां प ल वा य  
 शो ॐ अ ग्ग रू प वा ॥ ३ ॥ कां क गाय  
 शो ॐ वृ ह ल्य क कृ दि व सि ॥ ३ ॥ कां स व  
 पा य शो ॐ म्मा नू डी य ॥ ३ ॥ म म या य शो  
 ॐ ग न्ध वा ना नू ॥ ३ ॥ इ वा य शो ॐ का धी  
 का धी न ॥ ३ ॥ व म वृ का य शो ॐ य वृ क  
 ष ग ॥ ३ ॥ कां व च रू पा य शो ॐ व का ह न  
 ॥ ३ ॥ वी रु य य म ॥ ३ ॥ वी हि पू जा ॥ ३ ॥ हि व ध  
 ग रू ॥ ३ ॥ ग रू पू जा ॥ ३ ॥ या ॥ ३ ॥ रु लि नी ॥ ३ ॥ रु  
 ल पू जा ॥ ३ ॥ कां न व रू प ना का य शो ॐ  
 वृ लु अ सा ॥ ३ ॥ अ कृ षू न व ॥ ३ ॥ अग्नि द  
 व ता र्च न ॥ ३ ॥ अ म्ब क य जा म ह ॥ ३ ॥ वि य  
 ग क कृ पा ला र्च न ॥ ३ ॥ व न ना दि धू प दी  
 वा नी ॥ ३ ॥ म ना रु मि य ति ष्ठा ॥ ३ ॥ ज व ॥

सा ॥ ३ ॥ कृ व क व का वृ ह ली क पा ल  
 ल्व म ग य य म व लि प दा धी ॥ ३ ॥ ग न्ध वृ  
 पे वि वि धी य सै हा न सु श र व ल स ह  
 क र पा ल ॥ ३ ॥ अ ग ग न्ध दि ॥ ॥  
 त मा वि षु वा वा ॥ ३ ॥ अ ग न य शो ॥ ३ ॥  
 ॐ स का र्चि य च र्चि वा धे म क मा ला क  
 म धु ल ॥ ३ ॥ का ला मा ला कू ल व कू म कि रू  
 रू क ग म न ॥ ३ ॥ अग्नि र्म ह ति ॥ ३ ॥  
 ॐ स र्व क ज म या द वा न क व रू म ह  
 यु ति र्वा ग म स ना ग कि रू म नि द वा  
 न मा सु गो ॥ ३ ॥ क यो न शि ड अ नु व ॥ ॥  
 क र म न प वि सु र्वा ॥ ३ ॥ नू ति आ र्च य द वा ॥

त मा ने म ल्य वा र्च न ॥ ३ ॥ ने म ल्य वा र्च  
 य शो ॥ ३ ॥ ना सा र्च य वृ पू जा ॥ ३ ॥ का मि नि वा  
 सा ॥ ३ ॥ क ल्पा य मि ॥ ३ ॥ अ स न ॥ ३ ॥ ल म र्च  
 यु ति ॥ ३ ॥ यु वि क व दी ॥ ३ ॥ द व स्य ता ॥ ३ ॥  
 लू क दी ॥ ३ ॥ नू द मि षू ॥ ३ ॥ म ना य  
 धि वी ॥ ३ ॥ कां वृ त वृ का य शो ॐ स वि  
 न रू ॥ ३ ॥ कां की र्ति वा ग य शो ॐ वा र्च  
 द वी ॥ ३ ॥ ने म ल्य य न म ॥ ३ ॥ धी न ॥



ॐ हं वं वरुणं नमो वा नमो नीला त्वल दन  
 प्रभुः कया विधादि मे ग्रंथं विवेकं न  
 कसंभवं रा ॐ हं नमो यथा यथा ॐ यन  
 दवी वृत्ता ॥ सा ॥ ॐ सर्वप्रकाश पश्ये  
 व नमो नीलविग्रहं रवम हस्तम  
 हावी प्रो नमो कसाम नमो सुता ॥ ॐ क्रो उ  
 पवदाय रा ॐ गद्य पद्य रा ॐ गद्य  
 नीला ॥ ॐ सर्वस्य रा ॐ यावका नम  
 वसुता ॥ ॐ महा लक्ष्मी रा ॐ श्री यत  
 ॐ क्रो वाम नमो कया रा ॐ अस्माकमिन्द्र  
 ॥ ॐ क्रो नमो कया रा ॐ त्वयि विष्ट दाम ॐ क्रो  
 पश्यदाय रा ॐ अस्मत्पुत्रा लभ ॐ क्रो  
 कृणाय रा ॐ वृहस्पति कृदी नमि ॐ क्रो  
 सर्वपाय रा ॐ ह्रस्वा वृत्ताय रा ॐ क्रो  
 मय रा ॐ गन्धर्वा नी ॐ इवा यत ॥  
 ॐ काष्ठो काष्ठो ॥ ॐ वं गृह्णाय रा ॥  
 ॐ यदृक् वृत्ता ॐ क्रो पश्य स्याय रा ॐ  
 वका ह नी ॐ श्री हयश्रम ॥ श्री हि ॐ  
 हि वृत्त गृह्ण ॥ गृह्ण ॐ या ह हलिनी ॥  
 हला ॐ क्रो वृत्त वृत्त यथा काये रा ॐ ॐ

दुःखा ता भक्ता ॥ ॐ अस्मिन्मा अस्मादित्या  
 अवन्त सिरुता गुह्यं न वन न अस्मिन्मा  
 मनसमया विष्ट कृत्वा कृत्वा विदि  
 विवत्त नानि ॥ अधिदवता च नी ॐ वृ  
 यदग्नि मन्त्रं अग्नि जिज्ञा कृत्वा ल  
 चनी ॥ वन्दना दिष्ट पदी पान्नी ॥ ॐ मना  
 रुतियतिष्टा ॥ उयस्ता ॥ ॐ कृत्वा  
 वका ॥ अस्मन्मादि ॥ ॐ कया दायि  
 ॥ क्रो नमो विष्ट वदी ॥ ॥  
 तता विष्ट वदी ॐ नमो यथा ॥ ॥  
 ॐ इष्ट वानु कृत्वा नमो विष्ट वानु  
 मनः पूरुत्वा त्वं हस्तं नीला त्वं  
 कया विष्ट ॥ ॐ यनं दवी ॥ सा ॥ ॐ  
 नमो यथा वृत्तं हस्तं हस्तं महा  
 वल्लभका कृत्वा वत्त नमो यथा  
 यनमा सुता ॥ ॥ ॐ नमो यथा वत्त ॥  
 तता वी यथा वत्त नमो ॐ क्रो यथा वत्त  
 यथा ॥ यामिनि नमो सार्धपात्र पूजा ॥  
 ॐ तत्ता यामि ॥ आसनी ॥ ॐ त्वमग्नि



सुवि॥ उं दवस्यता॥ अरुणकन॥ उं ॐ  
 दमिस्तु॥ उं सोनापुषिवा॥ उं जांवेक  
 कनककायश॥ उं गतमिन्द्रमवदा॥  
 उं जां पृष्टिहा गायश॥ उं हावादीति॥  
 उं जां वायवश॥ अना॥ उं ज्ञापीतं ह  
 विर्तकायविला॥ लघुजघनिर्घण्यध  
 रुतयैरुतानी॥ हविरोस्ते समीवधी॥  
 उं यूवायवश॥ उं नववायव॥ उं ॥  
 उं सर्वपाप्मात्मकैर्येव सर्वस्वावायुद  
 वता॥ अजहस्ता॥ महायज्ञा वायुदवा  
 नमोस्तुते॥ ॥ उं उयवदायश॥ उं ग  
 वयनयश॥ उं गवानीत्या॥ उं सुवस  
 शे॥ उं यावकोनसुवसती॥ उं मरु  
 लम्बो॥ उं ग्रीष्मलक्ष्मी॥ उं जां सर्व  
 भुज्जजायश॥ उं अस्मोकमिन्द्र॥ उं  
 जां वकायश॥ उं लयविष्ठजा॥ उं जां  
 पल्लवायश॥ उं अश्वस्तुपवा॥ उं  
 जां कृतायश॥ उं वृहस्पतकृदीनसि॥  
 उं जां सर्वपायश॥ उं ॐ मातृजायनवा॥  
 उं लमस्यश॥ उं गन्धदायी॥ उं जां इ  
 र्वायनम॥ उं काष्ठीकाष्ठीत्यवूष॥

उं वमवृत्तायश॥ उं यवकवृमधिग॥  
 उं जां वकस्तुगायश॥ उं वकाहववम  
 उं वीरुयशमे॥ वीही॥ उं हिनम्यगड॥  
 उं या॥ रुचिनी॥ रुत॥ उं जां हविनवधु  
 ताकायश॥ उं ॐ नुजासानतातिप  
 उं सुवधुसिगरमास्तुवृ रुमिनाग  
 यवयुक्तुवृहउथनययको॥ रुत  
 आत्मा॥ उं नो॥ उं स्यमनियरु॥ उं घिना  
 मसातततनुवमिदवयवहोयैरुय  
 यूकधि॥ उं ग्रीष्मलक्ष्मी॥ उं स्यमनियरु  
 लमादिर्वगकस्तपत॥ उं नमोवज्रमा  
 ॥ उं ननादिधूपदीपांत॥ उं मनाह  
 ति॥ पुतिष्ठा॥ जयस्तुता॥ उं कनूक  
 का॥ म॥ अगन्धादि॥ उं कयानसिद्ध  
 ॥ कसनटाजालिस्तुवदी॥ ॥  
 ततोविष्णुकाव॥ उं वायवश॥ अना  
 ॥ उं पीतो॥ गोवाथवा॥ अम॥ उं विर  
 उथे॥ गन्मेत॥ नका॥ कोलन्यवास्य  
 सुगह॥ उं वा॥ कृगीधजी॥ उं नववा  
 यवि॥ रुत॥ उं वा॥ यवा॥ पूर्यक  
 लो॥ अजहस्ता॥ महायज्ञा वायुदवा  
 लमक॥ रुयववायुदवानमोस्तुते॥ ॥  
 ॥ रुतिवायुदावाचमी॥ ॥







ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गंगा अर्ध द्वा वाच नमः ॥ गंगा सा घे पात  
पूजा ॥ ॐ ज्ञां अर्ध द्वा वाच नमः ॥  
ॐ ऊं अर्ध द्वा वाच नमः ॥ ॐ द व स्य त्वति ॥  
ॐ ऊं ए थी द्वा वाच नमः ॥ ॐ द्वा वाच नमः ॥  
ॐ ऊं कर्मा नमः ॥ ॐ ध्याना ॥ ॐ पीत ग  
सं शुद्धि ॥ ॐ गीत व क ग वाच नमः ॥  
गनिता व ग व क ॥ ॐ सफा न न न न य  
वि ॥ ॐ गीति व द ॥ ॐ क ॥ ॐ य न ग म  
वि य ति द व स न न न न न न न न न न न  
ना ल व मे न न न न न न न न न न न न न  
न ॥ ॐ हि ॥ ॐ वी ह य य म ॥ ग क य ॥  
ॐ हि व य ग क ॥ ॐ क ॥ ॐ या ॥ ॐ रु नि  
ॐ ऊं नी ल व र्ण प ता का य ॥ ॐ पु न दि  
रु व न ॥ ॐ न म ॥ ॐ स र्ग य ॥ अ धि व  
ॐ ऊं मा र्जु ना य ॥ ॐ ऊं उ लु क गु पा य ॥  
व न ना दि धू प दी पा न ॥ ॐ म न शक्ति  
पु ति ता ॥ ॐ य स ॥ ॐ क व क व का  
अ र्ध ग न्धा दि ॥ ॐ क व न शि ॥  
क ॥ ॐ न व वि क व दी ॥

विष्णु द्वा ॥ ॐ अर्ध द्वा वाच नमः ॥  
ॐ अ न न न न न न न न न न न न न  
ॐ गीति व द ॥ ॐ क ॥ ॐ अ र्ध द्वा वाच  
व व ग न ॥ अ र्ध ग न्धा दि ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गंगा अर्ध द्वा वाच नमः ॥ ॐ ऊं उ लु क गु पा य  
य ॥ ॐ अ मिति वा स र्ग य पूजा ॥  
ॐ द व स्य त्वति ॥ अ र्ध क र्ण ॥ ॐ ऊं स  
र्र द्वा वाच नमः ॥ ॐ द्वा वाच नमः ॥ ॐ ऊं ह  
सा स ना य ॥ ॐ ध्याना ॥ ॐ ह सा स न स  
मा र्जु दी पीत व र्ण व र्ण क र्ण क र्ण क र्ण  
व वा र्ण ति ह्म न म ॥ ॐ सा स र्ग य ॥  
ॐ व क र्ण य ॥ ॐ क ॥ ॐ उ लु क गु पा य  
लु ना थ य ॥ ॐ स र्ग य ॥ ॐ स र्ग य ॥  
ॐ म व र्ण म र्ग वी व य य र्ण र्ण न म ॥  
लु क ॥ ॐ वी ह य य म ॥ ॐ वी हि ॥ ग क  
ॐ हि व य ग क ॥ ॐ या ॥ ॐ रु नि ॥  
ॐ ऊं पीत व र्ण प ता का य ॥ ॐ ध्याना  
क द यि वि ॥ ॐ क र्ण द व ॥ ॐ स र्ग य ॥  
स य त सा वि र्ण द व ॥ ॐ य र्ण य र्ण



मस्तुष्टु॥ॐ अस्तु नमस्तु॥ अविद  
उ विम्व नमस्तु॥ रास्तु नमस्तु  
न॥ वन नमस्तु धूप दीप कलनेव  
यतामस्तु दीनिदस्तु॥ ॐ मनीश  
तिप्रतिष्ठा॥ जयस्तु॥ ॐ कुरु  
वकास्तु॥ ॐ कयानस्थिति ॥  
कुरुगोद्यविस्तुवर्दी॥ ॥ तताविष्  
ताव॥ ॐ उक्तोयश॥ ध्यान॥ ॐ धीनेयी  
नीमिति॥ ॐ वस्तुस्तु॥ ॐ  
ॐ यमयानि वस्तुमूर्ति॥ अस्तुगन्त  
दि॥ ॐ तिष्ठतु कलनेवस्तुवर्दी ॥

अथ नमस्तुस्तु पूर्व योगिनी कलस्तु॥  
न्यासादिकं कुरु॥ ॐ तत्त्वयामि ॥  
ॐ त्वमेव शक्तिः ॥ ॐ दवस्तु त्वानि॥  
ॐ शिवास्तु यश॥ ध्यान॥ ॐ शक्तव  
ॐ महायानि सर्वलक्षणसंयुता  
नेमस्तु पूर्वतस्तु न योगिनी मूर्तिवस्तु  
यस्तु॥ ॐ योगिनी शक्तिः ॐ अस्तु अस्तु  
ॐ श्रीहयशम्भो ॥ ॐ हि वस्तु गुरु॥ वन  
नादिधूप दीपान् ॥ ॐ मनीशतिप्र  
तिप्रतिष्ठा॥ जयस्तु॥ ॐ तुलाक  
वापिनीदवि कलिकाया लक्ष्मि

गी॥ विष्णुमर्द कनकदीपानि मूर्ति  
नमस्तु॥ अस्तुगन्त॥ ॐ तियानि॥

ततावायवस्तु दक्षिण कुरुकनस्तु॥  
न्यासादि अर्घ्यपात्रयुजा॥ ॐ तत्त्वयामि॥  
ॐ त्वमेव शक्तिः ॥ ॐ दवस्तु त्वानि॥  
ॐ कुरुगोस्तु यश॥ ध्यान॥ ॐ वस्तु  
विम्वकनमस्तु विम्वविम्वलाननस्तु  
दक्षिणमस्तु वस्तु नमस्तु कुरुकपा  
लिनस्तु ॐ कुरुगोस्तु यश॥ ॐ न  
मावस्तु मय॥ ॐ श्रीहयशम्भो ॥ विदि॥  
ॐ हि वस्तु गुरु॥ वननादिधूपदी  
पान् ॥ ॐ मनीशतिप्रतिष्ठा ॥  
जयस्तु॥ ॐ नमस्तु नमस्तु मास्तु य  
वायुदक्षिणसीकितस्तु सर्वगुरु  
मास्तु यस्तु यस्तु लनमास्तु ॥ अस्तु  
गन्तुदि ॥ ॐ कयानस्थिति अस्तु ॥  
यविस्तुवर्दी॥ ॐ तिष्ठतु कलनेवस्तुवर्दी

ततावायवस्तु पूर्वगुरु कलस्तु वनना  
न्यासादि अर्घ्यपात्रयुजा॥ ॐ तत्त्वयामि॥  
ॐ त्वमेव शक्तिः ॥ ॐ दवस्तु त्वानि॥ ॐ  
मनीशस्तु यश॥ ध्यान॥ ॐ नमस्तु कुरुकपा  
लिकाय ॥ ॐ तत्त्वयामि ॥ ॐ तिष्ठतु कलनेव



वक्रोम हावीवी धावाधवमधायिवी॥  
उं गंगमवमयशं गंगमनांता ॥  
उं वीहयमम॥ उं हि वधमगकृ॥  
चन्दनादिधूपदीपानां॥ उं मनांश  
कियतिष्ठ॥ जयस्तु॥ उं गजव  
क्रोम हावीवी मूलमोदकपाणिनः॥  
सर्वविघ्ननिवारकं गंगाय नमस्तु  
गोब्रह्म गन्धादि॥ ॐ नित्यं कलस

अथ ष्ठीमानस्य पश्चिमगुरुकलसा  
न्यासादिअथ पालकृष्ण उं नत्वाया  
मि॥ उं त्वमग्नयुहि॥ उं देवस्यत्वा॥  
उं वद्रास्त्राय॥ ॐ न॥ उं कृकमव  
सुसंरुत मकमालास्यपूक्तक॥ ॐ  
मानदिमिसंस्तानं यममहिविहाव  
यगाउं क्रांयुववशाउं वृहस्यत॥  
उं वीहयमम॥ उं हि वधमगकृ॥  
चन्दनादिधूपदीपानां॥ उं मनांश  
कियतिष्ठ॥ जयस्तु॥ उं देवगर्वा  
वैवसर्वेषां सुवीक्षकं नवाधियं  
गुरुमूहिनमस्तु सर्वभास्तुविमो  
वद॥ अथ गन्धादि॥ ॐ नित्यं कलस

ततः पूर्वस्यां कृष्णकलमवत

न्यासाद्येपाकृष्ण॥ उं नत्वायामि॥  
उं त्वमग्नयुहि॥ उं देवस्यत्वा॥ उं  
क्रोहं सासनाय॥ ॐ न॥ उं पीतव  
सुसंरुत कृकमव॥ उं कजासनं  
हंसयानकविजाहं मकमालोक  
मसुल॥ उं क्रांवास्तवशा॥ उं जौव  
क्रोवास्तवशा॥ उं वीहयमम॥ उं हि  
उं हि वधमगकृ॥ चन्दनादिधूपदी  
पानां॥ उं मनांश कियतिष्ठ॥ जय  
स्तु॥ उं पीतवसुमहादीर्घवड  
वोहंसुगममनं॥ पूक्तकवाकृक  
वासुवकनमोस्तु॥ ॐ नित्यं कलस

ततः पश्चिमस्य दक्षिणं अथ कृष्ण  
॥ न्यासाद्येपाकृष्ण॥ उं नत्वायामि॥  
उं त्वमग्नयुहि॥ उं देवस्यत्वा॥ उं  
उं क्रांवास्तवशा॥ ॐ न॥ उं वक्रुलो  
स्याविमोलाकि॥ कामायास्तुवीव  
नीरुमवसुसंस्तवपीनात्रतय  
याधवावास्तवसंस्तवसंस्तवदिवाह  
वधुविता॥ सदावामकनीरा॥ ज  
कृष्णीरुना॥ नित्या॥ उं ॐ अथ कृष्ण  
य॥ उं नमस्तु कृष्णमना॥ उं वीहय  
मम॥ उं हि वधमगकृ॥ गकृष्णनी॥



नमो अर्धश्यां ह वं ग्री ल श्री कु म्भे च  
 न ॥ न्यासदि अर्घ्य पात्र युक्ता ॥ ॐ नमो  
 यामि ॥ ॐ त्वमग्ने यूरि ॥ ॐ दधस्य त्व  
 ॥ ॐ कीमं क मी स्ता य २ ॥ ॐ न ॥ ॐ दधो  
 य विस्त्रि का द वी नीला य ल द ल य  
 हा ॥ सि न्धु वं द्य हस्त च ३ ॥ को कि सी ह न  
 र्हा स्त्रि ता ॥ ॐ की मी यो २ ॥ ॐ श्री श्रु न  
 ल क्री ॥ ॐ ॥ ॐ य दामा मि स दा द  
 वी श्री न न म न ल दा यि नी ॥ य स्त्रु म न  
 ल का र्थ व ॥ नि र्दोष व्या यु त पि ना ॥



गतामिवमोक्तिकलमयजननी॥ न्यासा  
 दिअर्थपात्रयुजा॥ ॐ नत्वायामित्ति  
 ॐ नमस्त्यग्रिभूतं दस्येवेत्याति॥ ॥  
 ॐ जोआध्यायिभूतयुष्टिकासने॥  
 ॐ जां वृषात्ताय २॥ ध्यानभूतं वृषरास  
 नसावृदा स्वगतस्तुतया कर्क। वृ  
 कुजस्तुगमेलं मूर्धन्यगोरुयाधसिग  
 कयदिनं वा नूचलं भेषयं विधुर्गं स  
 दा। नवर्गं शावयामीर्गं इ४ वा त्यावा  
 र्चनागेर्गं ॥ ॥ दयाया ॐ जोहिंहासने  
 य २॥ ध्यानभूतं सिद्धगंगिनिजीदवी  
 द्विकवामनिसुन्दरीम्बुर्वालेकावसं

[illegible]



मालयावधी चतुर्हस्तो वनासुवा  
 लकावर्गसूक्तार्थकवकुसुमाहना  
 अक्षदयैककृष्णपुष्पवपुस्तका  
 ऊर्कपुनानिधविनाशार्थसुहिना  
 थहविप्रिया॥ॐ जांजीलक्ष्मीवोसुद  
 वायश॥२॥ॐ पूषा रुमायलक्ष्मी  
 सहिताय॥२॥ॐ सरुप्रमीधति॥ॐ  
 गोश्रुतलक्ष्मी॥ पूजनपूर्ववत ॥  
 जपकोश॥ॐ वत्सीषधीसकवती॥  
 अक्षगन्धादि॥ॐ तिमिदमकिंकुश॥

गताग्ममयलिङ्गपूजा॥ न्यासाद्य  
 जपूजा॥ॐ देवस्यत्वा॥ अक्षुक्तार्थ॥  
 अक्षना॥ॐ कावयप्रोमयीलिङ्गमिव  
 सर्वरूपपिपीलिवक्त्रार्थवाचिर्नदय  
 अक्षमयकुवनध्वन्या॥ॐ जांसदागि  
 वायश॥ॐ गिवानामासी॥ चन्दना  
 विधूपदीपार्क॥ॐ मनोहृतिपुति  
 छा॥ जपकोश॥ॐ हिमकलुनिर्द  
 वीगताहृत्पुष्पविद्यासर्वपापहर्  
 चैववन्द्यपवर्ममिवी॥ॐ तिलगमय

गताक्षीनक्ष्मीपूजनी॥ॐ देवस्यत्वा॥  
 अक्षमयकुवा॥ॐ गिरीश॥ अक्षना॥ॐ यश

ह्मानीलवक्ष्मीसिन्धुवपाजुभवि  
 त्ता॥ अक्षदयैकहस्तो वधनधनवद  
 पुदा॥ॐ श्रीश्रुतलक्ष्मी॥ॐ लक्ष्मीनमथा  
 ॐ पावकानसुवसती॥ चन्दोदिवीपाने  
 ॥ जपसुति॥ॐ श्रीलक्ष्मीदवदवीवसर्व  
 संपत्तिवायीनी॥ सर्वकामपदाववा  
 नमस्तुत्यानमोनमः॥ॐ तिमिदमकिंकुश

गताक्ष्मादिह्यकलमभर्चनी॥ न्यासाद्य  
 पादपूजा॥ॐ तत्वाद्योमि॥ॐ त्वमग्र  
 यति॥ॐ देवस्यत्वा॥ॐ जांवकपमा  
 लायश॥ अक्षना॥ॐ देवस्यत्वा॥ॐ जां  
 सकाश्वथवाहनी॥ देवस्यत्वा॥ॐ जां  
 म्दातिमीकसुमपरी॥ॐ कास्यसुम  
 दवैसनालाङ्ककवदयैवविनयता  
 न् सर्वपापपुष्पसर्प॥ॐ जां अक्षि  
 यश॥ॐ अक्षमयकुवनध्वन्या॥ॐ गिरीश  
 पुति॥ॐ जां॥ जपकोश॥ॐ सरुप्रमीध  
 हातजमनिकुलमहिर्नकेयूर  
 पाकीशसमीपामी॥ कवर्ववत्तविग्रह  
 सनालपावकीवेविरुक्तध्वकवकु  
 मा॥ अक्षगन्धादि॥ॐ तिमिदमकिंकुश

गतानागकम्पूजा॥ॐ जांसकवाला



तत्कलिलार्चनीयासाधयावपूजा॥  
 ॐ नमोयामि॥ ॐ स्वस्ति॥ ॐ द  
 वस्वत्वा॥ आध्यामादिअष्टयष्टिकास  
 न॥ ॐ वृषोत्तायश॥ ॥ आवाहनी॥ ॐ  
 आवाहयामिदवंगसर्वकिल्बिषना



[illegible]

जय भगवन् ॥ ॐ वन्द्य विष्णु भगवन् भूषण  
 यन धर्म काटि पूरुष नृ कार्त्तिक पादो  
 मूल मृग चन्द्र व मेरु यधुर्त वा नृ चन्द  
 ल लोठ १ द व नाना म नील ४ य द मृग  
 कमल पूजित नित्य नित्य सैमान्मय क  
 नार्थ शिखर वन नमिर्त पावनी मर्म क  
 मोग अगम आदि ॥ ॐ तिमूर्ति कृष्ण  
 तमा विष्णु मरु  
 न्नासा र्घया जय पूजा ॥ ओम् नाना दि पूर्व व  
 ता ॥ ओम् भव गे क स्या स्यादि ॥ ६ ॥ ॐ ग  
 मृता स्त्राय श ॥ ओम् वा रु नी ॥ ॐ नृ मुक्ति  
 रु ग व निष्ठा लोकान् नृ रु का व दौ  
 य रु हा गे गृहान् न द वा सु द र्शन मा मु  
 क ॥ ॐ न ॥ ॐ गे र व क ॥ ॐ नृ सै का गे  
 व द र्वा रु स ॥ ॐ नृ नृ भव व क ग द  
 न र्त्त व न मा लो वि रु धिर्त ॥ ता का स  
 न र्त्ति ता नित्य लक्ष्मी नाथ रु ग सु र्द  
 ॥ ॐ नृ द र्वा रु लो क म ॥ सर्व काम रु ल  
 स द ॥ ॥ ॐ ऊ ऊं ॥ ॐ ४ लक्ष्मी वा सु द  
 वा स्या न म ॥ २ ॥ ॐ स सु मी र्घा य नृ व  
 ॥ ॐ श्री शक्त लक्ष्मी ॥ ॥ ॐ विष्णु व न म ॥  
 ॐ लक्ष्मी ॥ ॐ नो वा य ना य श ॥ ॐ वि  
 षु व श ॥ ॐ वा मा य श ॥ ॐ द मा य न म ॥  
 ॐ वा सु द वा य श ॥ ॐ स क र्ष ण य श  
 ॐ पु य न्ना य श ॥ ॐ अग्नि नृ दाय न म ॥



ॐ कर्मदायक ॥ ॐ कर्मममनउत ॥  
 ॐ दधिमुवि ॥ ॐ नोवावीधन ॥  
 ॐ दधुकोदव ॥ ॐ विहोर्धकवीया ॥  
 ॐ दिवावाविष् ॥ ॐ पुतादिवुतवक ॥  
 ॐ विष्वाववाठम ॥ ॐ कीलियदोविच ॥  
 ॐ विष्वाकमासि ॥ ॐ तद्विपाशोवि ॥  
 ॐ तद्विष्वाकपवम ॥ ॐ श्रीश्वनलम्बी ॥  
 ॐ सुयस्सिगमलम्बी ॥ ॥ वीहिआदि ॥  
 ॐ मनोहतिपुति ॥ ॐ नैयुर्ववड ॥ ॥  
 ॐ यकागुविष्वा ॥ ॐ निर्ववयु ॥  
 कमलजावेक ॥ ॐ कावेक ॥ ॐ राधावेक ॥  
 हवसन्तवत्रविषसदुषावलाल ॥  
 गोविद्यावेक ॥ ॐ दयैमनिमयैक ॥  
 कृष्णजगदाभीर्ववकवसुनिविज ॥  
 निमिदविष्वा ॥ ॐ सदावकड ॥ ॥  
 ॐ निविष्वा ॥ ॐ लोचनविधि ॥

तताज्जुत्तामादि मास्यकृष्ण ॥  
 ॐ अश्वत्थानि ॥ ॐ अश्वत्थमास ॥  
 ॥ २० ॥ ततः सर्वकलसावनी ॥ ॥  
 ॐ अजिघकलम ॥ ॐ अममोग ॥  
 ॐ सितामितसविता ॥ ॐ यकेनय ॥  
 ॐ उपेकयगिरी ॥ ॐ ववृषाह ॥  
 आवाहनादि ॥ ॥ ततः सर्वकलसावनी ॥  
 ॐ नैयुर्ववड ॥ ॐ लोचनविधि ॥

मप

ॐ यदयकचविहो ॥ ॐ लयविहो ॥  
 ॐ दधिजात्रीप्रकावि ॥ ॐ दीर्घायस्वा ॥  
 ॐ याठरुलिनी ॥ ॐ श्रीश्वनलम्बी ॥  
 ॐ नमः ॥ ॐ यव ॥ ॐ निमगुनय ॥  
 ॥ ततागमयत्यादि ॥ ॐ गमनो ॥  
 ॥ गम ॥ ॐ अयैमेपुस्त्रि ॥ ॐ य ॥  
 ॥ गमस ॥ ॐ यवका ॥ ॐ सर्ववर्तिका ॥  
 कोमानी ॥ ॥ ततायकेवलियुजा ॥  
 ॐ नमो ग ॥ ॐ यव ॥ ॐ यातवदसे ॥  
 ॐ नमो ॥ ॐ यव ॥ ॐ यव ॥ ॐ यव ॥  
 ॐ नमो ॥ ॐ यव ॥ ॐ यव ॥ ॐ यव ॥  
 ॐ नमो ॥ ॐ यव ॥ ॐ यव ॥ ॐ यव ॥  
 ॐ नमो ॥ ॐ यव ॥ ॐ यव ॥ ॐ यव ॥

ततः सूर्यनागायसदामिवगृहल ॥  
 श्री ॥ ॐ यव ॥ ॐ यव ॥ ॐ यव ॥  
 ॐ अश्वत्थ ॥ ॐ यव ॥ ॐ यव ॥  
 नागायस ॥ ॐ नमः ॥ ॐ यव ॥ ॐ यव ॥  
 वा ॐ श्रीश्वनलम्बी ॥ ॐ यव ॥ ॐ यव ॥  
 ॐ यव ॥ ॐ यव ॥ ॐ यव ॥ ॐ यव ॥  
 सूर्यस्य ॥ ॐ यव ॥ ॐ यव ॥ ॐ यव ॥  
 ॥ कृष्ण ॥ ॐ श्रीश्वनलम्बी ॥ ॐ यव ॥  
 ॐ अश्वत्थ ॥ ॐ यव ॥ ॐ यव ॥ ॐ यव ॥  
 ॐ यव ॥ ॐ यव ॥ ॐ यव ॥ ॐ यव ॥



महायातक नासने ॥ उं हस्तिन  
 को ॥ उं यय ॥ यय ॥ यय ॥ यय ॥  
 ८ मसि ॥ उं अग्नि द व ता ॥ उं यो ॥ ८ म  
 निति ॥ ॥ उं ध्रुव सि ॥ ध्रुवा ॥ उं मज  
 सि ॥ दीय ॥ उं यो ॥ ८ रु नीमी ॥ रु व ॥  
 उं अनेय नने ॥ नेवय ॥ उं नो ॥ द ति  
 पु ति हा ॥ ॥ म धु ल ज य स्तो ॥  
 उं व लो य धी स क ल ती र्थ ज व द ॥ ॥  
 अ न ग न्धा दि ॥ वृ ति क ल म अ र्च ने ॥

तत ॥ य व व ति हा स न मा स्तो ॥ ॥  
 अथ य दार्थ सा ध ने क ल्या ॥ नि व म र्क  
 वी ज म लु स हि त ॥ वि हू म न वी ज म  
 कु व हि म र्क र्क ॥ द कि र्क क म र्क  
 ल ॥ पू ष्य रा ज ने ती य दि रु क द ना  
 दि प्रो क्ती यो ग ॥ अ य स्तो ली च र  
 स्तो ली ॥ व र्म मा र्क न उ प य म न स  
 मि ध द र्क ॥ उ द र व म म र्क म् जि  
 न म् र्क ॥ अ य ति ल त ल् अ यि व  
 लु जा य मा लो यो ग क र्क ॥ ॥  
 उं अ ॥ अ स्तो य रु ॥ उं द व स ल ॥  
 अ स्तो क र्क ॥ उं अ द द या य न म ॥  
 उं यो ग यो ग ति ॥ य यो ली र्क न ॥  
 उं अ ॥ अ स्तो य रु ॥ उं य वि रु क व

वृ को ॥ य वि रु क र्क न ॥ उं अ गि व स  
 स्तो हा ॥ उं वि रु व रा ट म सि ॥ य वि रु  
 व ल न म र्क पा र्क नि धा य ॥ उं अ गि व  
 स स्तो हा ॥ उं य रु क र्क ॥ उं न क ति ॥ ॥  
 प्रो क्ती यो ग पु न र्क र्क ॥ क र्क न म  
 मा र्क न ॥ अ य क र्क ॥ उं अ द द या  
 य र ॥ उं म म् उ र्क र्क ॥ यो क र्क वी  
 पु न र्क ॥ उं अ गि व स स्तो हा ॥ उं द व  
 म यो अ य ॥ य वी क र्क अ ली र्क न ॥  
 उं अ न ग य वी व द ॥ उं य यो र्क र्क ॥  
 उं द ग र्क य ॥ उं अ ॥ अ स्तो य रु ॥  
 उं द व य क र्क र्क ॥ अ गि व स य ॥  
 स व द य क र्क अ गि व स यो क र्क म यि य  
 क यो र्क र्क स्तो य य ॥  
 अ य स्तो ली च र्क र्क ली यि न र्क र्क ॥  
 उं अ ॥ अ स्तो य रु ॥ उं द व स ल ॥  
 अ य क र्क ॥ उं अ गि व स स्तो हा ॥ उं  
 पु र्क र्क ॥ उं न क र्क ॥ न पु न र्क र्क ॥  
 क र्क न म् र्क न म् र्क क र्क ॥ ॥  
 उं अ द द या य र ॥ उं म र्क न व यो र्क  
 ॥ अ य यो ग नि धा य ॥  
 तत य र्क सा ध ने ॥ उं अ ॥ अ स्तो य रु  
 उं म र्क र्क व धू त ल् र्क ॥ क र्क जि  
 न र्क नो नि धा य ॥ त स्तो य वि य वि















ॐ नमो देवस्य ॥ ३ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 तिलकं जलं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ क  
 किं ॥ ५ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ ६ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ ७ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ ८ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ ९ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ १० ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ ११ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ १२ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ १३ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ १४ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ १५ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ १६ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ १७ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ १८ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ १९ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ २० ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ २१ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ २२ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ २३ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ २४ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ २५ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ २६ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ २७ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ २८ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ २९ ॥ उरु व अयस्य वाम  
 ॥ ३० ॥ उरु व अयस्य वाम











नमः ४ यजे गवा हाममाउं ०० वावता ॥  
उं ०० दीवि सुवि ॥ उं मा नला कति ॥  
उं विवन्द वीनी ॥ उं अमये गृष्टि क  
नय स्वाहा ॥ ०० दमये गृष्टि कनय  
त्याग ४ ॥ ०० ति यजे गवा हामविधि ॥

नमो वदा कति ॥ उं मयदा य स्वाहा ॥  
०० दमय स्वाहा ॥ ०० दमय स्वाहा ॥  
उं पुष्टि य स्वाहा ॥ ०० दपुष्टि य  
उं अमये स्वाहा ॥ ०० दमये  
उं यीनव सुय स्वाहा ॥ ०० द  
उं वमय स्वाहा ॥ ०० दवमय  
उं मा माय स्वाहा ॥ ०० दमा माय स्वाहा  
उं पुजाय स्वाहा ॥ ०० दपुजाय  
उं कुन्दाय स्वाहा ॥ ०० दकुन्दाय ४ ॥  
उं लक्ष्मीय स्वाहा ॥ ०० दलक्ष्मीय  
उं वागीश्वर्य स्वाहा ॥ ०० दवागीश्वर्य  
उं दक्षय ४ स्वाहा ॥ ०० ददक्षय स्वाहा ॥  
उं गृष्टाय स्वाहा ॥ ०० दगृष्टाय स्वाहा ॥  
उं मधाय स्वाहा ॥ ०० दमधाय स्वाहा ॥  
उं पुष्टाय स्वाहा ॥ ०० दपुष्टाय स्वाहा ॥  
उं धामय स्वाहा ॥ ०० द  
उं मदमय स्वाहा ॥ ०० द  
उं अनमय स्वाहा ॥ ०० द

उं यश्वदाय स्वाहा ॥ ०० द  
उं वायव स्वाहा ॥ ०० दवायव  
उं अकविक्रय स्वाहा ॥ ०० द

उं सनव सुय स्वाहा ॥ ०० द  
उं गृष्टाय स्वाहा ॥ ०० द  
उं मधाय स्वाहा ॥ ०० द  
उं पुष्टाय स्वाहा ॥ ०० द  
उं धामय स्वाहा ॥ ०० द  
उं मदमय स्वाहा ॥ ०० द  
उं अनमय स्वाहा ॥ ०० द

उं सामवदाय स्वाहा ॥ ०० द  
उं दिव स्वाहा ॥ ०० द दिव स्वाहा ॥  
उं सूर्याय स्वाहा ॥ ०० द  
उं वक्रव सुय स्वाहा ॥ ०० द  
उं गृष्टाय स्वाहा ॥ ०० द  
उं मधाय स्वाहा ॥ ०० द  
उं पुष्टाय स्वाहा ॥ ०० द  
उं धामय स्वाहा ॥ ०० द  
उं मदमय स्वाहा ॥ ०० द  
उं अनमय स्वाहा ॥ ०० द

उं अश्वदाय स्वाहा ॥ ०० द  
उं दिव ४ स्वाहा ॥ ०० द दिव ४ स्वाहा ॥  
उं वलमय स्वाहा ॥ ०० द  
उं शक्रव सुय स्वाहा ॥ ०० द  
उं गृष्टाय स्वाहा ॥ ०० द  
उं मधाय स्वाहा ॥ ०० द  
उं पुष्टाय स्वाहा ॥ ०० द  
उं धामय स्वाहा ॥ ०० द  
उं मदमय स्वाहा ॥ ०० द



[illegible][illegible]



[illegible][illegible]



सर्वसाधक ॥ तस्य साधकानि च ॥  
गुरुस्य ॥ यतिगुरुकृपा ॥ श्रीहृदयगुण  
मस्कादिमन्त्राणि ॥ हां ॥ आयुः ॥  
नियतेकलोदीयगुणानि च ॥  
शिवगुरुस्य साधनसर्वकार्यस्य  
सिद्धिर्द ॥ यद्योवाय ॥ ॥ आवाय  
नगुहीत्याय ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥  
॥ श्रीहृदयगुरु ॥ गायत्रीदमभा  
जय ॥ १० ॥ क्रमेण कुरुते न ॥ ॥  
ॐ अग्नयवे गायत्रीदमभा  
कल्पसिद्धिर्द ॥ ॥ ततोवायदमभा  
॥ ॐ ह्रीं ह्रीं व ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ॥ द  
मयकेगुणम्या ॥ यथायथा न स्यात् ॥  
यवकुलाययदमभा ॥ कुरुते न ॥  
मेव ॥ तिलमाधवयथै ॥ ॐ कल्प  
मिलितं कुरुते ॥ ॥ ततस्मिन्नादमभा  
दायय ॥ दमभाकुरुते ॥ ॐ म ॥ यद  
त्यादि सर्वेति लाकुरुते ॥ ॐ न ॥ शर  
यो ॥ ॥  
ततः कलमयतिष्ठ ॥ अदमभा  
यय ॥ ॐ जां गीं नि क लो हा वा यसा  
हो ॥ ॐ जां व त व का यसा हो ॥ ॐ जां ग  
न धी यसा हो ॥ ॐ कुरुते ना यसा हो ॥



तथा दक्षिण द्वात्रिंशत् कलमः शुद्धिदया ॥  
ॐ ह्रीं विद्या कलौ दानो यस्तु ॥

अथ यन्त्रिम कलसा कृति दया ॥  
उज्ज्वल दृष्टि कला दया यस्या ह ॥



ॐ कं अं यं कं वृत्ता यं २ ॐ कं तां वृत्ता २  
 ॐ कं रं तां यं तां तां ॐ कं यं यं यं यं  
 ॐ कं वा यं यं यं यं ॐ कं सां यं यं यं २  
 ॐ कं वृत्ता यं यं तां ॐ कं स्ते यं यं यं २  
 ॐ कं कं यं यं यं ॐ कं नं यं यं यं २  
 ॐ कं नं यं यं यं ॐ कं विं यं यं यं २  
 ॐ कं गं यं यं यं ॐ कं श्री यं यं यं २  
 ॐ कं दं यं यं यं ॐ कं १ दं यं यं यं २  
 ॐ कं दं यं यं यं ॐ कं सिं यं यं यं २  
 ॐ कं गुं यं यं यं ॐ कं मं यं यं यं २  
 ॐ कं अं यं यं यं ॐ कं अं यं यं यं २  
 ॐ कं कं यं यं यं ॐ कं अं यं यं यं २  
 ॐ कं विं यं यं यं ॐ कं कं यं यं यं २  
 ॐ कं वा यं यं यं ॐ कं चं यं यं यं २  
 ॐ कं वृत्ता यं यं यं ॐ कं विं यं यं यं २  
 ॐ कं मिं यं यं यं ॐ कं कं यं यं यं २  
 ॐ कं मं यं यं यं ॐ कं यं यं यं यं २  
 ॐ अं यं यं यं यं यं यं यं यं ॥  
 ॐ कं कं यं यं यं ॐ कं यं यं यं यं  
 यं यं यं यं ॐ कं वं यं यं यं २ ॥  
 ॐ कं वा यं यं यं ॐ कं अं यं यं यं  
 यं यं यं यं ॐ कं मं यं यं यं  
 यं यं यं यं ॥ मं यं यं यं यं यं यं  
 यं ॥ १० ॥ ॐ ॐ मं यं यं यं यं यं यं ॥  
 पू ॥ यं यं यं यं यं यं यं यं ॥

[illegible]



ॐ जां ह्या सनाय स्वाहा ॥ महावाह  
तिमर्कं दी स्वाहा ॥ १० ॥ ॐ कृविद न  
जममगा ॥ वृत्ति उरु वदिके लस्य  
तिष्ठा

तमा आरग्यादिके लम रुति ॥ ॥  
ॐ जां मस्तिहा माय स्वाहा ॥  
ॐ वां वद काय स्वाहा ॥ ॐ जां रविन व  
काय स्वाहा ॥ ॐ जां कृगो य स्वाहा ॥  
ॐ जां कृमूदो रुधजाय स्वाहा ॥  
ॐ जां यमा काय २ ॥ ॐ जां मृधिवता  
दिस्वाय स्वाहा ॥ ॐ जां विपुना क  
कृगो लाय स्वाहा ॥ ॐ जां मृनय  
स्वाहा ॥ ॐ जां मृकिह स्वाय स्वाहा ॥  
ॐ जां मजा विपय स्वाहा ॥ ॐ जां  
माम सनाय स्वाहा ॥ महावाह  
तिमर्कं दी ॥ १० ॥ ॐ अग्निर्मृजादिवा  
वृत्ति अग्निदिके लम पुतिष्ठा ॥

तमाने मय कलम रुति काय ॥  
ॐ जां वृद्धिवा माय स्वाहा ॥ ॐ जां वृगव  
काय स्वाहा ॥ ॐ जां कृगो य स्वाहा ॥  
ॐ जां वा म न ध जाय स्वाहा ॥ ॐ जां  
यमा काय स्वाहा ॥ ॐ जां मृधिव  
ता व क उ छाय स्वाहा ॥ ॐ जां मृनि  
जिजा कृगो लाय स्वाहा ॥ ॐ कृम

अस्वाय स्वाहा ॥ ॐ जां रवम ह स्वाय २  
ॐ जां म क सा विपय स्वाहा ॥ ॐ जां  
यमा सनाय स्वाहा ॥ महावाहतिम  
र्कं न ॥ १० ॥ ॐ यमं दवी नेम तीति  
वृत्ति नेम यदिके लस्य पुतिष्ठा ॥

तमा वायवादि कलम रुति माय ॥  
ॐ जां सिद्धिवा माय स्वाहा ॥ ॐ जां वे क  
कृन व काय स्वाहा ॥ ॐ जां कृगो य २ ॥  
ॐ जां मृन ध जाय २ ॥ ॐ जां यमा काय २  
ॐ जां मृधिव तम गृजाय स्वाहा ॥  
ॐ जां म हा काल कृगो लाय स्वाहा ॥  
ॐ यं वायव स्वाहा ॥ ॐ जां धृज हा रु २  
ॐ जां पाथो धिवय स्वाहा ॥ ॐ जां  
रुविद्यो सनाय स्वाहा ॥ महावाह  
तिमर्कं दी ॥ १० ॥ ॐ तव वायव रु ॥  
वृत्ति वायव दिके लम पुतिष्ठा ॥

तमे मे न कलम रुति ॥ ॐ जां सा  
धे वा माय स्वाहा ॥ ॐ जां मय तिष्ठि  
गध जाय स्वाहा ॥ ॐ जां रवे ना कृव  
काय स्वाहा ॥ ॐ जां मृनि कृगो य २ ॥  
ॐ जां रवे न यमा काय स्वाहा ॥ ॐ जां  
मृधिव तम हा को लाय स्वाहा ॥



ॐ जां ली म न य क र वा ला य स्वा हा ॥  
ॐ रु णी म ना य स्वा हा ॥ ॐ जां वि म  
ल रु स्वा य स्वा हा ॥ ॐ जां ली का धि य  
न य स्वा हा ॥ ॐ जां वृ ष हा से ना य स्वा हा  
॥ म हा वा द नि म कृ द रु त्वा ॥ १० ॥  
ॐ त मी म न ऊ र ग त स्तु व य नि ॥ ५  
ॐ ति णी म न दि क ल मे य नि षा ॥

अथ ॥ भवा ना रु ति ॥ ॐ जां वृ थी वा ना  
य स्वा हा ॥ ॐ जां अ रु ता व धी य स्वा हा  
॥ ॐ जां वे ला म वृ का य २ ॥ ॐ जां प १०  
स्व १ स्वा हा ॥ ॐ जां वृ ष हा ॥ ॐ जां वि षू व स्वा हा ॥ ॐ जां मि वा य २ ॥  
ॐ जां कृ णा य स्वा हा ॥ ॐ जां धा रु ष जा य २  
ॐ जां प ना का य २ ॥ ॐ जां अ धि द व ना  
न ना य स्वा हा ॥ ॐ जां मु क उ धु क  
उ वा ला य स्वा हा ॥ ॐ जां अ न ना य  
स्वा हा ॥ ॐ जां व कृ ह ना य स्वा हा ॥  
ॐ जां पा ना ला धि य न य स्वा हा ॥ ॥  
ॐ जां कृ मी स ना य स्वा हा ॥ म हा वा  
द नि म कृ द ॥ १० ॥ ॐ जी धि य दा वि  
व क्र म ॥ ॐ स्त ॥ भ वा व क ल मे य नि षा

ॐ त त उ र्ध वा ना रु ति ॥ ॐ जां उ र्ध

वा ना य स्वा हा ॥ ॐ द दि ना व धी य स्वा २  
ॐ जां अ रु ता य २ ॥ ॐ जां प १० स्व २ स्वा २  
ॐ जां वृ ष हा ॥ ॐ जां वि षू व स्वा हा  
ॐ जां मि वा य स्वा हा ॥ ॐ जां कृ णा य स्वा हा ॥  
ॐ जां वि षू व स्वा हा ॥ ॐ जां प ना का य २  
ॐ अ धि द व ना यो द व ना य स्वा हा ॥ ॐ  
ॐ जां हा स्तु व क र वा ला य स्वा हा ॥  
ॐ जां वृ ष हा ॥ ॐ जां क म उ र्ध  
स्वा य स्वा हा ॥ ॐ जां स र्ग धि य न य २ ॥  
ॐ जां हं सा स ना य स्वा हा ॥ म हा वा द  
नि म कृ द ॥ १० ॥ ॐ वृ ष हा ॥  
ॐ ति उ र्ध क ल मे य नि षा ॥ ५ ॥

त ना वृ ष क ल म रु ति ॥ ॐ जां वा स्वा  
धि य न य वृ ष हा ॥ ॐ जां १० व  
धे जा य स्वा हा ॥ ॐ जां कृ णा य स्वा हा ॥  
ॐ जां व ना य स्वा हा ॥ ॐ जां प ल वा य २ ॥  
ॐ जां र म ना य २ ॥ ॐ जां इ वा य स्वा हा ॥  
ॐ जां स र्ग पा य २ ॥ ॐ जां प के रू णा य २ ॥  
ॐ जां प ना का य २ ॥ ॐ जां वा रु व २ ॥  
ॐ जां हं सा स्वा य २ ॥ ॐ ग धो प न य स्वा हा  
ॐ जां स र्ग स्वा य २ ॥ ॐ जां म हा ल स्वा २ ॥  
॥ म हा वा द नि न रु द ॥ १० ॥ ॐ अ  
वृ ष हा ॥ ॐ जां प ना का य स्वा हा ॥



॥ वृत्ति प्रकाश काल भवति का विधि ॥

अथ सुकलमांशुति ॥ ॐ कृष्णसु  
 र्णयस्य हा ॥ ॐ कांठमवर्णयस्य हा  
 ॐ कांठगुरुलसायस्य हा ॥ ॐ कांठपशा  
 मनायस्य हा ॥ महावाहतिमस्तु दी ॥  
 १० ॥ ॐ नमस्तु नूदमन्य व ॥ ॥  
 कृतिभूस्तु कलमांशुति ॥ ॥

नतानेअस्यस्येवृष्यागिनीकलम  
रुति॥ॐजीयानिनीस्वाहा॥ॐकांबस  
वस्थाहा॥ॐजीवकवर्धुयस्थाहा॥  
ॐजीकलीकपालरुक्तायस्थाहा॥  
ॐजीसिंहसनायस्थाहा॥महावाह  
तिमकुटी॥ॐ॥ॐअम्बुअम्बिकति॥  
ॐतियागिनीकलसंयुक्तिस्था॥

नमो वायव्यस्य दक्षिणैः कुरु कलमे  
 इति ॥ ॐ जां कुरु पात्ताय स्वाहा ॥ ॐ  
 जां कुरु वक्ष्ये स्वाहा ॥ ॐ जां स्वप्ना  
 नरुत्ताय स्वाहा ॥ ॐ जां संवासेनाय ॥  
 महाया इति सक्तुधी ॥ ॐ नमो वा  
 कुम्भेयति ॥ इति कुरु कलमेयति ॥

अथ वा यद्यस्य पूर्वगतकलमार्ग  
निकृष्टवयः॥ॐ जगदीश्वर्यसाहो  
ॐ जायन्तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥ॐ जगदीश्वर्यसाहो  
यसाहो॥ॐ जगदीश्वर्यसाहो॥  
महाव्याहृतिमस्तु॥ॐ गगदीश्वर्य  
स्तुति॥स्तुतिगगदीश्वर्यसाहो॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

न न ४ मी नि पूष्टि क ल म ह ति ॥ ॐ  
 ज मी नि का य स्वा हा ॥ ॐ ज मी नि व  
 र्ण य स्वा हा ॥ ॐ ज मी नि ल ह का य रा  
 ॐ ज मी नि त्रा य स्वा हा ॥ ॐ ज मी नि  
 का य स्वा हा ॥ ॐ ज मी नि व धु य रा  
 ॐ ज मी नि ह का य स्वा हा ॥ ॐ ज मी नि  
 ला स ना य स्वा हा ॥ म हा वा ह ति म  
 न्त्र १० ॥ ॐ शो मी नि ति ॥ ॐ नम  
 दं य ज म हा ॥ ॐ शो मी नि पूष्टि क ॥

अथ भववृक्षयाम् (अमीलम्) ॥  
ॐ जामिमे स्वाहा ॥ ॐ जामिमे स्वाहा ॥



ॐ कौंमक नो साय २॥ ॐ कौंल श्रु साय ॥  
ॐ कौं सि नु व पा ग ह साय सा हा ॥ ॐ कौं  
व क व लु य सा हा ॥ ॐ कौं क म साय २  
॥ महा वा द ति म कु द ॥ ७ ॥ ॐ श्री ग  
न ल श्री य ॥ ॐ श्री मा ल री ॥ ॐ गि ल श्री

न त ॥ मि व म कि क ल म रु ति ॥ ॐ कौं  
मि वा य सा हा ॥ ॐ कौं म य सा हा ॥ ॐ  
कौं जि म ल ह सा य सा हा ॥ ॐ कौं नी ल  
य व ह सा य सा हा ॥ ॐ कौं र य व लु य  
य सा हा ॥ ॐ कौं व क व लु य सा हा ॥  
ॐ वृ षो सा य सा हा ॥ ॐ कौं सि हा सा य सा  
हा ॥ महा वा द ति म कु द ॥ १० ॥ ॐ  
मि वा ना मा सि ॥ ॐ ति ॥ ॥ वि षु य  
ॐ कौं वा स द वा य सा हा ॥ ॐ कौं ल य  
सा हा ॥ ॐ कौं व क ह सा य सा हा ॥  
ॐ कौं वृ ष क ह सा य सा हा ॥ ॐ कौं म  
म व लु य सा हा ॥ ॐ कौं र य व लु य २  
ॐ कौं ग नू उ सा य २ ॥ ॐ कौं क र्मा साय २ ॥  
महा वा द ति म कु द ॥ १० ॥ ॐ स द सु  
मी य ॥ ॐ श्री य न ॥ ॐ ति मि व म कौ ॥

न ता ॥ म य लि न रु ति ॥ ॐ कौं म  
म य य वा य सा हा ॥ ॐ कौं जि म ल ह

ल ह सा य सा हा ॥ ॐ कौं वृ षो सा य २ ॥  
महा वा द ति म कु द ॥ ३ ॥ ॐ मि वा ना  
मा सि ति ॥ ॐ ति ॥ म य लि न रु ति य ॥

पृ थ दि य क ल म रु ति ॥ ॐ कौं अ दि  
यो य सा हा ॥ ॐ कौं र य व लु य सा हा ॥  
ॐ कौं अ मि य ल धि द व ता य सा हा ॥  
ॐ कौं व क व लु य सा हा ॥ ॐ कौं व क  
म म ह सा य सा हा ॥ ॐ कौं स का म  
स ना य सा हा ॥ महा वा द ति म कु द ॥  
१० ॥ ॐ कौं क र्मा ति ॥ ॐ ति अ दि य क

ना ग क र्मा रु ति ॥ ॐ कौं ना ग क र्मा य २  
ॐ कौं वा स द वा य २ ॥ ॐ कौं र य व लु य २  
ॐ कौं म क नो सा य सा हा ॥ महा वा द  
ति म कु द ॥ ३ ॥ ॐ न मी सु स य य ॥  
ॐ ति ना ग क र्मा रु ति य वि धि ॥

न ता मृ त य क ल म रु ति ॥ ॐ कौं  
वृ षो य सा हा ॥ ॐ कौं अ मृ ती य  
ना य सा हा ॥ ॐ कौं महा ल श्री म कि  
स हि ना य सा हा ॥ ॐ कौं जि म ल ह  
सा य सा हा ॥ ॐ कौं र य व लु य  
सा हा ॥ ॐ कौं वृ षो स ना य सा हा ॥



नमस्तुभ्यो लोकाति। उं जां भिवाय स्वाहा॥  
 उं जां गोमुखी सहिताय स्वाहा॥ उं जां  
 ग्वेन वधुय स्वाहा॥ उं जां वक्रवधुय २  
 उं जां विगृह्य रुक्माय २॥ उं जां नीलात्मवद  
 क्माय स्वाहा॥ उं जां वृषास्त्राय स्वाहा॥  
 उं जां सिंहहास्तः स्वाहा॥ उं जां मेहाद  
 वाय स्वाहा॥ उं जां मेहग्ववाय स्वाहा॥  
 उं जां मेकवाय २॥ उं जां वृषरुध्वजाय २  
 उं जां कीर्तिवागाय २॥ उं जां कामाक्षिनाय २  
 उं जां दधवध्वगाय २॥ उं जां नीलकंठाय २  
 उं जां ग्रीववाय २॥ उं जां पार्श्वनिधिया २  
 उं जां मूढाय स्वाहा॥ उं जां अश्वत्थादि २  
 उं जां वाउसवलेय २॥ उं जां माताय २॥  
 उं जां सिनय काय २॥ उं जां असीतय २॥

[illegible]



नमः श्री लक्ष्मी कृती ॥ ॐ कौमुदी साहा ॥  
 ॐ दय्यो हस्तो यो ॥ ॐ सिद्धि नो यो ॥  
 ॐ लक्ष्मी साहा ॥ ॐ मकरा संनो य साहा ॥  
 ॐ कर्मा संनो य साहा ॥ व्याहृति मकरा  
 ॥ ३ ॥ ॐ श्री यत्त न सं श्री ॥ ॐ श्री मा सं श्री  
 ॥ ॐ श्री सं श्री रूमी वायु निष्ठा ॥

नमः सर्वकलमभिरुति ॥ ॐ ज्ञानं सर्वक  
लमभिरुति ॥ ॐ ज्ञानं सर्वकलमभिरुति ॥  
ॐ ज्ञानं सर्वकलमभिरुति ॥ ॐ ज्ञानं सर्वकलमभिरुति ॥  
॥ वादतिमन्त्रधाम ॥ ॐ ज्ञानं सर्वकलमभिरुति ॥  
लमभिरुति ॥ ॐ ज्ञानं सर्वकलमभिरुति ॥

नमः सगुणशक्ति ॥ ॐ ज्ञां वस्त्राय स्वा २  
 ॐ ज्ञां वन्देताय स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां वीररात्राय २  
 ॐ ज्ञां वसुधाय स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां जगताय २  
 ॐ ज्ञां वृणुताय स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां वृषाय स्वाहा २  
 वाहति मे कुटी ॥ ॐ वाक्त्राय स्वाहा २  
 नमः ॥ वृत्ति सगुणशक्ति ॥ ॥

तसोगधपत्यादिआरुति॥ॐकाग  
धपतयस्योह॥ॐकावकवक्षुय  
ॐकांलेखरुकायस्योह॥ॐकांम  
भात्रायस्योह॥महावाहनि॥ॐ॥

[illegible]



याजातायसाहाउं वं वा म द वा य सा  
 उं यंत सु व वा य २॥ उं मं अ धा न य सा २  
 उं कं नी मी न य २॥ उं कं व वा न य सा हा  
 ॥ उं न म ४ ग क वा य य ॥ इति ॥  
 ॐ हृ द यो ॥ उं कं य व व सा हा ३ ॥  
 उं कं पी त व व य २॥ उं कं य रू क ह  
 ला य सा हा ॥ उं कं य मी त्रा य सा हा ॥  
 उं व ह सा त व अति ॥ इति ॥  
 सा य नो गो ॥ उं कं ना म वा जा य सा हा ॥  
 उं कं ल व व व २॥ उं कं या म रू क  
 य सा हा ॥ उं न मी सु स र्प य २॥ ॥  
 ॥ क त म क ॥ उं कं ह न म र सा हा ॥  
 उं कं व क व व य सा हा ॥ उं कं क  
 म व रू क सा य सा हा ॥ उं नी वा यो  
 वा न ॥ इति ॥ ॥ गृ ह ल मी ॥  
 उं की ल मी सा हा ॥ उं कं व क व व  
 य सा हा ॥ उं कं मि र्थे सा हा ॥ उं सि न  
 व य ग ह ला य २॥ उं श्री गृ ह ल मी ॥  
 ॥ न ना व हि द वा न म ॥ उं कं स र्व कृ त  
 पा ल य ४ सा हा ॥ उं कं स र्व कृ त य ४  
 सा हा ॥ उं कं स र्व वि म व य ४ सा हा ॥  
 उं यो यो दि मी सा हा ति ॥ म हा वा द  
 ति ॥ ॥ ॥ उं म ना रु ति य ति क ॥  
 शु कृ व व व २॥ इति कृ स प ति क ॥

न ना य ध म र वा रु ति रु द्र या ॥ १००  
 म हा वा द ति म न रु द्र वा ॥ उं अ र  
 यो ना स रु द्रानि ॥ इति स र्वा रु ति ॥

त ना द मी पा त न दाय य ॥  
 अ धा न न व य धा क म ४ ॥

य ह म ध य सा रु व रू मी न वा सा न  
 म ध ले ॥ म ध पा ली का व वि ता न वा  
 म ल रु व य य मा ला दि रि व अ रि  
 या ॥ स रि को स न ॥ रु द यी १० नि मी  
 य ॥ य मी मा रि म र्थ न द व ना का य  
 य ॥ अ रू को र म अ रू दि मि क ले र  
 रु द य य ॥ द व सा य ता म रा ले  
 र य र्थ नि ध य ॥ वा क र म रू न  
 म रू ना दि नो सा र्थ पा त्र यू ज न ॥  
 ॥ य र्थ व लि य दा र्थ ॥ उं ग र्थी ना य  
 उं न मी व रू मी य ॥ उं वृ त वृ त यो वा  
 न ॥ उं वि न्य त रू वृ त ॥ उं अ ना मि  
 यू र्ति ॥ ॥ धू य दी य ज य रु द ४ ॥  
 ॥ व लि वि स रू न ॥ स ना न म धु य द कि  
 र्थ कृ म र व हि क्रि य ॥ ॥ न न ४ य  
 र्थ दि स मू क क ले म यू ज न ॥ अ य







वायव्यपक्षे गवा ॥ ॐ ऊँ कव वायव्य  
 ॐ ऊँ पक्षे गवायनमः ॥ ॐ पक्षि  
 छाव बुध ॥ ॐ ॥ उरुपक्षमृत्  
 ॐ ऊँ गिरासवध ॥ ॐ ऊँ पक्षमृ  
 तस्योनमः ॥ ॐ मृत्तवस्तुति ॥ ॐ ॥  
 लीमोनवीहि ॥ ॐ ऊँ ॥ अस्तुयद  
 ॐ ऊँ वीरुयनमः ॥ ॐ वीरुयधमः  
 ॥ ॐ ॥ म (ॐ) गतमाधवी रुमं विव  
 ॐ ॐ ऊँ गिरासवध ॥ ॐ ऊँ गिरासवध  
 स्योनमः ॥ ॐ याओधवी ॥ पूर्वजाता  
 वस्तुति युग्यवा ॥ मनेनूवेनुनाम  
 ह ॐ गतं धामानि सफव ॥ ॐ ऊँ  
 रुमं यनमः ॥ गिरासवध ॥ ॐ विव  
 ॐ ऊँ विवृत्तयनमः ॥ ॐ अमिष्टमि  
 त्तु ॥ ॐ सर्वमदक ॥ ॐ ऊँ सर्वमदक  
 स्योनमः ॥ ॐ अयाहिष्टमि ॥ ॐ तिष्ठ  
 कायुजा ॥

ततोदवनिर्मकन ॥ यजमाननः ॥  
 ॐ वक्राहन ॥ मिर्मकन ॥ ॐ अथवी  
 वदधि ॥ वलि ॥ अग्नि लाहन कासगु  
 धा ॥ सुकालिमिनगीय ॥ ॐ ऊँ हदय  
 यनमः ॥ ॐ ऊँ कोष्ठो कोष्ठो ॥ कोल ॥  
 ॐ ऊँ गिरासवध ॥ ॐ दीर्घायुस्त्वा ॥  
 तले ॥ सुष्टिति सहावकमदा ॥ ॥  
 तलोत्तमदिउदहनवृष्टुष्ट ॥ ॥

॥ ॐ तिष्ठ वसाङ्गाय विधि ॥

ततोदवताहान कावय ॥ वासतोह  
 रुतस्त्रीनीयउय ॥ यजमाननजलध  
 लधायोदद ॥ ॐ तलोयामि ॥ तिला  
 रुने ॥ ॐ दवीयाया ॥ अग्नि ॥ ॐ ऊँ ह  
 दमायनमः ॥ ॥ यवतायमृत्तिका  
 स्तानैकता ॥ ॐ अयादवामधूमनी ॥  
 वास्मिकमृत्तिका ॥ ॐ यतयन्तासवि ॥  
 वदुपदमृत्तिका ॥ ॐ अवरुतनिष्टुप ॥  
 नदीयायावावृत्तिका ॥ ॐ अग्निगुग्गुलिनी  
 (गग्गुग्गुलिनी) ॥ ॐ ॥ ॐ तलोयामि ॥ तिला  
 गजदन्ताधूममृत्तिका ॥ ॐ ॥ ॐ यजमानन  
 यधोक्तमृत्तिका ॥ ॐ ॥ ॐ योजनसध ॥  
 यजघावमृत्तिका ॥ ॐ ॥ ॐ यविवृष्टा ॥  
 कृगमूलमृत्तिका ॥ ॐ ॐ ॐ दमिष्टुवि  
 विष्टुदोवमृत्तिका ॥ ॐ ॐ ॐ नमः ॐ मृत्तिका  
 गिरासवमृत्तिका ॥ ॐ ॐ ॐ समिधनिष्टु  
 समिन्मूलमृत्तिका ॥ ॐ ॐ ॐ मग्नि  
 गीगति ॥ पूर्वकल (ग) नस्त्रायय ॥

ततोदवताहान कावय ॥ वासतोह  
 पित्त ॥ वतयस्त्रवतस्त्रीयय ॥ ॐ ॥  
 ॐ अग्निगुग्गुलिनी ॥ ॐ ॐ ॐ यवतायमृत्तिका ॥ ॐ ॐ ॐ  
 ॐ दमिष्टुवि ॥ ॐ ॐ ॐ नमः ॐ मृत्तिका ॥ ॐ ॐ ॐ



ॐ विष्णु नमः ॥ वृत्तयस्त्रयः ॥ ४ ॥  
ॐ भिवा नामासी ॥ जम्बुपल्लवेन ॥ ५ ॥  
ॐ यक्ष नयः ॥ सप्त स्वतीति ॥ अमृत  
कल ॥ मेनद वनास्त्रायय दिति ॥

ततो दक्षिणे ॥ ॐ कृमिवाये वषट् ॥  
ॐ आ कृष्ण नमः ॥ अर्कपल्लवः ॥ १ ॥  
ॐ वनदक्षिण ॥ वनदक्षिण ॥ २ ॥  
ॐ श्रीनामदाया ॥ अर्कपल्लवः ॥ ३ ॥  
ॐ वनदक्षिण ॥ वनदक्षिण ॥ ४ ॥  
ॐ मनसः काम ॥ अयोमा ॥ नन ॥ ५ ॥  
ॐ हि वक्ष्ये वक्ष्ये ॥ अकृष्णपल्लवः ॥ ६ ॥  
ॐ सयधुपा ॥ कृष्णपल्लवः ॥ ७ ॥  
ॐ हिने धी ॥ कृष्णपल्लवः ॥ ८ ॥  
ॐ सप्त स्वतीति ॥ कर्कशपल्लवः ॥ ९ ॥  
ॐ सप्त स्वतीति ॥ अर्कपल्लवः ॥ १० ॥  
ॐ मितासि ॥ दक्षिण कल ॥ नन ॥

ततो नमः ॥ ॐ कृष्णपल्लवः ॥ १ ॥  
ॐ अर्कपल्लवः ॥ अर्कपल्लवः ॥ २ ॥  
ॐ अर्कपल्लवः ॥ अर्कपल्लवः ॥ ३ ॥  
ॐ अर्कपल्लवः ॥ अर्कपल्लवः ॥ ४ ॥  
ॐ अर्कपल्लवः ॥ अर्कपल्लवः ॥ ५ ॥  
ॐ अर्कपल्लवः ॥ अर्कपल्लवः ॥ ६ ॥  
ॐ अर्कपल्लवः ॥ अर्कपल्लवः ॥ ७ ॥  
ॐ अर्कपल्लवः ॥ अर्कपल्लवः ॥ ८ ॥  
ॐ अर्कपल्लवः ॥ अर्कपल्लवः ॥ ९ ॥  
ॐ अर्कपल्लवः ॥ अर्कपल्लवः ॥ १० ॥

ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ ६ ॥  
ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ ७ ॥  
ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ ८ ॥  
ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ ९ ॥  
ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ १० ॥

ततो दक्षिणे ॥ ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ १ ॥  
ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ २ ॥  
ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ ३ ॥  
ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ ४ ॥  
ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ ५ ॥  
ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ ६ ॥  
ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ ७ ॥  
ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ ८ ॥  
ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ ९ ॥  
ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ १० ॥

ततो दक्षिणे ॥ ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ १ ॥  
ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ २ ॥  
ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ ३ ॥  
ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ ४ ॥  
ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ ५ ॥  
ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ ६ ॥  
ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ ७ ॥  
ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ ८ ॥  
ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ ९ ॥  
ॐ कर्मान्ति ॥ भक्तपुष्प ॥ १० ॥



ॐ वृक्षस्यारुम्भन॥ कृष्णदक॥  
ॐ दवस्यस्तस्यविड॥ वययकले  
॥ मजदवगस्तोपयत्॥

तकउरुव॥ ॐ जांरुदयायनमः॥  
ॐ वयवृष्टिर्वा॥ इत्यनस्ता॥ १॥  
ॐ दधिकोप्राञ्जका॥ दधिस्र॥ २॥  
ॐ घृणं घृणयावान॥ घृणने॥ ३॥  
ॐ मधुघाताजताय॥ मधुना॥ ४॥  
ॐ नमः मधुवाय॥ मर्कना॥ ५॥  
ॐ सनः सिन्धुवि॥ उरुवमूड॥  
दवतास्तानेकालयत्॥

तताः श्रीमान॥ ॐ जांमिबसस्वाहा॥  
ॐ यजुर्गमने॥ यवमस्तान॥ १॥  
ॐ दधिस्रवि॥ धान्यनस्तान॥ २॥  
ॐ गवतीधेनू॥ तिलनेस्ता॥ ३॥  
ॐ दवमृगोदवघा॥ मृगंतिल॥ ४॥  
ॐ विष्णुर्नकीवीर्या॥ वकधन्य॥ ५॥  
ॐ दिवावाविष्णुउरु॥ कालमाध॥ ६॥  
ॐ पुनद्विष्णुसुवत॥ माधन॥ ७॥  
ॐ विष्णुः कर्मो॥ कलावेन॥ ८॥  
ॐ तद्विष्णोविष॥ राजिका॥ ९॥  
ॐ श्रीमिषदोविष॥ सिद्धार्थन॥ १०॥  
ॐ तद्विष्णुः यवम॥ मूनेकन॥ ११॥  
ॐ विष्णोर्नोवेदमहि॥ कुरुकन॥ १२॥

ॐ जापोहिष्णामयोऽवस्तान॥ श्रीम  
नकले॥ मजदवगस्तानेकयात्॥

ततामः॥ ॐ जांमिबसस्वाहा॥  
ॐ वृक्षयस्तान॥ यवसु॥ १॥  
ॐ विष्णुवर्म॥ तिलसु॥ २॥  
ॐ नमः मधुवाय॥ धान्यसु॥ ३॥  
ॐ मानस्तोकेन॥ रुग्मेना॥ ४॥

ॐ यकनयः सवस्तान॥ तीर्थदक॥  
ॐ समुद्रयस्तानि॥ समुद्रोदक  
ॐ अग्निनाहवृत्ति॥ वयोसुख  
ॐ जापोऽस्मान्मोक्तव॥ कर्वावक  
ॐ सुस्तिनः॥ वयोसुख  
ॐ रुमकेनजउनाहवास्तु॥ वमन  
तास्तुता॥ वयसुक्तोसुहृद्विभिउ  
वयोदध॥ श्रीवोर्नख॥  
ॐ सितासितसवि॥ नदीसंगमादक॥  
ॐ नदीसु॥ योजिष्ठ॥ दहलख  
ॐ सममग॥ मयमून॥ गस्तोदक  
ॐ स्तोकोनामिद्वि॥ गस्तोदक॥  
ॐ हिवस्थगर्हसम॥ वस्तोदक  
ॐ हिवस्थव॥ हिवस्थोदक॥  
ॐ जापोहिष्णामयो॥ गस्तोदक  
ॐ गन्धवाद्वाद्॥ कयुवाजव॥  
ॐ इयदादिवमू॥ कौकोलजव॥  
ॐ वविष्णोर्विष्णु॥ कृष्णदक॥



ॐ दवस्य तासु विष्णु ॥ कृष्णोदक  
 ॐ विष्णु तथे कुरु ॥ ॐ कुरु  
 ॐ वसा ॥ ४ वविष्णु मसी ॥ मत्त धन  
 ॐ असेया तासु सुनि ॥ सरु सुधन ॥  
 ॐ दवस्य मूल मनु ॥ मत्त वा सरु सुवा  
 गदवा धन यो सो न ॥ ॐ तिस्तोन ॥

तत्तश्चि कव कुरु न ॥ ॐ दमा सुने रु  
 साध वन नादि हि दकि मी न ॥ ॥  
 अऊ नम ला का व क्रा य ॥ अऊ मय  
 दान ॥ ॐ यऊ न्नि व भ्रमे वृष व व नि  
 य वि तत्त ॥ ४ वा व न वा व ना दि वि ॥  
 वसु य वि धी व ही ॥ ॥ दवस्य मूल मनु  
 सुज यत्त लिखि ता ॥ रु द य वी ज ध ने ॥  
 वन न सि न्द्र य ह्यो य वी त मा ला य स्य  
 सुगु ही ॥ धू य दी पो ली को ला दि द द न  
 स ह् ॥ अ व ति भ ॐ म नो रु ति पु ति का ॥  
 ॥ अरु दौ द व उ क्ता य न ॥ ॐ उ हि रु  
 उ क्ता य न ॥ द वा य अ वा य धी य पा  
 गौ द क नो रु क ही ॥ ॐ द व स्य ता ॥ ग रु  
 वा य धी व लि ॥ ॐ अ धी वा य द धि ॥  
 य ऊ मा न न ला जा ॥ ॐ या ४ रु नि नी ॥  
 दे व रु न ध न्य रु म न ॥ मि वा वा य  
 न वी हि रु य न ॥ ॐ धी न्य म सि ति ॥  
 ॐ अरु य धी म ति ॥ सि न्द्र य यो जा ॥ ॥

अक्र (वे दी सस्ति वा व नै प ० त ॥ ॥  
 सु द रु ह्यो वा यो दि ॥ व द र्था य धी ॥  
 यो र्गा क ता ॥ न ग ले म्वा य म वा सु दी  
 मा म्वा सु दौ ल म्वा य रु म लु प्यो वा ज  
 म य ॥ ॐ ति द व यो जा वि धि ॥ ॥

तत्ता य रु म लु य स्य नै म्वा वा य ॥  
 निर्म रु नो दि अग्नि वा रु व का म गु  
 मी मी र्वा द ॥ रु ला रि ष का दि ला  
 जा न ॥ अ व ति द म नै ॥ अ वि दि न रु  
 ले धी व यो द कि धी य वि क्र म धी य रु  
 म लु य पूर्वा रु व रु द यी ॥ ० नि धी य ॥  
 ॐ रु दी वि सु वि ति ॥ म रु दौ स्ता व ता य  
 ॐ आ नो रु दौ क ता ॥ म रु दौ रु द यी  
 ॥ ० द व र्गा स्ता य य न ॥  
 तत्ता नि डा क ल म्वा य न ॥ अ से ना दि  
 पूर्व की ॥ ॐ नि डा क ल म्वा य न म ॥  
 ॐ वा य वी र्वा य यो ॥ नि डा क ल म्वा म हि  
 म र्वा स्ता य य न ॥ ॐ का धी का धी य ॥  
 व रु दौ द व ता नि डा क ल म्वा म्वा द य ॥  
 म रु म रु द व रु य ॥  
 तत्ता नो डी स न्धा नै क र्था अ अ रु ति ॥  
 ॐ रु मि व रु लो य स्ता रु ॥ ॐ न म ४ म रु  
 वा य व ॥ ॥ ॐ वि यो त ता य स्ता रु ॥  
 ॐ रु दी वि सु वि द क म ॥ २ ॥ ॐ अ अ रु  
 त ता य स्ता रु ॥ ॐ व रु य रु न ॥ ॥



नृतिदवनाहितलनसाधनी॥

ततोदवदनक्रिया॥ यजमानयजमा  
नीतिनलनलोचनयेवक्रमे॥ ॥  
दवसमीपयजमानगत्या॥ ॥  
ॐ जायोनिकल्पनायसाहा॥ ॐ क  
स्ययोनियमि॥ योनिकल्पना॥ १ ॥  
गिरुवसामिवाभययी॥ विष्णुवसो  
विष्णुगययी॥ ॐ जांमकु कल्पनायसा  
हा॥ ॐ वसन्तनसकुनादवावगेवस  
वृतास्तुगा॥ यथनवदकजसाहविवि  
कुवयोदधु॥ २ ॥ ॐ जांमकु वनवी  
र्यवदनायसाहा॥ ॐ वसोमकुवीज  
हातिथानियुतिमैदियगकोजला  
युनावृत्तुल्यजहातिजमना॥ अत  
नसत्यमिदियवियान॥ ॐ एकमभस  
ॐ तुल्यमिदियमिदययीमृतमधुसा  
हा॥ ३ ॥ ॐ जांमकु वसायदानायसाहा॥  
ॐ लयविषदा॥ ४ ॥ ॐ जांमकु वि  
ॐ नायसाहा॥ ॐ गकुअयोवधीनी  
॥ ५ ॥ ॐ जांमकु वसुवसुयि॥ ॥ ॐ सकि  
नवृत्ता॥ ६ ॥ ॐ कुमीमकोनयनाय  
साहा॥ ॐ जिवातामोसि॥ ॥ ॐ जा  
तकर्मवसाहा॥ ॐ यामेयसाहा  
॥ ७ ॥ ॐ वसुवसाहा॥ ॐ कुवदादि  
वति॥ दवावसनी॥ ८ ॥ ॐ जांमकु क

ल्यनायसाहा॥ ॐ तथकुदवहिना॥  
नगदद॥ ९ ॥ ॐ मूलनपुनमधुदा  
पय॥ १० ॥ ॐ कजासि॥ १० ॥ ॐ मूलनमो  
ठीकुदनायसाहा॥ ॐ यस्यनयदि  
यगकोयस्ययोनियवहिवरमेअमो  
नेकुवोयस्यतन्मात्रासमजीकमधुव  
हा॥ कुमेननाठिकुदनी॥ ११ ॥ गय  
वनकुदया॥ १२ ॥ ॐ अययजातायुम  
दासयत्यापुत्यजातानंदजातवद  
अधिनीवृहिसमेनीअरुउरुवस्यम  
समकुववीवउमी॥ ॥ १३ ॥ गयययपि  
यति॥ १४ ॥ विवा॥ वाकुवययाय॥  
मूलननिडाकलमोहति॥ १५ ॥ ॐ  
आजिअकलगमी॥ वृत्तामययीन॥  
निडाकलमस्यजलन॥ दवतामहिपि  
॥ १६ ॥ ॐ जांमकु वसायदानायसाहा॥  
॥ १७ ॥ गकोमकोकलमकोपनी॥ ॥ ॐ जां  
मकोकलमोयनम॥ १८ ॥ ॐ जांमकु व  
द॥ वननोदिहि॥ १९ ॥ ॐ वृजय॥ ॥  
ॐ उलिषवक्रधमोतति॥ दवउरुव  
नी॥ मकोकवमे॥ स्विकोसुनंदवनी  
सायय॥ ॥ २० ॥ नृतिजातकर्म॥ ॥  
वकीयाग॥ ॥ २१ ॥ वृत्तामययीन॥  
कोयक॥ ॥ २२ ॥ अरुनवसि॥ अजिन  
सालास॥ ॥ २३ ॥ मतसज्जन॥ ॥ २४ ॥ ॐ सति  
वाज्जिनति॥ अजिनवृत्तामययीन॥ ॥ २५ ॥



[illegible]

॥२॥ मूवद्यदीकाप्रदानाय २॥ ॐ वृत्त  
नदीका ॥ दीकाविय ॥ २२ ॥ ॐ जासमा  
वरुनाय २ ॥ ॐ श्रीकृष्ण ॥ २३ ॥ ॐ  
कांविवाहाय २ ॥ ॐ दवा नां पत्नी विरु  
मादवाम सोत्री य ॥ लव न स गुह्यं  
साम यीत य साहा ॥ मधुपर्क ४ ॥ ॥  
ॐ यमधुना मधुर्वा ॥ कन्यादान ॥ कू  
मलिलजलन ॥ ॐ अश्वत्थालाह कल्प  
॥ अश्वत्थ ॥ मित्ररुवसा ॥ ॐ श्रीसदा मि  
त्राय ॥ श्रीकन्यादान ॥ ननु स्वमहर्षि सुदद ॥  
॥ विष्णु रुलसा ॥ ॐ श्रीविष्णु मूर्त्यद  
वी कन्या रुलसा ॥ ॐ सुदद ॥ ॐ कादा  
रुलसा ॥ ॥ यीत विवाहा वरुणदान  
॥ ॐ वसा ॥ ४ य विरुममि ॥ सगी वस रुधी  
निसुत रुदकान दाय ॥ रुधी निष्ठा  
यल्लव न ॥ ॐ जाता वमि ॥ ॥ गत रुद  
कान कोत्वा यका ॥ ॐ सहसा मिस रुम  
॥ मो प्रधु उयाय ॥ ॐ श्रीगो रु मन्त्र मसा  
नमसा वस्त्रि गो रु व ॥ ॥ अरुति छिष्ट  
नन्यता ववाध स्वदूत नायत ४ ॥ ॥  
अनिनी न दाय ॥ ॐ नम ४ म रुवाय  
॥ ॥ गी वरु वनम ॥ ॐ उजाय न ननुद  
॥ ॥ हा सा ग व ॥ ॐ न व वा य व रु हस्य ॥  
ॐ जां पत्नी सगी याय २ ॥ ॐ विष्णु व



ॐ मणि॥ मित्रं श्व सा॥ ॐ मित्रा नाना  
 मित्रं ॐ श्रीसदा मित्रं य (मेत्री कन्या द  
 नं ॐ सुमहं सुपुद ॥ ॥ मित्रं श्व  
 सा॥ ॐ श्रीविष्णुमहं यदवी कन्या ॐ  
 यं सुपुद ॥ ॐ काया कसादा ॥  
 पीतविवाहं व सुपुदानं ॐ वसा ॥  
 विष्णुमसी॥ गंत वन्द का रुमी निरमा  
 व गंत वन्द का न दाय ॥ रुमी निरुप  
 लुखं ॥ ॐ जाता व मित्रं ॥ गंत वन्द का  
 कायायं ॥ ॐ सुहृदा गि सुहृ सुसा॥  
 मासं य उयाय ॥ ॐ आशा ह म सुमसा  
 नमो वलि वी र व म अहिकिष्ट ए न  
 न्यता व बाध सु ए त भा य त था ॥  
 अदिनि न दाय ॥ ॐ नम ॥ ग म् वाय  
 ॥ स वा व द व न त ॥ ॐ पुजा प म न त ॥  
 हा सो न ग व ॥ ॐ जां प ती स या अ य  
 सा हा ॥ ॐ विष्णु व ना ठ म सि ॥  
 मित्रं श्व सा॥ ॐ मित्रा नामा सि ॥  
 ला का सह पूरु ॥ ॐ अग्ने प ती विरु  
 व द का नाम स कि र्प ॥ लुका व ॐ साम  
 पीत य सा हा ॥ ॥ गंत वं दा व न सुय  
 ॥ काय रं दि आ गृ हा य क व धा दि रु  
 व न थ ॥ काय दि य द का काय क ॥  
 सह ॥ ॐ या ॥ रु लि नि ॥ आ व ति ॥

ॐ मणि॥ मित्रं श्व सा॥ ॐ मित्रा नाना  
 ॐ मना ह ति पु ति हा ॥ ॐ नि वि वा ह  
 ॥ २४ ॥ ॥ ॐ ४ मा ह पि ल वि स  
 ऊं ना य सा हा ॥ ॐ मा ग व द गी ॥ २५ ॥  
 ॐ जां व रु (थे सा हा ॥ ॐ वा न व कं य जा म ॥  
 सि नू व या ना २४ ॥ ॐ जां य नि हा य २ ॥  
 ॐ मना ह ति ॥ यथा द व स म ल म रु  
 धा रु ति ॥ यथा ॥ यथा द का न नू प व द  
 न ॥ ॐ नि द व द म कि या वि धि ॥

ता वा य म् ला वा य ग ला ॥ अ य पा  
 उ म म नि न ॥ न्या स व उ (म न् मी ध य  
 ॐ सुं ४ मि त त ला य न म ॥ मि द ला  
 धि प त य स दा मि वा य २ ॥ ॐ मि वा ना  
 मा सि ॥ १ ॥ ॐ जां स ४ वि द्या त ला य २ ॥  
 वि द्या त ला धि प त य वि षू व २ ॥ ॐ ॐ  
 द वि षू वि ॥ २ ॥ ॐ जां स ४ आ स त ला  
 य न म ४ ॥ आ स त ला धि प त य व रु ६  
 (म २ ॥ ॐ व रु य हा नी ॥ ३ ॥ मि व रु दि  
 ना सि ॥ ॐ नि ति त त ला स (मी ध न ॥

त त ४ य के रु त (मी ध नी ॥ ॐ जां स ४  
 पृ थि वी म रु य न म ४ ॥ पृ थि वी म रु  
 धि प त य वा मा य २ ॥ आ य न ॥ १ ॥  
 ॐ ३ आ य म रु य २ ॥ आ य म रु ला धि



पतय अष्टाय ॥ जानूयो ॥ २ ॥ उं २  
 नऊमू रूय ॥ नऊमू रूय विपतय  
 कयाये ॥ नारा ॥ ३ ॥ उं २ वायूमू रू  
 य ॥ वायूमू रू विपतय हानाये ॥  
 हृदय ॥ ४ ॥ उं २ रवमू रू य ॥ रवमू रू  
 विपतय रू कयाये ॥ ललाट ॥ ५ ॥  
 सुखि सि सि हान कर्म ॥ मि वमत  
 उं जां ॥ ६ ॥ नू ति य च ॥ न त्व न्या स ॥

नारा रू रू कादि ॥ अधनी ॥ उं जां रू ८ रू  
 हा ॥ लि ॥ १ ॥ उं जां उ व ८ रू हा ॥  
 नारा ॥ २ ॥ उं जां स ८ रू हा ॥ हृदि ॥ ३  
 ॥ उं जां म ८ रू हा ॥ क ॥ ४ ॥ उं जां  
 जन ८ रू हा ॥ अ म ॥ ५ ॥ उं जां त य  
 ८ रू हा ॥ मि व सि ॥ ६ ॥ उं जां स रू रू  
 हा ॥ उ क व ॥ ७ ॥ वि मू म न स ८ रू  
 ॥ नू ति रू रू कादि ॥ अधनी ॥ ॥

नारा मू ल ष उ म न्या स ॥ ८ ॥ उं ८ म हा  
 पा ॥ प ना मू य रू ॥ क र ॥ अधनी ॥  
 उं जां स रू रू न हृदयाय नमः ॥ उं जां  
 उ क मि व स रू हा ॥ उं ८ कालि न्ये मि  
 रू य रू व ॥ उं ८ यि म न क मि न्ये क  
 व य रू ॥ उं ८ ओ ति रू यो त्म न न  
 ग्या य वी व ॥ उं ८ म हा पा मू य ना

काय रू ॥ नू ति ष उ म न्या स ॥  
 अथ य च ॥ व क न्या स ॥ ॥ उं जां का  
 न्नी म नो य नमः ॥ उं ८ उं जां य त  
 रू य य रू व क याय नमः ॥ उं जां व अ यो  
 नाय द कि म व क याय ॥ उं जां व द व  
 य उ रू व व क याय ॥ उं जां ल स यी जान  
 य मि म व क याय ॥ नू ति य च ॥ व क न्या स

वि मू य ति का श व सा ॥ उं जां स य म य  
 व स रू यो य हृदयाय नमः ॥ उं जां स  
 म हा व व य ना क मा य मि व स रू हा ॥ उं  
 र न मो ना यो य म म कि सि सि य द यि  
 न मि रू यो व व ॥ उं २ वि मू रू अ उ ला  
 मि रू त स म या य दि ष ना मि न क व  
 य रू ॥ उं २ रू रू रू रू की य मा रू न्य का  
 व रू स ना य न ग यो य वी व ॥ उं जां स  
 ८ रू न दी काय अ रू य रू ॥ नू ति अ  
 न न्या स ॥ ॥ व क न्या स ॥ उं ८ व क  
 काय रू व क याय नमः ॥ उं ८ को ने व सि  
 हाय द कि म व क याय नमः ॥ उं ८ क पि लो  
 य य मि म व क याय ॥ उं ८ व ना रू य उ रू  
 व व क याय ॥ उं ८ कं टं यं म व न न या य ॥  
 म ॥ नू ति व क न्या स ॥

नतु त त्वा दि न्या स ॥ उं जां अ त्म त्म  
 य नमः ॥ अ त्म त्म वि प त य व क ॥



[illegible]

ॐ ह्रीं शिव न त्वा य २॥ शिव न त्वा धि प न  
 य नू ज य २॥ ॐ शं ग नू ड गि वा ॥ ॐ श्री मू  
 र्क य २॥ श्री मूर्त्त्या धि प न य स र्वी य २॥  
 ॐ श्री सै खा ना ॥ २ ॥ ॐ व क्रि मूर्क य २॥  
 व क्रि मूर्त्त्या धि प न य प शु प न य २॥ ॐ स  
 ता त्वा स र्वी ना ॥ ३ ॥ ॐ य ज मा न मूर्क  
 य २॥ य ज मा न त्वा धि प न य उ ग्र य २॥  
 ॐ वृ न त्वा दि त्वा ॥ ४ ॥ ॐ मूर्क मूर्क य २  
 ॥ वृ क मूर्त्त्या धि प न य नू ज य २॥ ॐ न मी  
 मा नी ॥ ५ ॥ ॐ ज ल मूर्क य २॥ ज ल मूर्त्त्या  
 धि प न य रु वा य २॥ ॐ श्री मि न रु त्वा  
 वा ॥ ६ ॥ ॐ वा य मूर्क य २॥ वा य मूर्त्त्या  
 धि प न य ह्री मा नी य २॥ ॐ क व वा य ॥  
 ७ ॥ ॐ ॐ नू मूर्क य २॥ ॐ नू मूर्त्त्या धि प  
 न य म रु द वा य २॥ ॐ न मी वा त्वा य व ॥  
 ८ ॥ ॐ र व मूर्क य २॥ र व मूर्त्त्या धि प न य  
 सी मा य २॥ ॐ न मी सु नी ल ग्री वा य ॥  
 ९ ॥ ग्री वा दि ल ला टा न्क वि न्द स ॥  
 थ र्त्त गु लि या व द मा ल थ श क न या ॥  
 थ मा ल श ॥ ॐ शि वि न त्वा दि ॥ ॥  
 ॐ व क्रो छ मूर्क य न म ॥ व क्रो छ मूर्त्त्या  
 धि प न य प व व क्रो छ ॥ १० ॥ ॐ व क्रो छ म  
 ॥ ॐ शि प श्च वि न शि न त्वा रु द ॥ ॥



[illegible]

पाय ॐ ० का नाधिदवर्ग ॥ ॐ वृक्ष  
 या य २ ॥ १५ ॥ ॐ घ्रा नत्वा धिपाय  
 ॐ न का नाधिदवर्ग ॥ ॐ सुदर्म नाय २ ॥  
 १६ ॥ ॐ वा क ता धिपाय ॐ क का नाधि  
 दवर्ग ॥ ॐ ग दा ये २ ॥ १७ ॥ ॐ पा वि  
 न ता धिपाय ॐ म का नाधिदवर्ग ॥  
 ॐ पा च ऊ न्या य २ ॥ १८ ॥ ॐ पा द न ता  
 धिपाय ॐ ऊ का नाधिदवर्ग ॥ ॐ मी मी  
 ये २ ॥ १९ ॥ ॐ वा य न ता धिपाय ॐ ऋ  
 का नाधिदवर्ग ॥ ॐ ऋ ऋ दि स्वा २ ॥ २०  
 ॥ ॐ उ य सु न ता धिपाय ॐ व का नाधि  
 दवर्ग ॥ ॐ र व मा य २ ॥ २० ॥ ॐ आ का म  
 न ता धिपाय ॐ उ का नाधिदवर्ग ॥ ॐ श्री  
 न म ४ ॥ २१ ॥ ॐ वा य न ता धिपाय ॐ घ  
 का नाधिदवर्ग ॥ ॐ य ष २ ॥ २२ ॥ ॐ न ऊ  
 न ता धिपाय ॐ ग का नाधिदवर्ग ॥ ॐ व न  
 मा ला ये २ ॥ २३ ॥ ॐ आ का म न ता धिपा  
 य ॐ र व का नाधिदवर्ग ॥ ॐ श्री व ङ्ग य २ ॥  
 २४ ॥ ॐ वृ धि वि न ता धिपाय ॐ क का ना  
 धिदवर्ग ॥ ॐ को लु का य न म ४ ॥ २५ ॥  
 नू ति य क र्ति म ति न त्व ना स न सा ध न ग

तु नः षष्ठिं भक्ति न लघु उ म न्या सः ॥  
 उं जीं सः षष्ठिं कं रं वं गं घं दं आं पृं धिं वा  
 पं न जीं शं कां भं स नं जूं रं छं रं धिं न मः



॥ १ ॥ ॐ ३ वं ज ह्रीं म द स्य म नू य व स  
ग म्म ल म न ग र्ज्ज नो र्था ॥ २ ॥ ॐ ३  
ॐ ६ ॐ ३ ल व व म्म मी स रू धी व म द  
म क्का ल म म म म्मा र्था ॥ ३ ॥ ॐ ३ म  
गं ॐ ३ ल व व म्म मी स रू धी व म द  
ग्रा म्म ल म न ग र्ज्ज नो र्था ॥ ४ ॥  
ॐ ३ ॐ ३ ल व व म्म मी स रू धी व म द  
ल म न क नि षि क्का र्था ॥ ५ ॥ ॐ ३ ॐ ३  
व ल वं मं वं स हं क ॐ ४ व व ना दा ना  
आ न न्द आ ल म न वि श्व मा गी रू न म्म  
ला य रु द् ॥ ६ ॥ ॐ ३ ॐ ३ ल व व म्म मी स रू धी व म द ॥

ॐ ह्रीं क्लीं त्र्यम्बक नमः ॥ १ ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥ ॐ श्री कोटि नारायणाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

यश॥२॥ॐ मन तत्वा यश॥३॥ॐ बुद्धि  
 तत्वा यश॥४॥ॐ अहं काल तत्वा यश॥  
 ॥५॥ॐ अहं काल तत्वा यश॥६॥॥ नारा  
 दि हृदयार्क॥॥ॐ अहं काल तत्वा य  
 श॥७॥ॐ अहं काल तत्वा यश॥८॥ॐ नीति क  
 त्वा यश॥९॥ॐ कौशल तत्वा यश॥१०॥  
 ॐ कलौ तत्वा यश॥११॥ॐ माया तत्वा यश॥  
 ॥१२॥॥ हृदयादि तालमूलार्क यश॥॥  
 ॥॥ॐ विद्या तत्वा यश॥ॐ सूक्ष्म विद्या  
 तत्वा यश॥ॐ अहं काल तत्वा यश॥३॥  
 ॐ सदा मित्र तत्वा यश॥४॥ॐ भक्ति त  
 त्वा यश॥५॥ॐ मित्र तत्वा यश॥६॥  
 तालमूलार्क तालार्क॥॥  
 ॐ तिष्ठति भक्ति तत्वा यश॥॥॥

अथ छद्ममतिकलन्यासः॥ॐ मणि  
 न्योनमः॥ मूढिपूषो॥ १॥ॐ मन्मदा  
 ये२॥ मूढिदक्षिणे॥ २॥ॐ ॐ ह्यये२॥  
 मूढिपश्चिम॥ ३॥ॐ मन्मदा२॥ मूढिवा  
 म॥ ४॥ॐ कालिन्ये२॥ मूढिमूर्ध्नि॥ ५॥  
 ॐ निवृत्त्यायेनमः॥ पूर्ववत्पूर्व॥ ६॥  
 ॐ पुनित्वाये२॥ दक्षिणेवकु॥ ७॥  
 ॐ विद्यायेनमः॥ पश्चिमवकु॥ ८॥  
 ॐ मन्त्रायेनमः॥ उत्तरवकु॥ ९॥  
 ॐ मनस्येनमः॥ मूढिमूर्ध्नि॥ १०॥



ॐ माहाय नमः ॥ हृदय ॥ ॥ ११ ॥  
 ॐ कर्माय नमः ॥ गीर्वाण ॥ ॥ १२ ॥  
 ॐ निष्ठाय नमः ॥ अगुण ॥ ॥ १३ ॥  
 ॐ व्याधाय नमः ॥ नाही ॥ ॥ १४ ॥  
 ॐ मृत्युय नमः ॥ ऊ० वे ॥ ॥ १५ ॥  
 ॐ श्रुवाय नमः ॥ पृष्ठ ॥ ॥ १६ ॥  
 ॐ हृष्याय नमः ॥ उवा ॥ ॥ १७ ॥  
 ॐ वज्राय नमः ॥ यु० ॥ ॥ १८ ॥  
 ॐ वक्राय नमः ॥ तिरम ॥ ॥ १९ ॥  
 ॐ वतिनय नमः ॥ दकि (वै) ॥ ॥ २० ॥  
 ॐ कामानय नमः ॥ वामावो ॥ ॥ २१ ॥  
 ॐ यालो नमः ॥ दकि नजामो ॥ ॥ २२ ॥  
 ॐ सयनय नमः ॥ वामजानो ॥ ॥ २३ ॥  
 ॐ क्रियाय नमः ॥ दकी गजैय ॥ ॥ २४ ॥  
 ॐ वृद्धाय नमः ॥ वामजैय ॥ ॥ २५ ॥  
 ॐ यथाय नमः ॥ दकि दसिक ॥ ॥ २६ ॥  
 ॐ गतिनय नमः ॥ वामसिक ॥ ॥ २७ ॥  
 ॐ ग्रामनय नमः ॥ कष्टावो ॥ ॥ २८ ॥  
 ॐ मोहनय नमः ॥ दकि दपो ॥ ॥ २९ ॥  
 ॐ जालिनय नमः ॥ वामपाय ॥ ॥ ३० ॥  
 ॐ सिद्धाय नमः ॥ दकि दपृष्ठ ॥ ॥ ३१ ॥  
 ॐ विद्याय नमः ॥ वामपृष्ठ ॥ ॥ ३२ ॥  
 ॐ युगय नमः ॥ दकि नहस ॥ ॥ ३३ ॥  
 ॐ अय नमः ॥ वामहस ॥ ॥ ३४ ॥  
 ॐ मधाय नमः ॥ मासाय नयो ॥ ॥ ३५ ॥  
 ॐ कानाय नमः ॥ गिरसि ॥ ॥ ३६ ॥

ॐ अजाय नमः ॥ दकि नजुज ॥ ॥ ३७ ॥  
 ॐ स्वधाय नमः ॥ वामजुज ॥ ॥ ३८ ॥  
 ॐ निजुज निभतिकलायास ॥ ॥

नमः ॥ कक्षादिन्यासनसाधन ॥  
 ॐ कांजु श्रीकेश मय (वै) दीर्घा ॥ ॥ १ ॥  
 ॐ कांजु ननं नमो विवज्जाय नमः ॥ ॥ २ ॥  
 ॐ कांजु मय मय मय लीलाय नमः ॥ ॥ ३ ॥  
 ॐ कांजु विमूर्ति मय लीलाय नमः ॥ ॥ ४ ॥  
 ॐ कांजु मय मय मय लीलाय नमः ॥ ॥ ५ ॥  
 ॐ कांजु मय मय मय लीलाय नमः ॥ ॥ ६ ॥  
 ॐ कांजु मय मय मय लीलाय नमः ॥ ॥ ७ ॥  
 ॐ कांजु मय मय मय लीलाय नमः ॥ ॥ ८ ॥  
 ॐ कांजु मय मय मय लीलाय नमः ॥ ॥ ९ ॥  
 ॐ कांजु मय मय मय लीलाय नमः ॥ ॥ १० ॥  
 ॐ कांजु मय मय मय लीलाय नमः ॥ ॥ ११ ॥  
 ॐ कांजु मय मय मय लीलाय नमः ॥ ॥ १२ ॥  
 ॐ कांजु मय मय मय लीलाय नमः ॥ ॥ १३ ॥  
 ॐ कांजु मय मय मय लीलाय नमः ॥ ॥ १४ ॥  
 ॐ कांजु मय मय मय लीलाय नमः ॥ ॥ १५ ॥  
 ॐ कांजु मय मय मय लीलाय नमः ॥ ॥ १६ ॥  
 ॐ कांजु मय मय मय लीलाय नमः ॥ ॥ १७ ॥  
 ॐ कांजु मय मय मय लीलाय नमः ॥ ॥ १८ ॥  
 ॐ कांजु मय मय मय लीलाय नमः ॥ ॥ १९ ॥  
 ॐ कांजु मय मय मय लीलाय नमः ॥ ॥ २० ॥  
 ॐ कांजु मय मय मय लीलाय नमः ॥ ॥ २१ ॥  
 ॐ कांजु मय मय मय लीलाय नमः ॥ ॥ २२ ॥











ॐ क्रीं सं २ पनाय ओं का प स्वात्मने नमः ॥ उपर  
 ॐ क्रीं हं २ पनाय ओं का मात्मने नमः ॥ उक्ते नमः  
 ॐ क्रीं घं २ पनाय वायात्मने नमः ॥ मुखे ॥  
 ॐ क्रीं गं २ पनाय तजात्मने नमः ॥ हृदि ॥  
 ॐ क्रीं वं २ पनाय मं लिवात्मने नमः ॥ शिखि ॥  
 ॐ क्रीं कं २ पनाय पृथिव्यात्मने नमः ॥ पादकले  
 ॐ क्रीं गं २ पनाय दत्तुलीकात्मने नमः ॥ हृदि  
 ॐ क्रीं सं २ पनाय सोममं तुलात्मने नमः ॥ पांशुमं कला  
 ॐ क्रीं वं २ पनाय वाक्त्रिमं तुलात्मने नमः ॥ कलाय  
 ॐ क्रीं हं २ पनाय सूर्यमं तुलात्मने नमः ॥ दगं कला  
 य नमः ॥ ७ नमः ॥ ८ य हृदि ॥ ॥  
 ॐ क्रीं घं २ पनाय पद्ममं तुलात्मने नमः ॥ वायुदवाय  
 ॐ क्रीं यं २ पनाय मं कर्षणमं तुलात्मने नमः ॥ नासाग्र  
 ॐ क्रीं वं २ पनाय विष्णुमं तुलात्मने नमः ॥ नायकं कला  
 ॐ क्रीं लं २ पनाय निवृत्तात्मने नमः ॥ निवृत्ताय  
 ॐ क्रीं कं २ पनाय सर्वमं तुलात्मने नमः ॥ नायकं कला  
 ॐ क्रीं क्रीं नमः ॥ पनाय कोटीत्मने नमः ॥ हृदि  
 य नमः ॥ योपकीं ॥ १० हृदि मं नासाग्र ॥

नमो वंदयन्ते नमो सः॥ दयसाधन ॥  
 ॐ ज्ञानं दयाय नमः॥ ॐ यज्ञाय नमः॥  
 ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ सूर्याय नमः॥  
 ॐ पूज्येयवर्षाय नमः॥ ॐ ज्ञानाय नमः॥  
 ॐ केशवराय नमः॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः॥  
 ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ विष्णवे नमः॥  
 ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ नमः॥  
 ॥ ॐ नमः॥

ततो जीवन्मासः ॥ सममलवलाभा ॥  
 ॐ स्वस्ति वाक् ॥ वदः ॥ हयं रुची  
 नागन्धदिना पाषाणकृत्यो ॥ मूला जा  
 यो यमास नरु ॥ सकली कृत्यः ॥ मास  
 ॥ पूतः ॥ पवनं मुक्तिं संपाद्य ॥ उद  
 मे क्रमेण जीवन्मासं दद्यात् ॥ यथा द  
 वस्तु धात्रा द्यावपृथिवी कारवत् ॥  
 वृत्तिके वतथा यैव कलमेध जसर्व  
 मः ॥ ॥ ॐ ऊं क्रो विष्णु महेश्वरं म  
 घयोगमयं कृन्दा जीवयति छादयता  
 मे क्रिजीवाया कर्षणे विनियोगः ॥  
 ॐ ऊं ऊं नो वीमिव योऽष्टाधमा गच्छ  
 रसाहा ॥ ॥ विष्णु रुद्रः ॥ ॐ ऊं ऊं  
 लक्ष्मी वा सुदवा यो धमा गच्छ रसा  
 हा ॥ ॥ यो धमा सुविधा मूर्तिपुति  
 माया निवदय ॥ मूर्ति ॥ नमः ॥ कर्तुः ॥  
 नामिका ॥ वक्तुः ॥ गन्तुः ॥ नाशः ॥ छाद्यः ॥  
 वस्तुन रक्षित्वा कावय ॥ ॥ देवस्य  
 मूलमर्कं मे मन्त्रा सहस्रम्वा काव  
 य ॥ मूर्तिर्निर्गतयेव ॥ वक्तुः ॥ ॐ यूयं  
 कवस्यति ॥ पुति छा मूर्तिर्वन्मासः ॥  
 मन्त्रनम्य कवी ॥ ॥ जीवलिहान ॥  
 ॐ यो धमा दहिरुथ जीव जीवदहि सु  
 तं धनी विद्या हान सर्वं दहि दहि मे



मिव संप्रति ॥ विष्णुया ॥ दहिमन्  
घृसाय मी ॥ ॐ ति जीव नो स विधि ॥

अथ विश्वकर्मा पूजनं ॥ स्वस्तिकासन  
यावका ॥ ॐ दमोसनं रुक्माय च  
न्दनसिन्दूरयस्त्राय वीतयेषा ॥ चन्दन  
नकवगलं स्वस्तिकं विलिख्य ॥ तत्र पू  
जनं ॥ ॐ नमो ह्युजयी नदरुज  
गधानीकजासन विश्वकर्मा गदामो  
यो ह्यनमोडाकसूत्ररु ॥ विश्वकर्मा  
हो ध्यानं पूर्णं नमो ॥ ॐ वां वी वं वं वं  
विश्वकर्मा नमो ॥ २ ॥ अथ ज  
लि ॥ अथ ॥ ॥ वद ॥ ॐ विश्वकर्मा  
विमनति ॥ अरुति पूरु ॥ धूपदीप  
जोषलाय ॥ ॐ विश्वकर्मानमस्तु स्य  
ते लाकसुखिकावका यथायुधकर्मा  
स्वस्तिक विश्वकर्मानमोस्तु गराजगन्ध  
दि ॥ सदकिमि अरुदि क्राय ॥ ॥  
अरुति ॥ १०८ ॥ ॐ स्त्रियो रवविश्व  
नं ॥ पूरु ॥ दया वार्य देवक  
यमीशक यजमान संप्रियस्य न ॥ ॥  
ॐ अशोदि वलाह ॥ वाक ॥ ॐ यति  
स्त्रिभुवि दधमं सुयति छारु वन्द्य  
सानिधायति पयनं यजमान सुवद

यज ॥ मन्त्रो सुद्विपदति ह्यं मन्त्रो सुव च  
उषाद ॥ मन्त्रो सुसर्वलाको नी मन्त्रो न  
ह्यति च वय ॥ यजमान स्य रु लोयं य  
सुपेयस वान्धवा ॥ १११ ॥ कुरु सर्व देवा ना  
दमे श्वर्यं नमोस्तु ॥ यावत्तु तय गसु  
था ध्वजसूत्र ववर्त्तिनी ॥ गावत्तु ते य  
सर्व स रुसा वि मिव लाकमदीयति ॥  
गह्वमीर्निजयी वाजा सुखिन ॥ सुव  
जास्तथा ॥ स ग्यक्रियावधर्मसू  
स्तिका वाग्यमेव च ॥ रुमले कय दा  
नने यर्थाकोटिगुदीधजा ॥ यावच्च  
नस्य सुस्य मदनीसकसा गवा ॥  
यावदाकोमगन्ता च तावत्सु सुस्ति  
लोरुव ॥ यावत्सुतिमालि नवेदीया  
वत्येवममोनवा ॥ तावद्युगसहस्रा  
दि कर्त्तुविष्णुपुत्र वप्र ॥ ॥ वद ॥  
ॐ स्त्रियो रवविश्व अरुत्तु ववाय  
वना पृथुर्त्तु वसुवदल्ल मे ॥ ११४ ॥ यवी  
षवा रु ॥ ११५ ॥ मि वीरुव ॥ ॥ ॐ स्त्रि  
वलाय स्त्रियो रव ॥ २ ॥ अत्रिलो  
रुवका ॥ चन्दनसिन्दूरसुगुलमी  
र्त्तुद ॥ रुतपूषा कनना जाय नि  
हा ॥ स्यसुवदने ॥ कलमो र्विक ॥  
स्त्रि वदकिमि अरुत्तु ॥ ॥  
ॐ ति स्त्रि वलाय विधि ॥ ॥



गंगादवासे नका वयं आउं नमो ग  
 वनवा सुदवाय नमि मया वामे  
 उं गंग (लोभाय नमः ॥ दक्ष ॥ उं गंगु  
 वद ॥ म (॥ उं विष्णु वं ॥ सा स  
 न ॥ उं आधा वम कि कमला स्त्राय  
 नमः ॥ ८ ॥ उं हू गव वम हा सुद  
 र्ग नाय हू २ रुठ स्त्रो हा ॥ ॥ वरु क  
 पूव क कू क नवा धाय म कृ ला ॥  
 नो समो वरु ॥ उं ४ नम दी क प्र  
 हा स्त्राय रुठ ॥ ॥ ह्यादिक ले वं उ न  
 नो मः ॥ ॥ उं हू वं कू धाय ह्यादि  
 वरु ना मः ॥ ॥ अने नार्घ पाठ पूजा  
 ॥ रुठ गुह्य ॥ उं वृ धी ये हू रुठ ॥  
 उं हू अस्त्रो नमः ॥ उं हू गज मः ॥  
 उं हू वा य व ॥ उं हू आ को भा य ॥  
 ॥ जी ॥ व न नादि (ध न मू डा ॥ ॥ अ  
 र्घ पाठ द क ना ला नी मि य हिल क  
 विष्णु य धू र्घ व ॥ उं जी मः ॥ नमा ना  
 नाय धाय आ नम न जी स्त्रो हा ॥ ॥  
 ॥ नमो दा व वृ ज नी ॥ ॥ उं को क  
 प्र पा ला य नमः ॥ ॥ उं आ ज यो य ॥  
 उं वा विज यो य ॥ म (॥ ॥ उं वं क  
 धाय ॥ उं वृ वं दा यो य ॥ उं गा क

गा व धाय ॥ उं द कि धा ना य नमः ॥  
 उं आ य स ना व धाय ॥ उं आ व धाय ॥  
 उं वा पु व धाय ॥ म (॥ ॥ उं व वा हा य ॥  
 उं य धि म हा ना य ॥ उं वा यो ना व धाय ॥  
 उं (॥ वा धाय ॥ उं वा वि धाय ॥ म (॥ ॥  
 उं क पि ला य ॥ ॥ उं उ रु व हा ना य ॥  
 उं ह म ना व धाय ॥ उं वा वि धाय ना य ॥  
 उं को क यो ना य ॥ म (॥ ॥ उं नृ सि हा  
 य नमः ॥ ॥ उं म्रिय ॥ उं गंगाय ॥  
 उं यां य म ना य ॥ उं (॥ म र्वा य ॥  
 उं वा प यो य ॥ उं गंग धाय ॥  
 ॥ गु रु प कि पू ज नी ॥ उं गंगु व व नमः ॥  
 उं प य व म गु व र्वा ॥ उं वा प व म कि  
 गु व र्वा ॥ उं स्त्र धायि रु र्वा ॥ ॥  
 पूर्व मा न्वा मि ॥ उं स र्वा  
 उं आ दि मि रु र्वा ॥ ॥ पूर्व मा न्  
 दि ॥ उं स र्वा य ॥ उं वं वा सु द वा य  
 ॥ उं स र्वा के र्वा धाय ॥ उं वा य य ना  
 य ॥ ॥ अ नृ नि नृ दा य ॥ ॥  
 व क पूजा ॥ उं हू वं कू धाय पूर्व व  
 का य ॥ उं को नृ सि हा य द कि न व  
 का य ॥ उं हू क पि ला य य धि म व का  
 य ॥ उं वा व वा हा य उ रु व व का य ॥  
 उं कं डी यं यं वं न र्वा य ॥ आ वा  
 रु ना दि ॥ ॥ व लि द ला ॥ उं वि धाय  
 रु ना य रु द न या य ध धी य ध



[illegible][illegible]











काभीरुसंलान्नी ॥ वगशीतिरुजा  
स्याचरंभीगीविश्वविवासिनी ॥ किंवि  
रुविनवर्षाणां नमामिकामेदामिनी ॥  
॥ कृति श्रीन ॥ ॥ उं जां जां जां जां श्री  
सदामिवाय ॥ २ ॥ अथ याजुर्हवि ॥  
उं जां अरु सुताय नमः ॥ उं जां जिमू  
लाय ॥ उं जां ववाय ॥ उं जां रुयाय ॥  
॥ ॥ नतादादमेदले ॥ उं जां अदि  
ह्याय ॥ उं जां हाक वाय नमः ॥  
उं जां सूर्याय नमः ॥ उं जां अकाय ॥  
उं जां नवन ॥ उं जां दिवाक लाय ॥  
उं जां सेवर्षाय ॥ उं जां सुवाय नमः ॥  
उं जां ववाय ॥ उं जां रुयाय नमः ॥  
उं जां मेव ॥ उं जां तिमिन लाय ॥  
॥ कृति दादमेदले ॥ ॥ वाउमदले ॥  
उं अं रुद व नमः ॥ उं अं वन्दाय ॥  
उं नं निम वतय ॥ उं नं नीतां मेव ॥  
उं उं तिथि गवाय ॥ उं उं मृगाकाय ॥  
उं मं वलु मय ॥ उं मं सीमाय नमः ॥  
उं उं विधव ॥ उं उं तावाधियतय ॥  
उं उं मगिन ॥ उं उं अकाय नमः ॥  
उं उं उदयतय ॥ उं उं अरु नमः ॥  
उं अं पूरु माय ॥ उं अं रुदिन गजाय ॥  
॥ कृति वाउमदले ॥ ॥ दमेदले ॥  
उं लं रुन्दाय ॥ उं अं अय नमः ॥  
उं मं यमाय ॥ उं अं नमः ॥

उं वं वरुधाय ॥ उं अं वाय नमः ॥  
उं सं कुरुवाय ॥ उं अं रुमाय नमः ॥  
उं अं अकाय नमः ॥ उं उं उं उं उं उं उं उं उं  
॥ कृति लोका लोका ॥ ॥  
उं जां रुत मृगाय ॥ उं जां ताय मय ॥  
उं जां वाय मृगाय ॥ उं जां कलियुगाय ॥  
उं जां अरु वाय ॥ उं जां यरुव वाय ॥  
उं जां सा मव वाय ॥ उं जां अथर्व वाय ॥  
उं जां कृति कादि न कुरु ॥ ॥  
उं जां विरुता दियो गाय ॥ ॥  
उं जां मेवादि दाद मगि नमः ॥ ॥  
उं निवर्षा यविन रु सदामिवाय  
भीमदि तनी वृद्ध पवा दया ॥ ॥  
उं जां जां रुं रुं श्री सदामिवाय नमः ॥ ॥  
॥ कृति नमः कुरु अरु ॥ ॥  
॥ वादिसा ॥ अमा नव वृज्य ॥ अरु व  
॥ उं अरु ववा ॥ अरु दि ॥ उं जां श्री  
सदामिवाय गृहा द साहा ॥ ॥ रुद मय  
रुल पृथा ता मूल नेव यथ दीयादि  
सर्व पविष्ट मे सु ॥ ॥ मूल नेजा  
य अरु पृथ गते ॥ ॥ ॥ मलु लला ॥  
उं नमः मिवाय ॥ अरु वा वरु मरु व  
कुरु वभीन जय वे पू मरु वायु दकि  
समान नरु रुक व यथ रुता गपदी  
वर्क वल मव रुता वरु रुता गि  
नी रगि व रुता वरु रुता मरु व म



ततो वृत्तौ घ्राय नरुनस्तौ धनधर्मदत्त  
 क॥ अर्घ्यादिस्तोत्रवर्षे नै॥ वृत्तिवित्त  
 त्वनसाधनं ॥ ३॥ आरुतिवृत्तिस्तोत्र  
 अथ ब्रह्मसंयुजा ॥ ४॥ दमोस्तनयादा  
 र्घ्यवर्षे हस्तार्घ्यवन्दनयस्तु यवीनपू  
 षाधूपदीप आरुतिदत्त ॥ भोक्ति ४ पृष्टि  
 क॥ ॥ राजादभीचार्य संजमानो रु  
 ति ॥ आरुतिमस्तुभीरुत्वा ॥ १० ॥  
 उं राजकमध्वरादी ॥ राजायास्तु आरु ॥  
 उं युजायस्तु ति ॥ दमोयास्तु आरुति ॥  
 उं वृत्तयस्तु नी ॥ राजायास्तु य ॥ ॥

[illegible]



ॐ रुची ज्ञाय ॥ वेक कना ॥ विष्णु ॥ कर्म ॥ ॥ ॥  
ॐ सहस्र रुक्षाय ॥ वासिष्ठाय ॥ ॐ सहस्र गीष्वा ॥ ॥  
ॐ रुक्षाय ॥ अर्क पत्र ॥ ॐ रुक्षाय ॥ ॥ ॥  
ॐ योग निद्राय ॥ इन्द्राय ॥ ॐ ता ॥ ॐ विदुष ॥  
॥ १४ ॥ ॐ ति अ न क व न या से मि ध ॥

ततो मणि ग र हो म य ॥ मि व धि हाम ॥  
ॐ आ मा य ॥ व न म न ॥ ॐ आ मि उ वि ल ॥  
ॐ पु मा दाय ॥ इन्द्राय ॥ ॐ पु जा य न ॥ ॥ ॥  
ॐ वि प्रि ग ज्ञाय ॥ वट ॥ ॐ आ व र्क वा ॥ ॥ ॥  
ॐ वि ना य का य ॥ वाय ॥ ॐ वि ग न य रु ॥ ॥ ॥  
ॐ रु व मा य ॥ ख दी व ॥ ॐ हि न ध व र्क ॥ ॥ ॥  
ॐ ल वी द मा य ॥ ॥

ॐ ति म न वि ना य का य मि न धि ॥  
प्र को द नी या ॥ अ ग रु सा गी व धि हाम ॥

ततो वि हि हाम ॥ य व धा ना दि ॥ ॐ ति  
वी हि हाम ॥ वा क्क्षो न स क स्य ॥  
ततो दि ग र्च न ॥ ॐ गं ग धे य न य ॥ ॥ ॥  
ॐ ग धे गी ला नि ॥ ॐ इन्द्र न य न म ॥  
ॐ अ र्क अ न्वि क ॥ ॐ व व द का य न म ॥  
ॐ अ र्क र्वा ता ॥ ॐ कं क र्वा या य ॥ ॥ ॥  
ॐ न म वि र्क म य ॥ ॐ आ व न क र्वा ला य  
न म ॥ ॐ अ र्थे ना न य वि र्वा ना नि ॥  
ॐ ति व लि प्ता वि धि दी ग र्च न ॥ ॥

॥ घृ त दी प वृ र्त्ति का हाम ॥ ॥ मि व म न  
रु व सा म नु स र्ति त मा व ॥ ॥ वि र्क म न  
स म मा ले ॥ म ले अ र्वा व र्क य ॥ ॥  
ॐ ओ ॥ म नि ति ॥ ॐ म र्वा र्क य ॥ ॥ ॥  
म हा वा ह ति म नु क र्वा रु ति ॥ १०५ ॥  
वा क्क्षो दि द कि लो दान ॥ वा र्च न ॥ ॥  
॥ ततो दि न पू र्वा ॥ अ र्वा व म नु क र्वा  
ॐ य र्क र्वा वि द वा य न ति ॥  
ॐ अ र्वा य स म नु क र्वा  
ॐ हि म स्य ला ज वा  
ततो अ र्वा स न य न न ग न्ध व क्क पु य  
व क्क व क्क ता म् लु ने व या दि स व र्क  
कि लो ज र्वा र्क ॥ ॐ म नु क र्वा  
रु वि ति ॥ ॥ म नु क र्वा र्वा र्वा ॥ ॥  
य र्क मा न न क र्वा र्वा र्वा ॥ ॥  
ॐ न मा अ र्वा य ॥ ॐ त जो र्वा का रु वि  
ॐ म र्वा दाय स या द ॥ स र्वा य ॥ ॥  
अ र्ग ग न्धा दि ॥ ॥ म नु क र्वा र्वा र्वा  
॥ द क अ र्वा अ र्वा य र्क मा न अ र्वा  
व र्क ॥ ॥ वा र्च न क र्वा न य र्क मा न  
अ र्वा र्क ॥ व न न सि न्द्र व पु य ॥ मी  
व र्क ॥ ॥ पु न न्या सा दि ॥ स र्वा रु  
ति ॥ स र्वा र्वा र्वा र्वा दि स्या न वि  
य ॥ ॐ स र्वा र्वा र्वा र्वा ॥ ॥ घृ त य  
ॐ घृ त सा य ॥ वी दि य ॐ स र्वा र्वा



साय श्रीरुल नकवसुभाय ॥ ॥  
॥ नूतिदिने वृक्षविधिः समाप्तः ॥

नकावागो श्रीरुदवाञ्चनी ॥ आगमा  
कविधिना ॥ क्रमाचार्य ॥ वलिदया  
७ ॥ नवधन नवकृत् नवपी ० मा  
लका पीलाकदय कं पूजायाय ॥  
मालका पूजाया हाथयेथाय ॥  
वृकनकाया व वलि विसर्जन ॥ ॥  
धाय रसकाय ॥ नूतिनामो कर्म ॥

नतः परं रुद्रिया नः स्नानादिनित्य  
कर्म कृत्वा ॥ नमस्तु दात्र यजमाने  
न सूर्यार्घ्य कृत्वा ॥ यथा राजनी ॥ ॥  
वाक्क एमदिपादयुक्ता ॥ ॥  
पूर्ववत्क्रमेण वलिदय दद ७ ॥ ॥  
यत्कर्म यत्पुविश्या ॥ पागु कविधिना  
यत्क वलिदय दाने ॥ पूर्ववद्विधिना  
माजावा न न पूर्वदि दिग्वावकल  
माञ्चनी ॥ ॥ यत्कृत्वा ददय कविधि  
र्थ ॥ ॥ ॐ कववाय क्ता ॥ ॐ ममा  
नित्यवर्मानाति ॥ नून्धनन पु क्ता ॥

ॐ कः मृत्वाय रुद्रा ॐ वृक्षादिष्ट ॥  
॥ अग्निपूजनी ॥ मिव मत्तममन्तु सहि  
न ॥ विसृ मत्तममन्तु सहि न ॥ ॥  
ॐ जामाये दायने म ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॥  
ॐ अग्निमीठनि ॥ ४ ॥ ॐ म ॥ ॥ ॥  
प्रिगो गो यसा मदवगाय गायत्री क  
न्दमनम ॥ ४ ॥ ॐ ॥ ॥ ॥  
यस्य गोधिय गये न गोवता स्त्राय नम  
॥ १० ॥ ॥ ॥ ॥  
ॐ वजाप नय ॥ ॥ ॐ सर्वे स्था दवस्था र  
ॐ वक्रये हनी ॥ ॥ ॥ ॥  
ॐ वदीगाय ॥ ॥ ॐ अग्नी ॥ ॥ ॐ अग्नी  
येन म ॥ ॐ ॥ ॥ ॥  
ॐ नमोस्तु नीलगी वाय ॥ मध्व कृत्वा पूजा ॥  
ॐ कः मृत्वाय रुद्रा ॐ कथा नमि ॥  
कृत्वा नमि रुद्रा ॥ मयथा रविधि  
मन्त्रेण पूर्ववादि दिक्कल माञ्चनी ॥  
॥ मिव मत्तममन्तु सहि न ॥ ॥ ॥  
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
ॐ समिधमिति ॥ अग्नि दग्धं समिधमा  
दाय ॥ ॐ ॥ ॥ ॥  
निरुदा ॥ ॥ ॥ ॥  
पूजयेद् रुद्रवाञ्चनी ॥ ॐ नि वक्ता ॥  
॥ ॥ ॥ ॥



लो कगादिपूवय ॥ कलगायेनकु  
 मदीसर्वआरुतिदया ॥ दमययेव  
 यम्वा ॥ ॥ साजापोरननदवाचन  
 ॥ दवाचनकुमे ॥ आरुतिदोयय ॥  
 ॥ सयारुतिदमापातन ॥ ॥ तगा  
 यथोकर्मवलस ॥ वतदनक ॥ ॥  
 ॥ सायवयनधनक ॥ वनियनि  
 तितवादिन ॥ यतिहा ॥ ॥  
 आरुतिप्रतिहा ॥ ॥ वाजाकभ  
 यजमानाय ॥ वतपातिलाकनि  
 रीकयाग ॥ वाकनपूजा ॥ रुकाय  
 वन्दनयहोयवीतपूष्य ॥ आभा  
 नधूपदीप ॥ अरुगन्नादि ॥ ॥  
 तगादेमवल्लिपुदादी ॥ ॥ आवा  
 र्यहवल्लजआरुतिदयाग ॥ ॥  
 ॐ अमीत्यागाति ॥ वृत्तिदमवल्लि ॥  
 मन्त्रिकाकृति ॥ १०८ ॥ ॐ ओमन्त्रिका  
 वृत्ति ॥ ॥ पृष्टिकाकृति ॥ १०८ ॥  
 ॐ अम्वकयजामहति ॥ ॥  
 तगात्रीहिहाम ॥ यवेधन्य ॥ लाजा  
 समिध ॥ पायस ॥ गुडादन ॥ दध्नाद  
 न ॥ जाम्बीर ॥ श्रीरुले ॥ किं व ॥ नालिक  
 लवदलीरुले ॥ ओषधी ॥ गुडया  
 दि ॥ पिहलो ॥ गिकदादि ॥ रुतपा ॥

नारुषज ॥ नृपकभ ॥ यप्रकभ ॥ सुम  
 र ॥ स्वगतिल ॥ नकतिल ॥ मगतपूष्य  
 पियसु ॥ गुगुन ॥ वन्दन ॥ ककुम ॥ क  
 न ॥ मूल ॥ रुले ॥ गावुल ॥ उत्पल ॥ क  
 न्य ॥ पकान ॥ वरुममगुटिका ॥ ककु  
 गुन ॥ ॐ क ॥ इवीकत ॥ इवमिश्र  
 हामय ॥ ॥ तगाभृष्टिप्रमानन  
 अरुवीहिहाम ॥ यवेधन्य ॥ तथा  
 मन्त्र ॥ कवी ॥ माषमव ॥ कुरुन  
 कावमाषय ॥ सिद्धार्थया ॥ व्रीहि  
 क ॥ ॥ यवेधन्य ॥ अरुव ॥ धन्य ॥ त  
 था ॥ लाजा ॥ तिल ॥ सर्वमव ॥ ॥ तगानि  
 यवेधन्य ॥ व ॥ रुन ॥ कानिक ॥ योष्टिक  
 ॥ वृत्तिव्रीहिहाम ॥ ॥ वाकन ॥ न  
 त ॥ कल्प ॥ ॥ तगादिमव ॥ ॥  
 वालिपुदो ॥ ॥ ॐ मंगलमय ॥ ॥  
 ॐ गद्येनीला ॥ ॐ अम्व ॥ अम्विक ॥  
 ॐ वृत्तिवृत्तपावान ॥ ॐ अमीनीनियु  
 क्रिविति ॥ ॐ उतापिवतवनि ॥ ॐ  
 अरुयेतानयो ॥ वृत्ति ॥ ॐ विष्टकय ॥  
 वृत्ति ॥ ॐ नमो ॥ वृत्ति ॥ यति ॥ ॐ  
 अमीत्यागा ॥ वृत्ति ॥ ॐ अम्व ॥ वावद ॥  
 ॐ प्रोथीदि ॥ मत्याहाति ॥ ॥



[illegible][illegible]



लुथः अथः अथः अथः अथः ॥ १३ ॥  
 ओ३भाकि वक्तुं विरुं भाकि पृ  
 धिवीभाकि राय३भाकि रायधय३  
 भाकि वदस्यतय३भाकि विरुं द  
 वा३भाकि वृक्तभाकि सर्वं लं भाकि  
 भाभाभाकि दधि३ ॥ १० ॥ दृगदृ  
 रुमा मिगस्यमा व कूषा सर्वादि रुमा  
 निसमीरुको मिगस्यो हं व कूषा स  
 वादि रुमानि समिक मिगस्य व कू  
 वा समिकामरु ॥ १६ ॥ दृगदृ  
 मा अक स दमिजी या स अक स द  
 मिजा स ॥ १७ ॥ नमस्तु व प्रभावि  
 र्ध नमस्तु अस्तु विष अर्चा स्तु स्तु  
 रु यन्तु रुतय३ पावको अस्तु रु  
 मिजा रु व ॥ २० ॥ नमस्तु अस्तु वि  
 यग नमस्तु स्तु नयित्तव नमस्तु  
 गव न्तु यत३ स्य३ समीरु ॥ २१ ॥  
 यगा यत३ समीरु स गगानो अस्तु  
 कू३ सन्त३ कू३ पुजा स्था रु यन्त३  
 यमू स्य३ ॥ २२ ॥ समिजि यान अय  
 अय रु य३ सन्तु इमिजि या रु स  
 सन्तु यो स्मा दधि यन्तु वयं दीप्ता  
 ॥ २३ ॥ नमस्तु रुद वरि तं वरु  
 रुकु मय वत यत्थ ममे वद३ म

तं जीवन्ममैव द० मतं लं गृह्यामम  
 न द० मतं पुत्रवानमैव द० मतं मदी  
 नां श्याममैव द० मतं त्वय्यमैव द०  
 मतं तां ॥ २४ ॥ ॐ नमो वाच ॥ ॥

[illegible]



[illegible]

दमो य स्वाहा ॥ ॐ स्वस्ति नमः ॥ ॐ  
 ॐ श्रीं निवसे स्वाहा ॥ ॐ यय ४ पृथि  
 वी ॥ ॐ इनिवाये स्वाहा ॥ ॐ विष्णु न  
 गढमसि ॥ ॐ कं कव सोय स्वाहा ॥ ॥  
 ॐ ऊनि दवना ॥ ॐ श्रीं नमोय स्वाहा  
 ॐ श्रीं ४ भानि ॥ ॐ निवसे ४ स्वस्ति नमः

[illegible][illegible][illegible][illegible][illegible]







त्रिक्रिष्णमि सुवस्वती रवेव जनक  
 जस्रिहिकिच वीक्ष्यो नाशायारि  
 विचक्षमि नुसुनवम यथीय जस्र  
 साहिविचक्षमि ॥ ६ ॥ इमदादिवम  
 मूचाने ॥ सिन ॥ सातामलादिव ॥  
 पूर्ववविगुलधोवा असाप ॥ ७ ॥ धनुम  
 नस ॥ १० ॥ उदय नमस्व ॥ यत्रिप  
 सानि उरुव ॥ दवन्दवना सयाम  
 गन्मक्षानि वरुम ॥ ११ ॥ श्रीश्रुत  
 लक्ष्मीधयन्ता वक्ष्यायायादस्य  
 नरुतानि नृयम ॥ सिनवाय ॥  
 क्षनिवाना ममयिषान ॥ सर्वला  
 कंम ॥ १२ ॥ नमो वक्र  
 नमस्तयय नम ॥ १३ ॥ यिथो नमो अ  
 वधीत्य ॥ नमो वाच नमो वाचस्य  
 तय नमो विष्णु वम रुक् कवामि ॥  
 १२ ॥ अविन्दस्य सोमस्य दवाना  
 मूतिरिचय ॥ अविन्द कप्रयमहि  
 अरिस्तोमय नन्य ॥ १४ ॥ यदवा  
 सादिवो वादम सुपृथिव्याम ॥ का  
 दम सु अयू किमीमहिनेका दम  
 सु ॥ नदवा सोय रुमिर्महषध ॥  
 १५ ॥ पुनस्तोदितो रूजावसव ॥

सुमिन्धर्मा पुनवक्रा ॥ सावसनीथय  
 रु ॥ १६ ॥ पुननतं तन्व वक्ष्यसे सत्या ॥  
 सल्लयजमानस्य कामा ॥ १७ ॥ आहु  
 मेवोक्त ॥ सावक्र वक्ष्यमीजयतामावा  
 कुवाज न्य ॥ १८ ॥ वक्ष्यमीति याधीमहा  
 व ॥ साजायतामी ॥ धनूर्वाचानश  
 नागु ॥ १९ ॥ सफि ॥ २० ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप  
 सासतय ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप  
 जायतामि ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप  
 वक्ष्यमीति ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप  
 यागकमान ॥ कल्पताम ॥ २१ ॥ पुथ  
 मादितीय ॥ द्वितीया ॥ त्रितीया ॥ चतुर्थी ॥  
 सत्यनसत्य ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप  
 ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप  
 यान्वाच ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप  
 यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप  
 मर्त्यय ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप  
 स्यात्ताजलायुना सोलपविषयामसि  
 ॥ २२ ॥ किदाहिनी ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप  
 ॥ २३ ॥ किदाहिनी ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप  
 ॥ २४ ॥ किदाहिनी ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप  
 ॥ २५ ॥ किदाहिनी ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप  
 ॥ २६ ॥ किदाहिनी ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप  
 ॥ २७ ॥ किदाहिनी ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप  
 ॥ २८ ॥ किदाहिनी ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप  
 ॥ २९ ॥ किदाहिनी ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप  
 ॥ ३० ॥ किदाहिनी ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप ॥ यत्रिप



पूजा मंत्र न हो म हो न ठ धि ग न ह न  
 हित गी व क म व ह न मो सु न ॥ ३  
 ॥ अवि क न हिन व धि न ना ला ग न म  
 म यो यो धा ॥ न ह क र द दा उ व न  
 ह्या म ति वि क उ ॥ ४ ॥ ग न व क नि  
 ध न यो नि ज य त व क न ज मो ॥ ४ ॥  
 क धि ल ज ठी स व र क य म नि य ल  
 क र व न ॥ ५ ॥ व र ह क र व मो क नि  
 म म य गी ध व क नि यो व दा दि ल क  
 य ति यो व क ज ध न मो ॥ ५ ॥ यो व  
 दा न य व य ति ता व जी व ल यो स ह  
 य न क न य का व धो मो ह मो नो न जी  
 व ति ॥ ६ ॥ य व मो म य को यो धो य जी  
 व ति स जी व ति ए क स र व धो ह क न  
 द र मो न ली वि य ल न ॥ ७ ॥ पृ थि वी  
 ल हि उ ध न न क क य ध द धु न  
 ॥ ८ ॥ ति हि म य ला ॥

गजा य म न व न्द न ग न्ध व क व सु ना  
 म ल न व यो दि स व ह द कि धा अ  
 नि द द न ॥ ह्या न र म गृ ही लो यो य  
 दा नी ॥ १ ॥ म लो धा म ल क ल म  
 लु धि ल व धा न वा दि द व ता ॥ २ ॥ यो  
 ना व र दा र व नु ॥ गु रू ग म आ म र  
 य ॥ ३ ॥ गु रू र व उ म य जा ॥ ४ ॥ सु खि न ॥

स नु ॥ ५ ॥ गु रू र व उ म य जा ॥ ६ ॥ अ म य  
 ज नान स म ग धो य वि वा वा धा मो य  
 वा म म ध म य ज न म न ल क्री म क  
 ति स नान न व दि न सु ॥ ७ ॥ दि प द य व न  
 द य ॥ ८ ॥ गु रू र व उ म य जा ॥ ९ ॥ सु खि न  
 स नु ॥ १० ॥ य रू न ॥ का व र धी र व उ ॥ ११ ॥  
 स र्व वि धि य वि य लु म सु ॥ १२ ॥ ति ह्या  
 न र व म म य धा ॥ म लु ल ज य ल ध  
 ॥ १३ ॥ न मो अ न य

द व क ल म दि ॥ १४ ॥ अ म य का नि वि  
 धि र व क र व र न यो व क र व र ॥ १५ ॥  
 स ॥ स र्व यो यो क वि र्ग म धि ज न  
 न मि र ग ल क र म कि ह रू ॥ १६ ॥ ज नो  
 ध र य न म लो क न क म वि क न  
 स र व स र ति म र व न व र धो य क ठ  
 दि ज नि वि लु गु रू म वि ध म र व र  
 ॥ १७ ॥ अ र व द यो यो यो य र व य  
 य द ॥ १८ ॥ स म व द यो य रू ल ए को धि वी  
 दि ती र म ग य ध व द न यो ह र व क  
 धो र ॥ १९ ॥ य वी य स ग र न य न म य  
 नि व क ग म र व ड ड वि क ॥ २० ॥ य  
 न म रू ति व य ति व द न य रू यी व  
 मो ह ॥ २१ ॥ २ ॥ व क रू क नि ह रू ति  
 य ध ग ति य न गी धि व यो धि म ज



लोडु अथय वज्राविवधयदगताजी  
 निवग्नप्रसिद्धो। गान्धर्वो लवडा  
 रुवतिरुवग्नोलीलिका २४ पुवाधव  
 दोमागासंगकाजयेयदानिग्नय्या  
 निवाता ॥ ३ ॥ यथय हं मर्मकादि  
 निविदिमिवासीलितोदवनीया क  
 छेवावलिमैके लेमयविगताम  
 छेलेलुलिलयो। तसर्वसुदवाअ  
 तिमनववदोमेकुसको। येनूपासुडा  
 मन्नादिहीनयजनयविविदिमि  
 दावाकमेकु ॥ ४ ॥ यकम्पारवव  
 लं वसनिधियुक्तिकापो इकोरुवव  
 लं यातालादियसिद्धिरुववमस  
 हितादियविनामनिधे। सिद्धिदि  
 योषधीनायवयवविमनैगाकूडंन  
 कुवादी वंनयस्येसादोलेरुवकु  
 रुवनामैयिदव२येमन४॥ ५ ॥  
 अशालो कपोलोसुखदिमिवसि  
 ता४सुखमंडासुयका आदिरा  
 दिगुहंमैवसगिहविमदाजनाद  
 वासुयका। अकायागसतिथीग  
 मरुनेवदूकै सुलिलमाहकाच  
 सिद्धि। योददोसिद्धवतिवसुम  
 नायलूयू। उरुलाकु ॥ ६ ॥

यावदीचीनननवहति कूसुमे  
 नदीयाकवीपुन्यमाया यवदो  
 काभमाअगगेनगधयेभरम्भ  
 पतिर्गो। धंम४। यावदुकापि  
 नाकीरुविविमलजलं वदसिद्धा  
 कवादी। तावत्ययुधयोलासुजन  
 पविदतावर्धनं योजलम् ॥ ७ ॥  
 यदवायकतागाग्रहगदीसक  
 लाहृगवक्रपिभावा यवषाय  
 वमासातिथिगदीसकलायवन  
 कृग्याग४। यलनीकधुवलाअ  
 कवठययसा वलुसुयीववडा  
 सुयीनालुनयोजलम् ॥ ८ ॥ व  
 कोविष्णुध्वं डं हलनयनवल  
 इक४पादीसमी२४। यकभा  
 इग्नाग्रहगदीवसुकि४संयुतासर्व  
 नाग४। हलमासिद्धिबीगइमि  
 रायदवावेत्यसुयोदिदवायागि  
 नायाभमातासुववनमिता४पा  
 दुव४सर्वदवा४॥ ९ ॥ उंकारवृक  
 मूलंक्रमपदकथिर्नन्दविली  
 छुंमोर्वअकंजीसामयुषयकने  
 सिनरुलंगनयध्वं वरुनीया



गङ्गायास्तुमीतजुमवकवपदेनीय  
 नयस्यनिर्युतातस्तुकेकस्यमुह्यमुवि  
 गधमूहिरिः पाउवायदवृक ॥ १० ॥  
 यः कृतागर्जनानायुगुलेगुलाया  
 लयलोहडंहीलीहावासाप्रवाय  
 समेटमटमटमटमटमानमटनोद  
 कोनीखायमानायेकटकटकठार्स  
 कठटापदष्टिनिष्ठाकाहास्यमा  
 नासकहकहककायाउयघांन  
 सिंह ॥ ११ ॥ कृतार्थनायसिंहयक  
 टितवमूर्यवकननाधवास्तुकेजीहि  
 १५५५लेनैकृतवहसहर्गइन्निवा  
 कसमलु। निरिन्नायस्यगर्भमथ  
 गजगदिर्तदानवलोहिबध्वाय  
 पाउ४स्ययवपतिवुवनमेलासिंह  
 मूयलोविष्णु ॥ १२ ॥ कानूवकुविष्णु  
 नागिबसिहसुवगधो४कहयावहोवो  
 घकृकोललीललाटकटिमधिन  
 वियानकयाथेउसूर्यो४वदायाद  
 वृष्टिजिउवनमधवरावतीयस्य  
 जिजाउंष्टाकोटीनखानैमननृषि  
 सिवसोयाउविर्धववाह ॥ १३ ॥  
 हिलोवक४सुगव४कलिगेहटतवा

घातविदिनहार्यसन्ध्यातामनुव  
 स्वाकटिलनखामिलोगकिमसि  
 पयख४१यनादाघामोनाघनयधि  
 ववसासाउदिअसुलीक४याधि  
 सद्यतवासीजयतिविजयिन४भा  
 सिन४सिंहमूल४॥ १४ ॥ यी० य  
 स्याधविधीजलधलकलमलिमर्म  
 कोमवृषीनकनयघामोलागुहग  
 धकमर्मनैकवन्दोकेवर्द्धि४कृको  
 सफसमडाकुजगिविनिखवासफ  
 पोतालेमूलवदाथेलाविवावदमे  
 दिमेवदनैयोउवादिवालिम ॥ १५ ॥  
 ॥ कालवधलुदवा४कितिवपिवस  
 दासस्यस्यपुर्णरुतावदहानैकुवि  
 पो४सकलेवपतिजाध्वरुवरीउजा  
 थ। सलोनीयालनवयुहवउसूक  
 ताकायभोस्तार्थयका निल्यालोह  
 पुमादनिवसउसतर्गस४यजापूय  
 मेस्त्र ॥ १६ ॥ नमामिदवदवर्मेनामे  
 यंभैरवीमिर्वीसर्वयविष्णुकदर्ववै  
 पकेगवैकथर्वी ॥ १७ ॥ नमामिनि  
 विजादवीनीलोयलविधविधी ॥  
 जगतांमाहकांशुपिसेसावस्तिकिका  
 विधी ॥ १८ ॥ दवाभभोदवीधोयून



मदिययं १४ यल्लव क म म ह १४ ग की  
नेलीथगाय १४ क म म ह ले म गे धो व  
धीत्रीहि व ले १४ दोपे क को क ता य म म  
य न व व से द ह सि नू व दू वा पू य न  
व य धू य १४ स क व ऊ वि धि क न न म प  
हू क री ॥ १९ ॥ यो सो की वा म म ध स  
पि ति क न नि र धो ना ग य य क री ॥ १९ ॥  
(म व स्या द क व र्क १४ रु धि स धि कि न  
(ध वी य न ग म व वा न १४ व को य १४ म य  
माने क द म म गि ग (ध म ग र १४ म म  
म क वि धि क लो क ना थ १४ क लि क ले  
ष ह र यो उ मा पे म नो र १४ ॥ २० ॥  
मु क्री तां मु मा नी व स म ति क न य १४  
(ने हि क यो क य र्क क ड द व रु ज  
मो क र क व ऊ क म म थ सी क दि न  
१ वा क न क म मा लो पु न व यि द मे दि  
का व या लो पु यू का स व धा म नि का  
नी वि ध य के ह ले र म धु ली क न मा मि  
॥ २१ ॥ यो जी मे र स वा गो र म क न  
क नि र ह क क य व को नि म को म थ  
वि न य व ड व रु ज ध र दान ह को र  
य के १ पू लु क म क स ल म मि द धि ति  
क र द क वा म ति (म र सो य म र  
ज यी म स क ल र य ह र यो उ मा म  
य मा ग १४ ॥ २२ ॥ म थो क व क म

(ध सि ति य व म मि र म कि य क क म  
म र्वा लो नी नि वा लो न म ति गु व र  
व र्वा म र्वा लो नी नि वा लो न म ति गु व र  
द वी द व क ली न क ल म क ल म य वा  
धि नी यो ध स र्क स र्क स र्क स र्क स  
क ल स र्क क र नी म र्क ३४ र व स व ४  
॥ २३ ॥ वा की ह सा स ने का वृ ष र  
नू ग ता म ड म कि म र्क मी की मा नी व  
हि स र्का ग व र्क य थ ग ता व धू वी ति  
धि दा ली वा वा ली सो वि र्का ग ज व  
थ ग म ना व ड म कि स र्क यो वा म र्क  
पु त र्क स र्क ग य ति क न मे यो व ले  
म र्क हो र्वा ॥ २४ ॥ वि ध य वा य  
वि ना य वि ध य र्क य र्क न म ध स र्क वि  
ध र व र्क स र्क म नि न मा लु क ॥  
२५ ॥ नि र्वा र्क नि र्वा र्क नि र्वा र्क म  
व र्क नि र्वा र्क क र्क र्क र्क र्क र्क र्क  
र्क र्क र्क र्क र्क र्क र्क र्क र्क र्क  
र्क र्क र्क र्क र्क र्क र्क र्क र्क र्क  
॥ २६ ॥ म थो क मा व ली यो स र्क  
मा ना वि र्क स र्क १४ क य १४ य व यो वा म  
म र्क (ध यो न मा लु क ॥ २७ ॥  
न म र्क क पि ल द वि







विन्द्याता लखामुर्द्धनिखनयति  
 तलेकयशकवस्तुः मायोहीनय  
 दिक्पतिगीयधमा भविनेष्टमेतत्  
 वृत्तदपि वमयाको गुमकत्कमध्व  
 ॥ ४१ ॥ अस्मानोस्मानो वापियं  
 नमोभोहिर्न कर्तुं कलुमरुहिय  
 प्रमे कमायेमरुतां प्रसा ॥ ४२ ॥  
 गुणमस्तु सर्वजगतां यवहितक  
 मोरुतगदी ४१ दावा ४ पुयां नु भो  
 निसर्वं सुखिनां वदुलोकाया  
 ॥ ४३ ॥ त्वं गति सर्वरुतानां सक्ति  
 तत्त्ववो वव ॥ अन्ते ध्वं वदीरुतानां  
 दृष्टो त्वं यवमध्व ॥ ४४ ॥ कर्मधो  
 मनसा वा वा लोना न्योगतिर्मम  
 मकुहीन क्रियाहीन रक्तिहीन  
 क्यत्कर्तुं ॥ ४५ ॥ जयहो माध्वन  
 हीन कर्तुं नित्यमागव ॥ अकर्तुं वा  
 कहीन कर्तुं नित्यं वदुतामने ॥ ४६ ॥  
 ॥ शांता रुगव नो धातुं मया कर्म  
 निवर्ततां न नाधिकमिदं कर्म क  
 म्यतां ध्वं तां कर्तुं ॥ ४७ ॥ याया ह्या  
 यकर्मधो याया लोया यमरुता ॥  
 गार्हिमा ध्वं वीका कर्तुं सर्वयोया रु

भक्तवत् ४४ ॥ यजमानस्य ग्री २  
 अमृकमूर्ति स्ताप नम रुद्रा कृति  
 यस्तु सपुं निमित्तार्थ ॥ अङ्गुगो  
 दि ॥ ४४ ॥ सपुं निमित्तार्थ सपुं

कवा अलिना रुमो मले लमिव सिन  
 मस्काव कला मले लक यथी गिव सि  
 रुमदी ॥ (मेषां धावा विमर्जन ॥ ॥  
 अं वम ॥ द वस्तु छिन्ना नि कल म  
 वाया मीर्वा द ॥ मूल अयो नमर्तु ॥  
 अं मिवा ना मा सिति ॥ देवा मीर्वा द ॥  
 ॥ अं जां द दया यन म ॥ अं अजिपु  
 कल मिति ॥ कल म ॥ अं जां द दया  
 यन म ॥ अं अजिपु विषय वमान ॥  
 अं अमी मीर्वा द ॥ अं अं मिवा यव व  
 द ॥ अं यस्य कर्मा नूति ॥ स्वा मीर्वा द ॥  
 ॥ अं कं कव वा य द ॥ अं अं विष्णु वी  
 यमिति ॥ यजमानो मीर्वा द ॥ ॥  
 विष्णु मता ॥ अं अं विष्णु विति ॥ अं  
 विष्णु व वा द ॥ अं अं विष्णु व वा द ॥  
 अं अं अस्मा य द ॥ अं अं अस्मा य  
 क दी स गति ॥ अं अं विमर्जन ॥  
 अं अं अस्मा य द ॥ अं अं विष्णु व वा



तति॥ प्रधीतविमर्कन॥ ॥ॐ॥  
 अस्माय ह॥ ॐ कल्याणविमर्कन॥  
 ॥ वक्रादकर्मोवेन॥ ॐ क॥ अस्माय  
 ह॥ ॐ अथाअथा नवाविति॥ ॥  
 प्रधीताविमर्क॥ ॐ क॥ अस्माय ह॥  
 ॥ ॐ समवेति नवा॥ अकपोतक  
 मेउपयममर्ककृयात्॥ मूलज  
 धावमर्क॥ ॐ नवाअग्नि॥ ॥  
 हलोमवर्न॥ ॐ कोमिवमसाह॥  
 ॐ अययममदग्नि॥ अवेक  
 मनाललाटगीवायदकिमवाह  
 मूलकदितिलककावय॥ ॥  
 ॐ नवाअवावृणीमहगमसुयस  
 यगदयहपतयदवीसुस्तिन  
 सुवसुस्तिमानयस॥ ॐ अजिग  
 सुहसजमेनासुदिवदउदवाद॥  
 अग्निनमसाव॥ ॐ क॥ अस्माय ह॥  
 ॐ यहयहगदति॥ अयपाद  
 कनानिकुवसुन॥ यहविमर्कन॥  
 ॐ गहगहसुनयसुति॥ नामवद  
 यो॥ हदयआत्मालीन॥ ॥  
 वक्राकासहोम॥ ॐ कनयकर्मन  
 साह॥ ॐ अहनायकर्मलोसाह॥  
 ॥ गवहोमकया॥ ॐ क॥ अहव॥

स्वाहा ॥ यथा नामाग्र यस्वाहा ॥  
 मरुति य ॥ ३ ॥ ॐ क ४ मूक्त य ४  
 ६ ॥ ॐ उद्य य नमिति ॥ कमस न  
 मस्तुत्य ॥ मित्र वभुवायुनि ॥ गोय  
 तिन्यास्तुत्या ॥ ॐ क ४ मूक्त य ४  
 ६ ॥ ॐ उद्य य नमस्तु ४ ॥ ननवि सु  
 ऊर्न ॥ वलितस्तुन ॥ आर्षम्य ॥  
 उपस्यमर्न ॥ सूर्यसादि थाय ॥  
 ॐ कृतकर्म ॥ ६ ॥ सूर्याय अर्घन  
 म ४ मूक्त य ४ ॥ नूतियस्तु कर्म विधि ४

गुणोक्तादि विलिखितं ॥ ॥  
 ॐ क ४ अ स्तो य रु द ॥ ॐ उ हि षू न ॥  
 सा स रु यी त्य सि य अ थ प व य ४ ॥  
 सोम मि रु य म स्त ॥ ॥ सर्व विलिखितं

यमकलगं यमानिकसमर्थं ॥  
 वलिउंजोवनादि, ईश्वरिणीवाञ्छाय ॥  
 ॥ यतमायसुसिंहोसनालवयुजः  
 मानससिकासभक्तिला ॥ निर्मलन  
 उं वक्षो हृदमिति ॥ वलि ४ ॥ उं अथ  
 वाचदधीति ॥ अथवागोदकनालक  
 र्ण ॥ उं दवस्येति ॥ यजमानवर्तुदा  
 यय ७ ॥ उं वक्षो ४ वविगुमहीति ॥  
 यजमान निवर्गकिकलरगेन ॥ ॥



अतिथक ॥ उं दवस्य ताति ॥ उं अमि  
 नारुषयति ॥ उं यदयेकयविश ॥  
 यन्दने ॥ उं लयविष्ठदति ॥ सिद्ध ॥  
 उं नच कृदवाह नमिति ॥ मोहनि ॥  
 उं दधिजाप्रति ॥ सगुलधसि ॥  
 उं दीर्घायस्त्राय वयो ॥ अकृत ॥  
 उं या ४ रुलिनीया अरुया ॥ रुल ॥  
 उं श्रीयथेनल श्रीयथे ॥ यथा ॥  
 उं ध्रुवासिध्रुवोर्य ॥ उं द ४ हवि ४  
 आमीषोद ॥ उं या ४ रुलिनीति ॥  
 सरेन वृय ॥ उं नजासीति ॥ आव  
 निकन ॥ उं मनोशक्तिपुति ॥  
 उं पूरुयलुनिर्हयस्य दय्यमेमेक  
 दय्यहा ॥ असेविमध्रुवैयर्थ्यैय  
 दायजयायव ॥ कृकनकन ४ ॥  
 ॥ थलीलविसर्जन ॥ नमस्कावयाय ॥  
 कजप्रदाय ॥ उं विश्ववरोठमेसि ॥

अथ कलमे ज्ञाय ॥ अमिकलमे  
 अमिकलमे ॥ वेवृलकेलमे किमलाती  
 र्थस ॥ मूक्तिकलमे निडा कलमे मे  
 अकलमे थमदवर्क ॥ गमेकल  
 मे कमवायिनायक ॥ गुरुकलमे  
 कमला दगुविरु ॥ यागिकलमे

कलमे लल ॥ उदकलमे हाता  
 याग ॥ अधकलमे उपदमिकल  
 ॥ श्रीवक्त्यागियोत ॥ खडाप्रवि  
 द्रुआवायर्क ॥ ॐ नमनकलमे थ  
 कादियात ॥ नमत्यकलमे लीको  
 यात ॥ ॐ उकलमे कृवयकलमे  
 वाजापनिक ॥ निवमे कियजमान  
 यात ॥ श्रीलक्ष्मीजमानीक ॥ ॥  
 आदित्यमृत्युअय समोद्येनिक  
 ॥ नागया नामकृष्ट पठसहितन  
 लखकालकाय ॥ यकयकधीडा  
 वरुससक ॥ ॥ सयनागदूक  
 दि कयले खलखि यथेयलव  
 लेकोपोव दिगपनाप अनेकल  
 यावस्तु ॥ दव कोधर्मरुवसना थ  
 गयद्रुता यरुमे लुपसथानिव ॥  
 धर्मनिपनिभन यद्रुता लकसा  
 नदयेक दवजायमाल ॥ मेरीवि  
 यमान ॥ ॥ निवमे किकलमे ज्ञा  
 य ॥ वाक ॥ उं श्रीवस्तु मयैष्यमा  
 योगीयवमानमेहीयगे धनधन्य  
 पूगलार्क मे कसमे वृलदीर्घमायु  
 ॥ धम्मनि ॥ गच्छिसमकृयात कल  
 मे ज्ञाय ॥ थतकलमे ज्ञायविधि ॥

25  
 20  
 15  
 10  
 5  
 0 cms.



धनलियजमानन, मिठभकि कलम  
 आकाव, स्त्रीसहितन, मूलतलसुपू  
 नवीनकलम स्त्रीयात ॥ सुगुहंतय  
 याहितनंतय मिमार्थकादिनेतव ॥  
 मवयो सुगुहंतय ॥ धनधनहा  
 अ ॥ यावदयो यो ॥ निर्यानेन क  
 रुक ॥ धर्मधिया वदुथान हा निरु  
 मोल, निरु लमाल ॥ नयाले, सु  
 योले नंतव ॥ ॐ तिजुहा वाय ॥  
 मिठ, विष्टमन, धर्म, दवप्रतिष्ठा  
 विधि ॥ समो क ॥

तता आक्रष्टा दिशो ॥ ॐ उकल  
 मंतव न ॥ ॐ उकल मया लेख  
 न, अतिष्ठक ॥ वन्द, सिन्दु, सुगु  
 हंतमोहनि ॥ स्वस्वद नविय ॥  
 ॐ उकल मया ॥ वाक ॥ ॥  
 ॐ उगवने वलाक मंत क्रवृयध  
 वाधियो ॥ या का ले हसभग लं वि  
 दिवा दव तावक ॥ मानवीन नमा  
 मिष्ट, पालिने ननु मधुल ॥ अति  
 नासि न्मया देव, कृत्या मधुले प  
 चक ॥ मया कृतस्य यस्तु यथा  
 भक्तान् वृथिती ॥ ॐ दमि उय क  
 लमंतव ताव विमोहित ॥ सोमा

नहनमनसा, गृहणी वसुधाधि  
 य ॥ वनेका वविहीनेय, कृतवक  
 म्मोति यो ॥ आभोवा ॥ य ॥ य ॥  
 रुका, य ॥ सहित ॥ ॐ उगो वा  
 मिष्टति ॥ ॐ उकल मंतय विधि ॥

तत ॥ य ॥ क वदुथ दिवस, वदुथी  
 कर्मको वय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 व, निवृत्ति, वमवव ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 वमो वाय, जो वहास्य यथा कर्म ॥ ॥  
 ॐ सुयो, रुवता, ग, वदुथी य ॥  
 वय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 ग्यधन सयेदी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 वव, मृष्टदा विदगो रुली, विमज  
 नति वाय, दिग्वायामधुयानय ॥  
 ग ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 यो रुव ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 माल्य वधु पूजय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 कृत्या य ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 म ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 क ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 कथयनी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 कृलिलीक ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 धीनन, मधुली यव ता ॥ ॥ ॥  
 ॐ मधुली य ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



या॥ ४॥ दव काल विधि ये व प्रया  
 वष नयोजय ॥ ७॥ नृत्तिक म विधि  
 न न वाक्र क्षी नी हि ना य य ॥ च उ  
 थो य न क रु वी ब स य रु व नि स  
 ली वा क्र क्षी दि वे उ व न अ वी धा  
 म न व उ वी ॥ ४॥ म का प्र वा वी ले व रु  
 ॥ सु व रु व ज न वि रु य थ ला रो ॥  
 क र्त्त क र्था न्य क र व न मि द मे न ॥  
 नृत्ति से गु या त न ॥  
 अग्नि क र्त्तु म्पो रु व ला ग अ व अग्नि  
 क र्त्तु का व य ॥ ग र्त्त मे पू जा क र्त्त  
 ग र्त्त क ल मे क र्त्त म्पो वा हो न द य  
 की ॥ ना ग से यू ज हा य क र व रु धो क  
 ल मे क र्त्त म्पो य रु म रु य स थो द  
 क र्त्त म्पो ल द रु क र्त्त म्पो पू ज म्पो ल  
 ना ग प ट ती र्थ स क र्त्त य ॥ द रु वि यू  
 जा क र्त्त य गु व क ल स क र्त्त म्पो य वी  
 द क र्त्त म्पो व अ नी न स र्त्त म्पो वा हो न  
 द य की ॥ ॥ द रु उ य क ल स ग  
 र्त्त म्पो म्पो स को म्पो वी स गु धो व लि  
 म्पो ल को वी य ॥ स्नान क ल मे य वी म्पो  
 न जा ॥ द व स्नान यो न न ॥  
 थ न धू न हो व य ज म्पो न न ॥ पू षा रु

जन या य ॥ ॥ ॐ अग्नि दि य षा रु ज  
 न स मे प या मि ॥ ॥ वा क्र खे न क  
 र्त्त म्पो क र्त्त म्पो ॥ अग्नि स्था य न ॥  
 क र्त्त मे न य वि रु व र्त्त ॥ य थ २ वि धि न  
 क र्त्त क ल मे व न ॥ अ थ प दार्थ सा ध  
 न ॥ स मि ध र्त्त म्पो ॥ अग्नि ना म क र्त्त म्पो  
 ॥ मि त्वा गु य स र्त्त म्पो ॥ वि य क र्त्त रु ति ॥  
 व द रु ति ॥ ॥ द रु ता रु ति ॥ मि ल रु  
 ति य रु ति ॥ म रु य वि स रु ति ॥ ॥  
 न ता य थ क र्त्त म्पो ॥ द व वृ ज यो य ॥ ॥  
 स्नान क ल मे न ॥ य क र्त्त म्पो ता व न न  
 मि रु व य स र्त्त म्पो वी न पू षा क र्त्त म्पो  
 प दी प ने व य प्र ति ष्ठा ॥ द व त्वे वि  
 ग ल न स र्त्त म्पो ॥ य थ ग र्त्त म्पो स र्त्त  
 रु ति ॥ द म्पो या टि ॥ वा जो द म्पो य ज म्पो  
 ना य र्त्त म्पो ॥ म्पो क र्त्त म्पो वि क र्त्त ॥  
 वा क्र र्त्त म्पो ॥ य व धा न्या दि वी रु ॥  
 व लि य द न ॥ द रु दी प रु ति का रु म्पो  
 ॐ अ र्त्त म्पो वी य ॥ १० ॥ न न १ यो य वि रु  
 र्त्त म्पो ॥ अग्नि न ॥ य क र्त्त म्पो वी ॥ व रु  
 यो हि रु न ॥ व रु ४ स रु ति रु म्पो ॥ ॐ उ  
 द य न मे स रु ति ॥ व वि रु व र्त्त ॥ द रु  
 र्त्त म्पो ॥ ॥ स र्त्त म्पो स रु ति ॥ य वि



त्रुमाचनं ॥ ततश्च लुयागं कुर्यात् ॥  
 ॥ विसृज्य न वाक् ॥ ॐ मया पूर्ववत् ॥  
 यो न दाया पश्चेदवता ॥ सुपीतसु  
 खदा भक्ति मया यश्च विसृज्य ॥  
 लपन्तु कूटसु ॥ भिवश्वभक्ति  
 व ॥ विदुश्च वसा वक्रवायाव कृति  
 भक्तिस्तु ॥ ॥ थायादवन पश्यत्सु  
 वदिगयताप कोमस्ववविपातः  
 निर्मात्स्वना ॥ ॥ धनं कृतिस्तु ॥  
 ॥ थायं नोथ ॥ ॥ लपन्तु सर्वज्ञा  
 याव कृति भक्तिस्तु ॥ ॥ थायादवन  
 न नवल वलिजात ॥ ॥ थायं लुयं  
 वी ॥ वक्रजवत् स्वस्ववत् ॥ वाया  
 वदुजायाय ॥ ॥ अथादि ॥ गुर्वनम  
 स्कारी ॥ वक्रादि क वक्रजं न्यास ॥  
 अर्थयात्र पूजा ॥ अथादि अष्टपू  
 ष्टिकास्तनी ॥ ॥ ध्यान ॥ ॐ पूजितं य  
 रुनिर्मात्स्व रुक्तिं वक्रं लेया ॥  
 वदन्तं वायं वदाय सुपीतसु मनसा  
 रुव ॥ यादार्था वमनीयस्त्वानेगन्ध  
 कतपूर्य नमः ॥ ॥ यद्यो मूलमस्तु  
 द्रिष्टियोजितं ॥ ॐ ॐ मा वृडायति  
 ॥ ॐ अम्ब अम्बिकति ॥ ॥ धृपदीय पु  
 णिष्ठा ययति ॥ जायस्मात् ॥ ॥

ॐ वक्रमृष्टि कर्तुं निर्णयं वमवाप्तु  
 दाप्रिय ॥ गजवर्मध्वोद व वधुना  
 थनमास्तु ॥ अगगन्धादि ॥  
 न्यासास्तु विसृज्य न ॥ ॐ मयिष्टु  
 तिष्टु अन्तिमयित्ति कति कति कति वि  
 सृज्य न विष्टु अन्तिमयिग कति गद  
 ति ॥ ॥ नदीपुवो हयग ॥  
 ॐ ति वलुयाग विधिः ॥

वाक् ॥ ॥ पूरुयावदकिर्णं दत्वा ॥  
 ततः पूरुयावदकिर्णं दत्वा ॥  
 ॐ दवागो विदो गभुन्ति ॥  
 ॐ अथायं स्वस्वमन्त्रं ति ॥ ॐ हिमं  
 लति ॥ ॥ मधुलजायं ॥  
 यथा मकिर्णं पूरुयावदकिर्णं दत्वा ॥  
 मधुलविष्टु न ॥ अग्निम् ॥ गीर्वा  
 ॥ ॥ वक्राविष्टु न ॥ यस्तु विधिः ॥  
 विष्टु न ॥ न्यासं कालय ॥ ॥ सूर्यसा  
 कि ॥ अर्थयात्र अथा मखी कृत्य ॥  
 ॥ ततो यजमानादिसर्व ॥ कलभति  
 धर्कं वन्दनं सिद्धं लु सद्यः भवी  
 दः ॥ स्वस्ववदन् ॥ ॥ इत्यादिवा  
 द्योय ॥ ॥ यथा कोमा विष्टु ॥ यस्तु  
 मधुयसं ॥ ॥ काममधुलया कोमा  
 या अष्टि वनाय कोय ॥ समयकोय



कवकान्क ॥ वतीपनीसमाह नक ॥  
 यिनायकजाया दयुविकुजाया ॥  
 अकसकाय ॥ समयागोर्वा ॥ ॥  
 वडुथो कुरु नीरु न ॥  
 वडुथो या होमधून दाय ॥ धर्ममूल  
 अमिकुधुसंग ॥ धर्मिकुधुया अम  
 न मूल अमिकुधुकाया या अतय  
 ॥ अहो वा यय रुया दिने ७० दू रुं  
 व अमिकुधु नदीय वा रुय ॥  
 वृत्ति अहो वा यय रु वडुथो कर्म वि  
 धि ॥ समोय ॥ ॥ एरुम सुसदा

एरुम वत ८४ ७ योषमास गु कप  
 कवो धो योति ॥ भगवति खनक  
 वृत्ति या तयो ॥ ग ॥ श्रीम वासव ॥  
 संपूर्ण समाक ॥ एरुम सुसदा ॥

एरुम सुसदा वनि सविता न घना अम  
 द्वादाम न सायय माता भयु तस्य धना  
 अरुति या कवी मिदि न ल्यथा वत साम  
 अमृ (न ॥ धत यय रुया कवद ॥ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ यथयुत्पाहवा  
 चनलिख्यते ॥ ॥ यथाविधिनासंप्र  
 जगन्धमात्पादोवासरान् स्वस्तिवा  
 चनं ॥ ॥ धर्मकर्मणि मां कल्पसंग  
 भाद्रुतदर्शन ॥ पुण्याहवाचनं देवेवा  
 सरास्यविधियते ॥ एतदेवरिरोक्षारं  
 कुर्यात्तत्तत्रिय नोपयोः ॥ ॐ अवति  
 कतजानुमराडलंकमलमुकुलमांज  
 रिंशिरस्याधारयदक्षिणो नपाणिनामुव  
 र्णपूर्णकलशंधारइत्यादीर्घा नागाद्यो  
 गिरियस्त्रीणि विष्णुयदानि च तेन आयुः  
 प्रमाणेन पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ॥ ॐ  
 शिवायः सन्तु ॥ ॥ ॐ सोमनस्य स  
 न्तु ॥ ॥ ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु ॥  
 ॐ गन्धाः पास्तु ॥ ॥ ॐ माल्यं चास्तु ॥ ॥ ॐ  
 पुष्पाणि पास्तु ॥ ॥ ॐ सूत्रियमायोस्तु ॥  
 ॐ आरोग्यमस्तु ॥ ॐ दीर्घमायुरस्तु ॥  
 ॐ शान्तिपुस्तिस्तु ॥ ॐ शोविद्यावि  
 तयो वित्तं वरु पुत्रं वरु धनं चायुष्यं  
 वास्तु ॥ ॥ ॐ यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञ  
 क्रियाकरणां कर्मो रभाः शुभाः शो  
 भनाः प्रवर्तन्ति ॥ तमहे मोक्षारताः  
 दिं कृत्वा अग्यजुः सामाशी च चतं जु  
 षमि मंतं समुतजातं न बद्धिरनुजातं  
 पुण्याहं वाचयिष्ये वाच्यतां ॥ ॐ





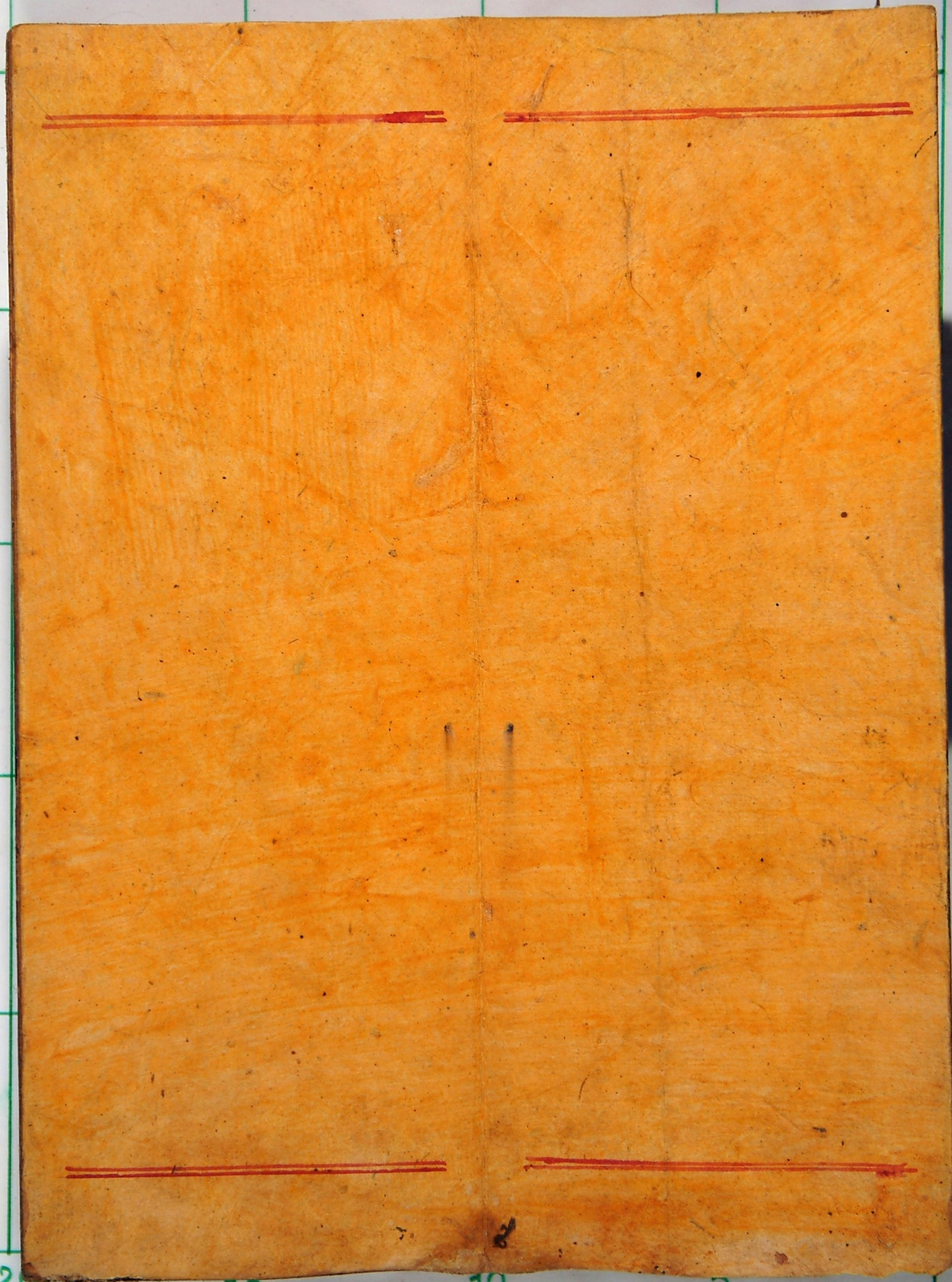






१३ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ पादस्था  
पत्रलिख्येते ॥ ॥ कुशगिडकर्मवाक  
लशार्चनं वाक्यं ॥ यथा कर्मणि ॥ ॥  
पंचविंशतीकानां पंचं भागं दत्त्वा  
तदुपरि मृत्तिकापिण्डमकं निधाय  
मृन्मयकलशपंचताम्रकलशपंच  
वर्धपंचताम्रघटे पंचतीर्थैकं नि  
धाय दुग्धकुसुमपुष्पमक्षतपादौ  
सुवर्णशैव्यसुवर्णकांशशेषिकलो  
ह ॥ ॥





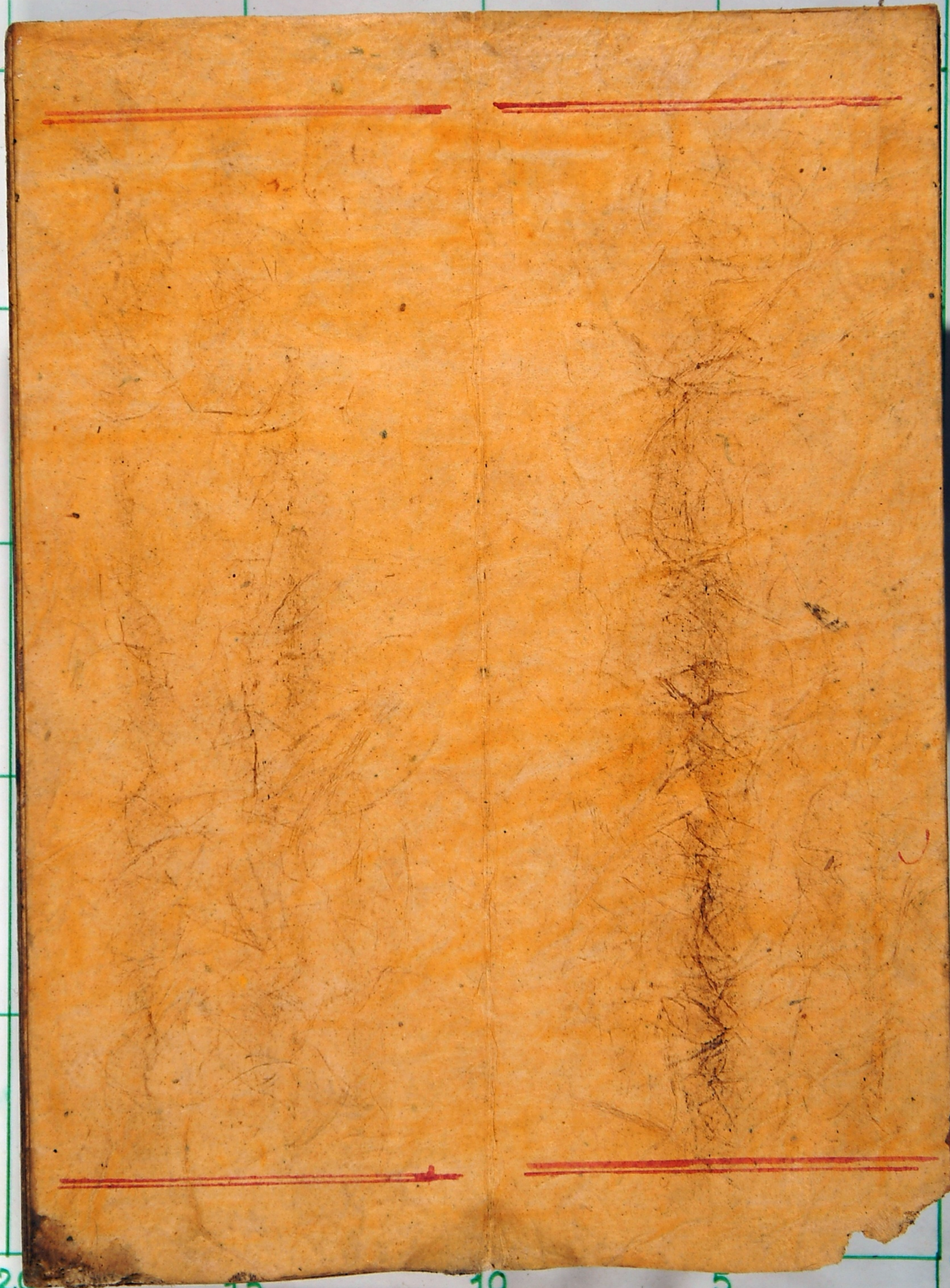




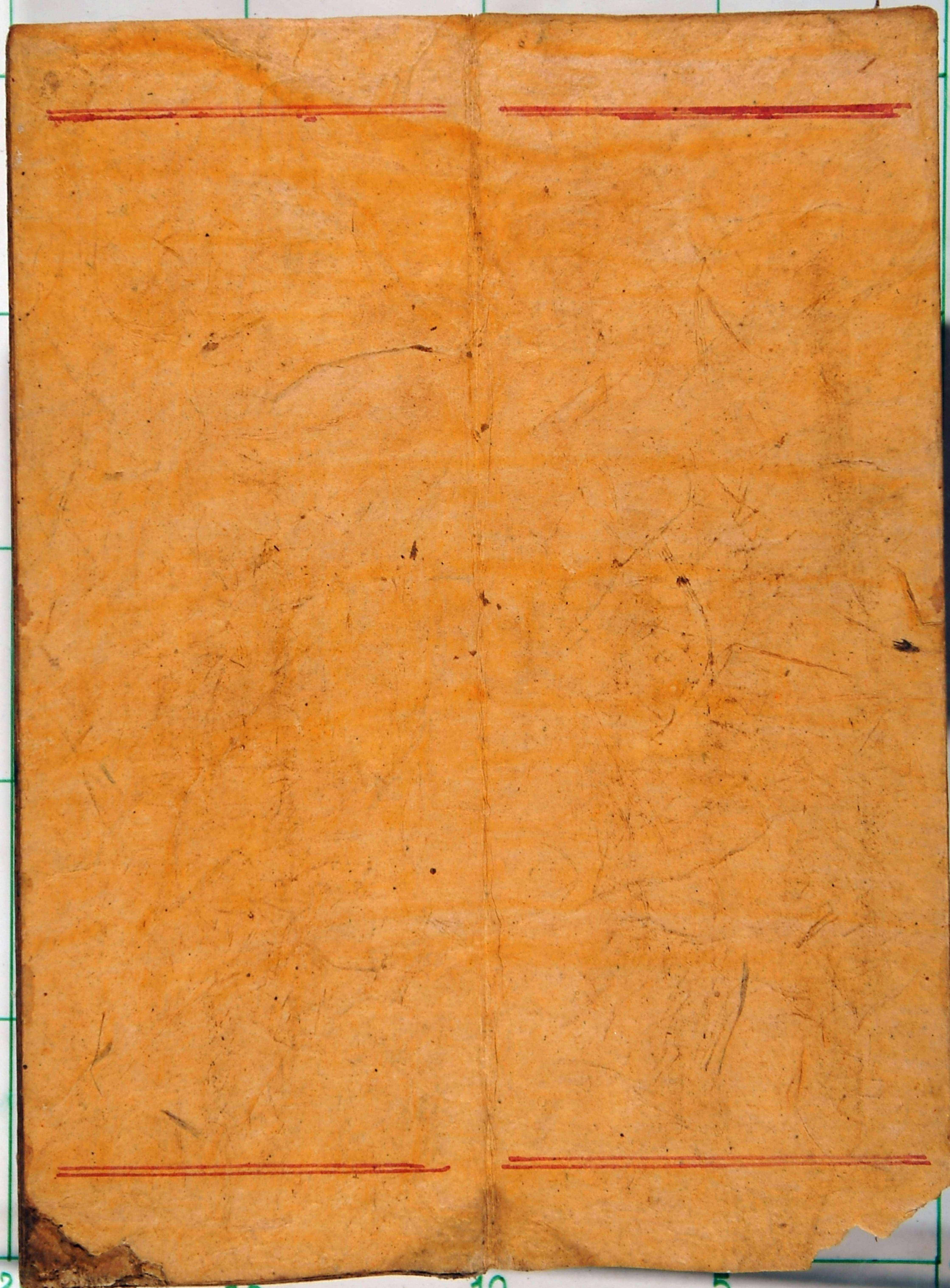












25

20

15

10

5

0 cms.

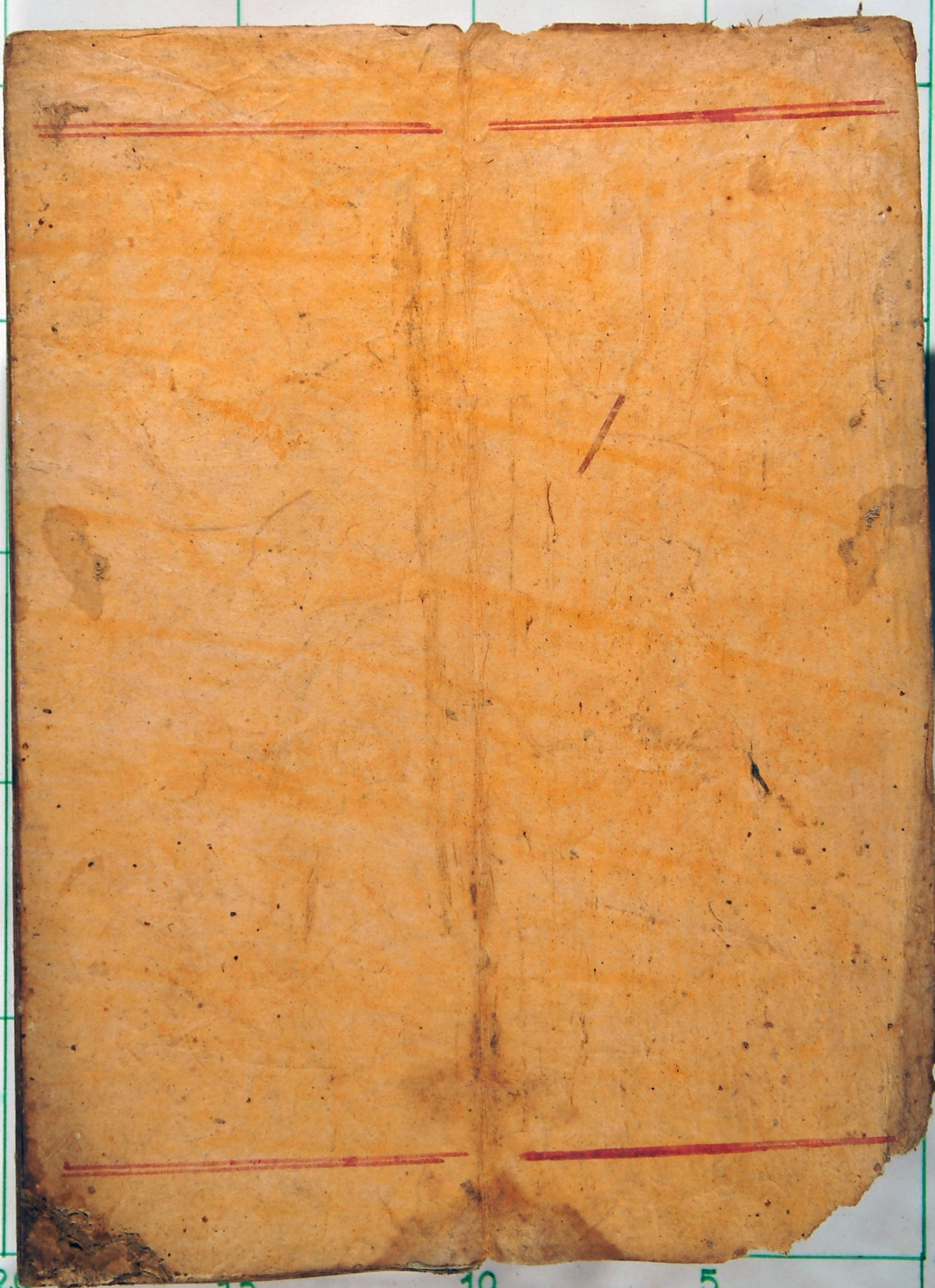
25

15

10

5





25

20

15

10

5

0 cms.

20

15

10

5